गेठी

- गेठी के फल से सब्जी बनाई जाती है
- गेठी की सब्जी खाने से हड्डियाँ और दाँत मजबूत होते है
- गेठी को उबाल कर उसका रस पीने से दस्त में लाभ होता है
- कैंसर रोग को फैलने से रोकती है
- गेठी के सेवन से शरीर फुर्तीला रहता है और रोगों से लड़ने की ताकत बढ़ती है
- शुगर की बीमारी होने पर गेठी का उपयोग अत्यंत लाभकारी है
- कड़वी गेठी को कोयले में पका कर सोते समय खाने से काली खाँसी में आराम मिलता है।

ब्राह्मी

- ब्राह्मी आयु और स्मरण शक्ति को बढ़ाती है
- यह खून को साफ करने में बड़ी लाभदायक दवा है
- इसका सेवन एक टॉनिक की तरह करने से कमजोरी दूर होती है
- यह मानसिक और शारीरिक दुर्बलता को दूर करती है
- ब्राह्मी का काढ़ा पीने से गला साफ हो जाता है और आवाज खुलती है
- मिरगी के रोग के उपचार में ब्राह्मी का उपयोग किया जाता है
- मूत्र अवरूद्ध होने एवं जलन होने की दशा में ब्राह्मी का उपयोग अत्यंत लाभकारी है।

नन्दा

उत्तराखण्ड महिला परिषद् की पत्रिका

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, अल्मोड़ा

वर्ष – 11 | अक्टूबर, 2012 | अंक 12

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रतियाँ : 4,500

प्रकाशक :
उत्तराखण्ड महिला परिषद्
द्वारा उत्तराखण्ड सेवा निधि
पर्यावरण शिक्षा संस्थान,
जाखन देवी, मालरोड
अल्मोड़ा – 263601

प्रकाशन सहयोग :
राजेश्वर सुशीला दयाल
चैरीटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली

मुख्य आवरण फोटो :
अनुराधा पांडे

अन्तिम आवरण फोटो :
डी०एस० लटवाल, सुरेश बिष्ट

अन्य फोटो :
अनुराधा पांडे

परिकल्पना एवं संपादन :
अनुराधा पांडे

विशेष आभार :
डा० ललित पांडे

सहयोग :
डी०एस० लटवाल
सुरेश बिष्ट
रेनू जुयाल

टंकण :
डी०एस० लटवाल

मुद्रक : एडविस्टा, नैनीताल

उत्तराखण्ड महिला परिषद्
सहयोगी संस्थाएं

जनपद		संस्थाएं
अल्मोड़ा	–	सीड, सुनाड़ी पर्यावरण चेतना मंच, मैचून राइज, शेराघाट उत्तराखण्ड शिवा शक्ति समिति, दन्या
बागेश्वर	–	पर्यावरण एवं शिक्षा समिति, शामा ग्रामीण उत्थान समिति, कपकोट
चमोली	–	शेप बधाणी, कर्णप्रयाग जनदेश, भर्की नवज्योति महिला कल्याण संस्थान, गोपेश्वर लोक जागृति विकास संस्था, कर्णप्रयाग लोक कल्याण विकास समिति, सगर
चम्पावत	–	पर्यावरण संरक्षण समिति, पाटी
पौड़ी गढ़वाल	–	नयारघाटी ग्राम स्वराज्य समिति, बाडियू नीलकंठ सेवा संस्थान, मलेलगाँव
पिथौरागढ़	–	शैक्षणिक ग्रामोन्नति समिति, गणाई गंगोली मानव विकास समिति, पव्वाधार उत्तरापथ सेवा संस्था, मुवानी
टिहरी गढ़वाल	–	घनश्याम स्मृति शिक्षा एवं कल्याण संस्थान, बडियारगढ़
रूद्रप्रयाग	–	हिमालयन ग्रामीण विकास संस्थान, ऊखीमठ।
नेटवर्क	–	जनमैत्री संगठन

पत्रिका में दिये गये विचार लेखक/लेखिका के हैं। परिषद् का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

उत्तराखण्ड महिला परिषद्

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, उत्तराखण्ड की जागरूक एवं क्रियाशील ग्रामीण महिलाओं का संगठन है जिसने ग्राम समुदाय में विकास की मुख्य–धारा के ढाँचे से अलग एक वैकल्पिक विकास की व्यवस्था और उसके क्रियान्वयन के तौर–तरीके को विकसित किया है। उत्तराखण्ड में ग्रामीण महिलाओं के सबसे बड़े संगठन के रूप में प्रतिष्ठित महिला परिषद् का काम राज्य भर में फैले हुए ग्राम–स्तरीय संगठनों व स्वैच्छिक संस्थाओं ने संभाला है, जो ग्रामीण इलाकों में परिवर्तन लाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

यद्यपि उत्तराखण्ड में महिला संगठनों के गठन एवं कार्यों की शुरूआत 1988 से हो गयी थी परंतु चार सौ पैंसठ महिला संगठनों की सोलह हजार सदस्याओं तथा बाइस स्वैच्छिक संस्थाओं की सम्मिलित आवाज से विकास संबंधी समस्याओं को संस्थात्मक, व्यवहारिक एवं वैचारिक मध्यस्थता देने की जरूरत को समझते हुए, 7 फरवरी, 2000 को उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा में उत्तराखण्ड महिला परिषद् का गठन किया गया। परिषद् की सदस्याओं में जाति, शैक्षणिक पृष्ठभूमि, उम्र के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता। बड़ी संख्या में पचास वर्ष से अधिक उम्र की महिलायें कभी भी विद्यालय नही गयी हैं, परंतु बीस से पचास वर्ष की अधिकतर महिलायें साक्षर हैं और शिक्षा का स्तर प्राथमिक है। गाँवों में जहाँ पूर्व प्राथमिक केन्द्र काम कर रहे हैं, वहाँ सभी लड़कियाँ माध्यमिक स्तर तक पढ़ी हैं तथा हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट तक पढ़ी हुई लड़कियाँ भी काफी संख्या में हैं। कुछ लड़कियों ने शिक्षिका के रूप में कार्य करते हुए बी0 ए0 एवं एम0 ए0 तक शिक्षा पूरी की है। यह जरूरी नहीं है कि गाँव की समृद्ध तथा शिक्षित महिला ही परिषद् की सबसे क्रियाशील सदस्य हो, बल्कि इस जनधारणा के विपरीत कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर या शिक्षित महिला ही अच्छा नेतृत्व कर सकती है, गाँव की प्रौढ़ महिलायें, जो यहाँ की स्थाई निवासी हैं, खेती करती हैं, परिषद् की अधिक क्रियाशील सदस्याएं हैं।

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, ग्रामीण महिलाओं के ऊपर विकास कार्यक्रमों को थोपती नहीं बल्कि उन्हें बालवाड़ी शिक्षिकाओं, पुरुषों, अध्यापकों, युवाओं, स्थानीय अधिकारियों तथा अन्य संगठनों से सम्बन्धित महिलाओं से प्रत्यक्ष रूप से मेल–जोल रखने तथा सीखने के अवसर प्रदान करती है। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि परिषद् केवल उन्हीं कामों को महत्व दे, जो ग्रामीण/स्थानीय महिलाओं द्वारा स्वयं आयोजित तथा क्रियान्वित किये जा सकें। स्त्री–पुरुष या फिर जातिगत असमानता से सम्बन्धित भावनाएं और बाधाएं खुलकर गोष्ठियों में सामने आते हैं, जो परिषद् द्वारा उत्तराखण्ड में विकास कार्यक्रमों को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने की दिशा में एक अनौपचारिक एवं महत्वपूर्ण प्राथमिक कदम है।

जमीन–प्रबन्धन से जुड़े कार्यों में नर्सरी लगाना, चारा उत्पादन, घेराबंदी करना, खाद बनाना, रोकबाँध बनाना तथा जानवरों की मुक्त चराई पर सम्मिलित रूप से रोक लगाना, जंगलों को बचाना, वनीकरण तथा प्राकृतिक सम्पदाओं का पुनरूत्पादन आदि काम सम्मिलित हैं। इसके अलावा पानी से जुड़ी समस्याओं का समाधान (जैसे–पुराने स्रोतों का जीर्णोद्धार, वर्षा जल संरक्षण, पॉलीथीन की टंकियाँ, फेरो–सीमेंट टेंक आदि) संगठनात्मक तरीके से किया जाता है। स्वास्थ्य और स्वच्छता कार्यक्रमों में शौचालय बनाना, महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, व्यक्तिगत सफाई, घर एवं गाँव की स्वच्छता, पोषण संबंधी जानकारियों को फैलाना एवं संबंधित गतिविधियों का संचालन आदि कार्य सम्मिलित हैं। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक असमानता संबंधी विषयों पर शिक्षा व जागरूकता लाने के लिए गोष्ठियाँ, सेमीनार, कार्यशालायें तथा प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है। परिषद् की अनेक सदस्याएं पंचायत प्रतिनिधि बन कर महिलाओं की आवाज को बढ़ा रही हैं। हर वर्ष परिषद् द्वारा उत्तराखण्ड में लगभग बाइस महिला सम्मेलन आयोजित किये जाते है। साथ ही, महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम भी शुरू किया गया है।

संगठन की सदस्याएं उत्तराखण्ड में विकास कार्यक्रमों में नीतिगत बदलाव की माँग कर रही हैं। विभिन्न कार्यक्रम जो कि ग्रामीण विकास, महिला विकास, शिक्षा, खनन, कृषि, जंगल, पानी, आयवृद्धि और पंचायती राज व्यवस्था के लिए बनाये गये हैं, उनके बारे में ग्रामीण महिलाओं की अपनी समझ, जानकारी और अनुभव है। साथ ही, उत्तराखण्ड महिला परिषद् के रूप में काम करते हुए महिलाओं ने विकास के मुद्दे पर अपनी एक वैकल्पिक समझ व कार्य–विधि विकसित की है। इन्हीं अनुभवों को आधार बनाकर उत्तराखण्ड महिला परिषद् की सदस्याएं, सरकारी नीतियों व कार्यक्रमों में बदलाव व सुधार की माँग करती हैं।

अनुराधा पांडे

नन्दा

उत्तराखण्ड महिला परिषद् की पत्रिका

उत्तराखण्ड महिला परिषद्
अल्मोड़ा

इस अंक में

			पृष्ठ सं.
	हमारी बातें	अनुराधा पांडे, अल्मोड़ा	(i)
1	मेरा जीवन	लीला बिष्ट, ग्राम दन्या (जिला अल्मोड़ा)	1
2	अंधकार से प्रकाश की ओर	महेश गलिया, ग्राम गल्ला (जिला नैनीताल)	3
3	काली दीदी का संघर्ष	राधा खनका, मुवानी (जिला पिथौरागढ़)	4
4	महिला संगठन सैनार	गुड्डी देवी/सुरेन्द्र सिंह नेगी, ग्राम सैनार (जिला पौड़ी गढ़वाल)	6
5	स्त्रियों की कथाएं	माया जोशी, ग्राम बिन्ता (जिला अल्मोड़ा)	7
6	कोट्यूड़ा महिला संगठन की चुनाव पर समझ	पुष्पा पुनेठा, ग्राम दन्या (जिला अल्मोड़ा)	9
7	जल ही जीवन है लेकिन जल की कमी है	लक्ष्मी पुष्पवान, ऊखीमठ (जिला रुद्रप्रयाग)	10
8	डायरी के कुछ अंश	शोभा बिष्ट, कर्णप्रयाग (जिला चमोली)	11
9	महिला संगठन कुलौरी	पुष्पा पुनेठा, ग्राम कुलौरी (जिला अल्मोड़ा)	13
10	पानी की समस्या	बबीता डसीला, ग्राम दिगार कोली (जिला पिथौरागढ़)	14
11	आपदा का असर	पुष्पा पुनेठा, ग्राम धारागाड़ (जिला अल्मोड़ा)	14
12	मुनौली गाँव का महिला संगठन	श्रीमती लीला बिष्ट, ग्राम मुनौली (जिला अल्मोड़ा)	15
13	शौचालय निर्माण	राजेन्द्र सिंह बिष्ट, गणाई-गंगोली (जिला पिथौरागढ़)	16
14	महिला शक्ति	सत्येन्द्र रावत, सगर, गोपेश्वर (जिला चमोली)	17
15	एक वृक्ष की दास्तां	विनीता भट्ट, पाटी (जिला चम्पावत)	18
16	पाटी क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति	हेम चन्द्र गहतोड़ी, पाटी (जिला चंपावत)	19
17	संगठनों के साथ कार्य	महेन्द्र सिंह रावत, ग्राम टंगसा (जिला चमोली)	20
18	वन संरक्षण और संवर्धन	पुष्पा पुनेठा, ग्राम आटी (जिला अल्मोड़ा)	20
19	मेरे काम	कमला जोशी, ग्राम दन्या (जिला अल्मोड़ा)	21
20	किशोरी संगठन सिद्धि	हंसी जोशी, ग्राम खेती (जिला अल्मोड़ा)	22
21	गाँव फलना	दया उप्रेती, ग्राम खेती (जिला अल्मोड़ा)	23
22	दैवीय आपदा से नुकसान	पुष्पा पुनेठा, ग्राम दन्या (जिला अल्मोड़ा)	24
23	चार संगठन हुए एक मन	स्नेहदीप रावत, ग्राम बाड़ियूँ (जिला पौड़ी गढ़वाल)	25
24	मदद	मीरा देवी, ग्राम किन्सुर (जिला पौड़ी गढ़वाल)	26
25	वीर बाला बीना	जितेन्द्र कुमार, कर्णप्रयाग (जिला चमोली)	27
26	जंगल	लक्ष्मी नेगी, ग्राम चौण्डली (जिला चमोली)	28
27	महिला संगठन में समस्या	फुलमा देवी, ग्राम बाड़ियूँ (जिला पौड़ी गढ़वाल)	28

28	ममता की याद में	सरस्वती देवी, ग्राम कीमू (जिला बागेश्वर)	29
29	महिला संगठन कल्याड़ी	शोभा नेगी, ग्राम कल्याड़ी (जिला चमोली)	30
30	आखिर क्यों उजड़ रहे हैं गाँव	कैलाश पपनै, ग्राम धमेड़ा (जिला अल्मोड़ा)	30
31	उत्तराखण्ड और जल विद्युत परियोजनाएं	दीपिका डिमरी, (जिला अल्मोड़ा)	32
32	पारम्परिक ज्ञान-विज्ञान	जयश्री पोखरिया, (जिला अल्मोड़ा)	33
33	सुबह कभी तो आयेगी	बचीसिंह बिष्ट, गणाई गंगोली (जिला पिथौरागढ़)	35
34	मेरी जीवन यात्रा	पुष्पा रौतेला, ग्राम गोगिना (जिला बागेश्वर)	36
35	महिला साक्षरता एवं शिक्षण	कमला शर्मा, ग्राम फडियाली (जिला पिथौरागढ़)	37
36	मेरी सोच	पूनम नेगी, ग्राम कोठार, नयारघाटी (जिला पौड़ी गढ़वाल)	38
37	साक्षरता केन्द्र धारागाड	पुष्पा पाण्डे, ग्राम धारागाड़ (जिला अल्मोड़ा)	39
38	ग्राम कुण्ड का महिला संगठन	स्नेहदीप रावत, ग्राम बाडियूँ (जिला पौड़ी गढ़वाल)	40
39	मेरे जीवन में आया परिर्वतन	लीला मठपाल, ग्राम शिलंग (जिला अल्मोड़ा)	41
40	साक्षरता एवं शिक्षण केन्द्र कुलौरी	शान्ती टम्टा, ग्राम कुलौरी (जिला अल्मोड़ा)	41
41	महिला साक्षरता एवं शिक्षण	सुनीता आर्या, ग्राम रामपुर (जिला अल्मोड़ा)	42
42	साक्षरता केन्द्र गौली	गीता पाण्डे, ग्राम गौली (जिला अल्मोड़ा)	44
43	साक्षरता का गीत	क्षेत्रीय महिला परिषद्, दन्या (जिला अल्मोड़ा)	45
44	महिला साक्षरता केन्द्र, बानठौक	कविता गैलाकोटी ग्राम मैचून (जिला अल्मोड़ा)	46
45	महिलाओं का अनुभव	मनीषा सोनार, ग्राम सूनी (जिला पिथौरागढ़)	47
46	मेरा अनुभव	नीमा डोलिया, ग्राम ग्वाड़ (जिला अल्मोड़ा)	48
47	महिला संगठन दियारकोट	रामेश्वरी, ग्राम दियारकोट (जिला चमोली)	48
48	हमारा गाँव	नीलम, ग्राम मालई (जिला चमोली)	49
49	मल्लाकोट गाँव महिलाओं का अनुभव	पुष्पा देवी, ग्राम मल्लाकोट मुवानी (जिला पिथौरागढ़)	49
50	अपने बारे में	लीला, ग्राम लीती धूरा (जिला बागेश्वर)	50
51	महिला साक्षरता केन्द्र मौनी	जानकी पेटशाली, ग्राम चापड़ (जिला अल्मोड़ा)	51
52	महिलाओं का पढ़ना-लिखना	तारा मेहता, ग्राम मल्ला डुर्गचा (जिला बागेश्वर)	52
53	महिला साक्षरता केन्द्र लमुडियार	कविता आर्या, ग्राम लमुडियार (जिला अल्मोड़ा)	52
54	टुपरौली साक्षरता केन्द्र की दास्तां	विजया, ग्राम टुपरौली (जिला पिथौरागढ़)	54
55	स्त्री-शिक्षा की जरूरत	कविता बोरा, ग्राम भन्याड़ी (जिला पिथौरागढ़)	54
56	विस्तार : किशोरी से शिक्षिका तक	जानकी कोंरगा, ग्राम ओखलढूँगा (जिला बागेश्वर)	55

ग्रामीण महिलाओं की कला

महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम – 2012

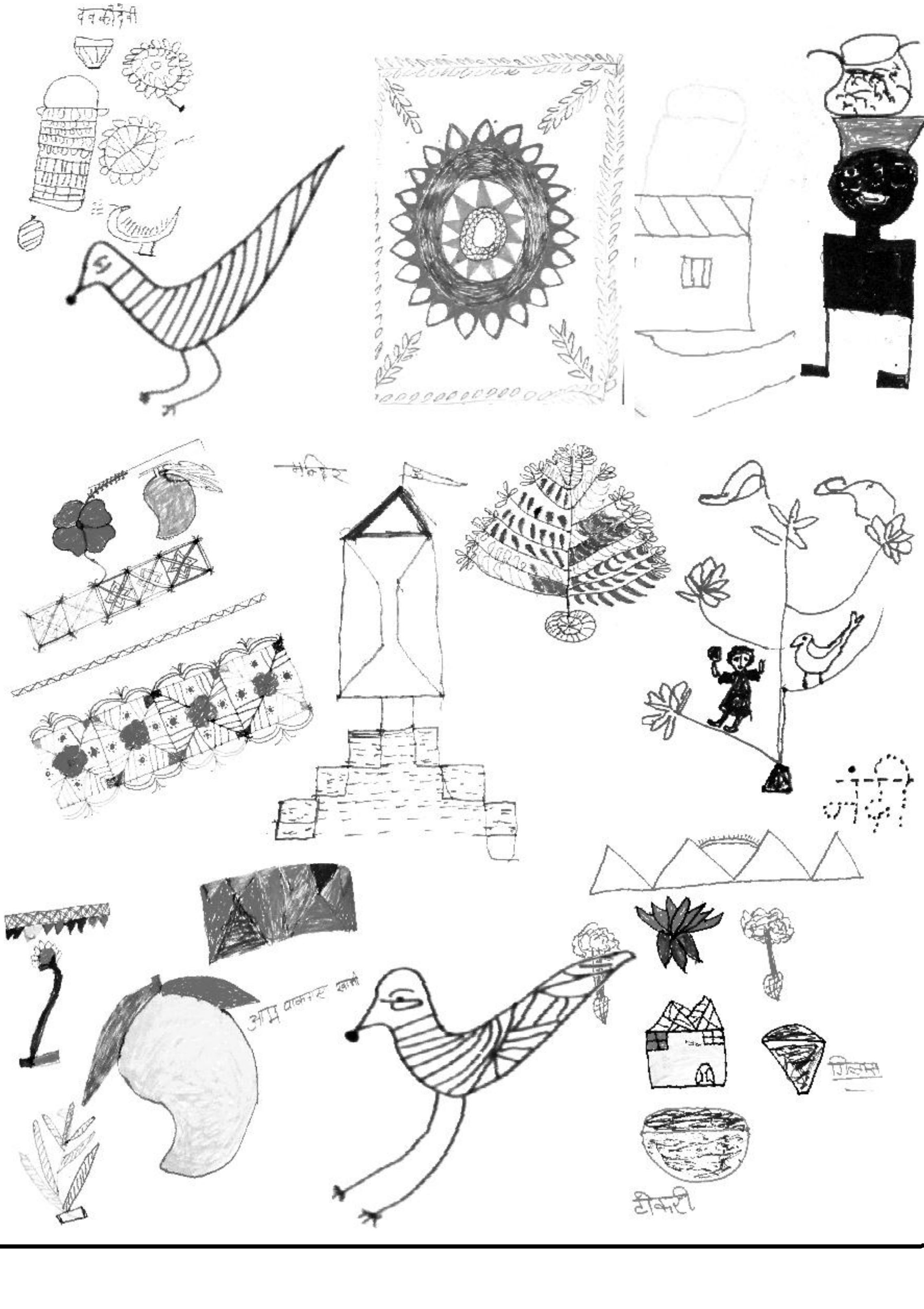

हमारी बातें

पच्चीस वर्षों तक ग्रामीण इलाकों में महिलाओं के साथ सामाजिक मुद्दों पर काम करने के बाद उत्तराखण्ड महिला परिषद् की कार्यकत्ताओं ने यह अनुभव किया है कि ज्यों–ज्यों महिलाओं ने अपने सरोकारों का दायरा बढ़ाया, शिक्षा के प्रति उनका भी रूझान बढ़ता गया। गांव से बाहर की दुनिया में कागज–कलम का महत्व है। बाहर के परिवेश एवं सरकारी व्यवस्था में पढ़े–लिखे लोगों का दबदबा है। इस दृष्टि से ग्रामीण महिलाओं को भी ऐसा माहौल और अवसर मिलने जरूरी हैं जो उन्हें अपने दायरे को बढ़ाने के साथ–साथ हितों को साधने में मदद कर सकें।

साक्षरता कार्यक्रम महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद कर सकता है। परंतु यह भी सच है कि सिर्फ गैर–साक्षर महिलायें ही उपेक्षित, पीड़ित नहीं हैं। न ही साक्षर हो जाने से समाज समतापूर्ण हो जाता है। स्त्री–पुरूष असमानता, जातिगत भेद, उम्र और अनुभवों के टकराव समाज में महिलाओं की स्थिति को प्रभावित करते हैं। अतः साक्षरता के साथ–साथ स्त्री के जीवन से जुड़े अन्य कारकों को देखना, समझना एवं उन पर काम करना जरूरी है।

उत्तराखण्ड महिला परिषद् द्वारा संचालित महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम "आर्थिक साक्षरता" का कार्यक्रम नहीं है। यह वह दौर भी नहीं है जब महिलायें स्वयं की शिक्षा को गैर–जरूरी मानती थीं और बालवाड़ी या स्कूल पाठ्यक्रम से जुड़ कर बच्चों की शिक्षा की बेहतरी के लिए काम करना ही अपना लक्ष्य समझती थीं। यह समय ऐसा भी नहीं है जब महिला संगठनों को छोटी लड़कियों और किशोरियों की शिक्षा बढ़ाने वाले औजार की तरह देखा जा सके। यह वह दौर है जब ग्रामीण महिलायें स्वयं ही साक्षरता और शिक्षा को सत्ता के संबंधों एवं सामाजिक सरोकार में बदलाव लाने का माध्यम मानने लगी हैं। शिक्षा तटस्थ नहीं होती। वह निरंतर सामाजिक, आर्थिक बदलावों से प्रभावित होती है और वर्तमान व्यवस्था में बदलाव कर नयी व्यवस्था कायम कर सकने की ताकत ग्रामीण महिला संगठनों में है।

अनेक सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थान बचत समूहों का निर्माण कर 'आर्थिक साक्षरता' के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण का मुद्दा उठाते रहे हैं। 'आर्थिक साक्षरता' के इन कार्यक्रमों की मानें तो वित्तीय अनुशासन और गणितीय/भाषाई कौशल (जो आर्थिक सशक्तिकरण की हद में आते हों) सीखकर औरतें उत्पादन भी करेंगी और सशक्त भी होती जायेंगी। उत्तराखण्ड महिला परिषद् 'आर्थिक साक्षरता' के कार्यक्रमों से प्रभावित नहीं होती क्योंकि आर्थिक सबलीकरण और सशक्तिकरण के बीच एक सीधा संबंध दिखाई ही नहीं देता।

उत्तराखण्ड के गाँवों में, बचत कार्यक्रमों की अर्थिक साक्षरता और संगठनों द्वारा सामाजिक परिवर्तन के मुद्दों के बीच का तनाव साफ दिखाई देता है। अनेक गाँवों में महिलायें माह में दो बार गोष्ठियां करतीं हैं। संगठन की गोष्ठी में स्त्री–पुरूष समानता, जाति–आयु भेद, स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण एवं संगठन के सामुहिक कोष से संबंधित मुद्दों पर चर्चा एवं काम होता है तो बचत समूह की गोष्ठी में पैसे के लेन–देन की बातें होती हैं। आर्थिक साक्षरता के माध्यम से महिलायें आयवर्धन से जुड़े शब्द सीख लेती हैं परंतु सिर्फ शब्द जान लेने से सामाजिक परिवर्तन या गरीबी उन्मूलन नहीं हो सकता, ना ही समता या न्याय की सोच विकसित होती है। उत्तराखण्ड महिला परिषद् का मानना है कि सिर्फ, आर्थिक साक्षरता के बिंदु पर जोर देकर संस्थान साक्षरता

के दायरे को तो सीमित करते ही हैं, महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य एवं गतिविधियों को भी सीमित नजरिये में कैद कर नारीवादी आंदोलनों के लिए संकट पैदा करते हैं।

महिला साक्षरता एवं शिक्षण का यह कार्यक्रम उन तमाम परियोजनाओं से फर्क है जो साक्षरता के मुद्दे से शुरू होती है। उत्तराखण्ड महिला परिषद् का काम साक्षरता का एजेंडा ले कर शुरू नहीं हुआ। ना ही, परिषद् ने साक्षरता को सशक्तिकरण का मुख्य औजार माना है। महिला परिषद् से जुड़े सभी संगठनों ने अपने–अपने गाँव की सामुहिक जरूरतों एवं महिला अधिकार को आधार बनाकर काम शुरू किया। इन जरूरतों की फेहरिस्त में महिला साक्षरता निचली पायदानों पर ही रही। परंतु जब महिलाओं के दैनिक जीवन से सीधी जुड़ी समस्याएं हल हुईं तो धीरे–धीरे वे साक्षरता कार्यक्रम की जरूरत महसूस करने लगीं। इस तरह, सामाजिक परिवर्तनों के मुद्दे साक्षरता की डोर से जुड़ सके।

पूर्व में चले सरकारी एवं अनेक गैर सरकारी प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रमों ने जब साक्षरता को ज्ञान से जोड़ा और निरक्षर महिलाओं को अज्ञानी, पिछड़े हुए लोग कहा जाने लगा तो इसका सीधा असर उनके व्यक्तित्व एवं सामुहिक पहचान पर पड़ा। वे भी स्वयं को अज्ञानी मानने लगीं। सन् अस्सी–नब्बे के दौर में संगठन की सदस्याएं स्वयं का परिचय खुद को 'निरक्षर', 'पिछड़ा हुआ', 'अज्ञानी', 'कमजोर' बताकर देतीं। उत्तराखण्ड महिला परिषद् की नारीवादी कार्यकर्त्ताओं ने इसे एक चुनौती के रूप में लिया और समाज के इस भ्रम को तोड़ने में जुट गईं कि सिर्फ साक्षर हो जाने से कोई व्यक्ति ज्ञानी नहीं हो जाता। महिलाओं के पास ज्ञान का अपना भंडार है जो लगातार अनेक तरीकों से उनके दैनिक क्रियाकलापों में अभिव्यक्त होता है। चूंकि "पढ़ा–लिखा" समाज इस अभिव्यक्ति को समझता नहीं और न मान्यता देता है, इसलिए महिलाओं का ज्ञान एक शंका के घेरे में बंधा रहता है। जैसे– वयस्क महिलायें पारंपरिक माप–तौल के अनुसार वस्तु–विनिमय का कार्य सहजता से कर लेती हैं। एक पसेरी गेंहूँ या दाल के बदले वे लगभग उसी कीमत की मिर्च का लेना–देना सरलता से करती हैं, परंतु मापन की मेट्रिक व्यवस्था समझने–समझाने में वे चूक जाती हैं। पारंपरिक व्यवस्था एवं आधुनिक शिक्षा के मानकों के बीच चलने वाले इस तनाव का साक्षरता कार्यक्रमों के लिए विशेष अर्थ है। महिलाओं को आधुनिक मापन पद्वति सीखने–सिखाने में पारंपरिक व्यवस्था हाशिए में जा सकती है परंतु आधुनिक मापन पद्धति न जानने पर महिलाए खुद को अज्ञानी समझती है। महिला साक्षरता के संदर्भ में यह तनाव और भी दिलचस्प बन जाता है क्योंकि मापन की आधुनिक प्रणाली जान लेने के बाद भी वयस्क महिलाएं अपना दैनिक काम–काज पारंपरिक प्रणाली से ही चलाती हैं।

साक्षरता किसी महिला की जिंदगी तय नहीं करती, सहजतापूर्ण जीवन जीने का माध्यम ही बन सकती है। चूंकि अस्सी–नब्बे के दशक में महिला संगठनों की अधिकतर सदस्याएं बड़ी उम्र की गरीब महिलाएं थीं और स्वयं भी साक्षरता को प्राथमिकता नहीं देती थीं, इस कारण महिला परिषद् के कार्यों में वयस्क स्त्रियों को साक्षर करने का मुद्दा प्रमुख नहीं रहा। चालीस–पचास वर्ष की इन सदस्याओं की प्राथमिकता थीं, गाँव में नेतृत्वकारी मार्गदर्शन देना, संगठन की मजबूती एवं एकता, अच्छी खेती, जंगल, पानी, शौचालय की व्यवस्था, साफ–सफाई, अच्छा स्वास्थ्य एवं घर–गाँव में स्त्रियों के अस्तित्व एवं उनके कार्यों की पहचान एवं मान्यता।

संगठन के कार्यों में औपचारिकता एवं दस्तावेजों के रखरखाव का कभी इतना महत्व नहीं रहा जितना महिलाओं की बदलती सोच, गतिविधियों एवं गाँव में हो रहे प्रभावकारी परिवर्तनों का। इस कारण ऐसी महिलाएं जो नेतृत्व कर सके, (उम्र एवं अनुभव की मान्यता) एवं निष्पक्ष रूप से सामुहिक लाभ के कार्य सभी को

जोड़ते हुए करें, संगठनों की प्रभावशाली नेत्रियों के रूप में उभरीं। इनमें से अधिकतर स्त्रियां निरक्षर थीं परंतु गाँव में उनकी मान्यता होने से संगठन के कार्य निर्बाध गति से चलते। इस प्रवाह में साक्षर होने या न होने का कोई अर्थ नहीं था। निरक्षर स्त्रियां कार्यक्रम का नेतृत्व करतीं, आंदोलनों में हिस्सा लेंती, सरकारी–गैर सरकारी संस्थानों में अपने हक के लिए संघर्ष करतीं और घर–गाँव में अपनी स्थिति मजबूत करतीं जातीं। कभी, कागज–दस्तावेजों से आमना–सामना होने पर, इन महिला नेत्रियों के चारों ओर सहयोगी, शिक्षित महिलाओं एवं पुरुषों का ऐसा हुजूम रहता कि उन्हें निरक्षर होने का ज्ञान भी नहीं हो पाता। चूंकि संगठन के कार्यों के सभी निर्णय सामुहिक होते इसलिए किसी क्षेत्र में व्यक्तिगत क्षमता कम होने पर भी अध्यक्षा का काम चलता रहता।

महिला संगठनों द्वारा संचालित शैक्षणिक कार्यक्रमों के बीच अनेक ऐसी महिलायें भी रहीं जो साक्षरता को सशक्तिकरण का महत्चपूर्ण साधन मानती हैं। महिलाओं का यह दल गोष्ठियों, सम्मेलनों में अपना परिचय देते हुए कहता, ''क्या करें? हम निरक्षर हैं। पढ़े–लिखे होते तो बोलना जानते।'' या फिर, ''पढ़ा–लिखा होता तो हिन्दी में बोलते।'' बाड़ी गाँव, जिला अल्मोड़ा की एक महिला कई बार गोष्ठियों/सम्मेलनों में कहती हैं, ''मैंने पढ़ा–लिखा नहीं। इच्छा थी, पर उस वक्त स्कूल ही नहीं था गाँव में। लड़कियों को पढ़ाते नहीं थे....जब मेरे बच्चे स्कूल जाने लगे तो मैंने उन्हें कभी भी यह नहीं जताया कि मैं निरक्षर हूँ। जब वे स्कूल से आते तो मैं उनकी कॉपी देखती। मास्टर जी ने कॉपी जाँची है कि नहीं, यह स्याही के रंग से पता चल जाता। मैं उन्हें घर पर अभ्यास करने को कहती। बच्चों के घर लौटने से पहले सोचकर रखती कि शाम को उनसे क्या कहना है? इस तरह, उनकी कॉपी–किताबें देखते–देखते मैं भी कुछ शब्द पहचानने लगी।''

पढ़ने–लिखने की ऐसी ललक अनेक महिलाओं में दिखायी देती है। खासकर, संगठन की वे सदस्याएं जो पंचायतों में काम कर रही हैं, शैक्षिक योग्यता को बहुत महत्व देती हैं। पंचायतों में मौखिक परंपरा से काम नहीं चलता। साथ ही, सरकारी कार्यक्रमों जैसे मनरेगा में काम करने के लिए अर्जी लिखने की जरूरत है। संगठन की सदस्याएं स्वयं अर्जी लिखकर देना चाहती हैं। बहुत से गाँवों में राशनकार्ड सरकारी गल्ले की दुकानों में जमा रहते हैं। दुकानदार ही, उसमें दिये गये अनाज की मात्रा लिख देते हैं पर महिलायें उसे समझ नहीं पातीं। इसी प्रकार, जॉब कार्ड ग्राम प्रधान के पास जमा रहने पर महिलायें समझ नहीं पातीं कि उनके काम और पैसे का हिसाब किस तरह किया गया। महिला संगठनों में निरंतर बढ़ती जा रही इस जागरूकता से साक्षर होने की प्रवृति को बल मिला है। जैसे–जैसे संगठन की सदस्याएं अपने जीवन की वास्तविकता अपने ढंग से परिभाषित करती जा रही हैं उनकी सोचने की गति, दिशा एवं दायरा भी बदल रहा है। महिलायें समझने लगी हैं कि किसी दुकानदार, सरकारी अधिकारी, पंचायत समिति आदि से बातचीत के समीकरण शिक्षित होने या न होने से बदल जाते है।

सरकारी साक्षरता कार्यक्रमों में जिस संकुचित समझ का इस्तेमाल किया गया उसकी वजह से ग्रामीण इलाकों में लाखों महिलाएं हैं जो अपना नाम लिखती हैं परन्तु उसके हिज्जों को नहीं पहचानती। वह अपना नाम 'कमला' लिख पाती हैं लेकिन ''क'' को पहचानती नहीं। न ही वह जानती है कि ''ल'' में ''ा'' की मात्रा लगाने से ''ला'' बन जाता है। इस तरह के मशीनीकरण का कोई फायदा नहीं। इस प्रकार की साक्षरता का कोई अर्थ है क्या? इसका उपयोग केवल इतना है कि महिला अंगूठा लगाने की जगह नाम लिखती है। परंतु नाम लिखने के इस कौशल को सीख लेने से औरतें ''पढ़े–लिखों की दुनिया'' में शामिल नहीं हो जातीं। न ही 'पढ़े–लिखों की दुनिया' इस कौशल के आधार पर उन्हें शिक्षित मानती है, बल्कि साक्षर होकर भी वह

''अज्ञानी'', ''अंगूठा छाप'' ही कही जाती है। खास कर, पंचायती चुनावों के दौरान हमने पाया कि ऐसे पतियों की कमी नहीं जो दायें हाथ से अपने हस्ताक्षर करते हैं और बायें हाथ से अपनी पत्नी के हस्ताक्षर करते हुए कहते है, ''वो हमारा बायाँ हाथ ठहरी। तभी उस का नाम बॉयें हाथ से लिखना हुआ।'' पुरूषों के इस रूझान पर कई सवाल उठ सकते है। किसी अन्य के हस्ताक्षर करना गैर–कानूनी मसला है। परंतु महिला समता आन्दोलन की पक्षधर जमात यह भी पूछती है कि पुरुष वर्ग को महिला के हस्ताक्षर कर पाने की ताकत क्यों और कैसे मिली? महिला अपने पति, रिश्तेदारों के हस्ताक्षर खुद करने का साहस नहीं करती। यदि वह इस प्रथा को बुरा भी माने तो उसकी दलील कौन सुनता है? निरक्षर महिला वार्ड सदस्याओं के काम का हिसाब–किताब रखने वाले प्रधानों के सहयोगी इस विषय पर भरपूर जानकारी देते हैं कि वे किस प्रकार उनके के काम को ''एडजस्ट'' करते है।

दूसरे शब्दो में कहें तो साक्षरता–शिक्षा एवं संगठन की गतिविधियों का मसला सत्ता के साथ महिलाओं की स्थिति से जुड़ा हुआ है। गाँव में सामुहिक हित के काम साक्षरता के बिना मौखिक परंपरा से चल जाते हैं परंतु सत्ता का स्वरूप व उसके संबंध लिखित रूप से परिभाषित होते हैं। घर–गाँव के दायरे से बाहर निकल कर जब महिलायें सत्ता से टकराती हैं तो शिक्षित/अशिक्षित की खाई का भेद बारीकी से समझ पाती हैं। उत्तराखण्ड महिला परिषद् की कार्यकर्त्ताओं को ऐसे अनेक अनुभव हुए हैं जब कोई जानकारी लेने या व्यवस्था–संबंधी मुद्दों पर बात करने गाँव के विद्यालयों, पंचायतों में पहुँचीं संगठन की सदस्याओं को निरक्षर/अज्ञानी मान कर नकार दिया गया।

ग्रामीण स्तर पर महिलाओं के सामुहिक निर्णय भी सत्ता एवं शिक्षण के संदर्भ से नियंत्रित होते है। इस प्रक्रिया को संगठन की अध्यक्षा के चुनाव के संदर्भ में समझा जा सकता है। विशेषकर, संगठन का काम शुरू कर रही महिलायें पढ़ी–लिखी बहू को अध्यक्षा बनाती हैं। ''चिट्ठी–पत्री, पैसे का हिसाब–किताब रखना होगा। गोष्ठी की रिपोर्ट लिखनी होगी– यह काम पढ़े–लिखे लोग ही कर सकते हैं।'' यह मानती हुई महिलायें पढ़ा–लिखा होने के गुण को नेतृत्व की क्षमता से जोड़ देती हैं। अधिकतर, उनकी यह मान्यता धराशायी हो जाती है जब छोटी उम्र की बहू की बात गाँववासी नहीं सुनते। ''ये नये जमाने की लड़कियां हमें सिखाने चली है''– बुजुर्गों में मजबूती से व्याप्त इस भावना का तोड़ है क्या? दूसरे शब्दों में कहें तो अनुभव एवं उम्र को हथियार बनाकर यह वर्ग भी सत्ता की बागडोर हाथ से फिसलने नहीं देता। कुछ ही समय बाद, शिक्षित बहू की जगह, निरक्षर पर सक्षम एवं नेतृत्वकारी गुणों से भरपूर सास, संगठन की अध्यक्षा का काम संभाल लेती है।

नंदा के इस अंक में महिला साक्षरता एवं शिक्षण से जुड़े हुए इन्हीं मुद्दों पर लेख प्रकाशित किये गये हैं। खासकर, साक्षरता का काम कर रही स्त्रियों ने अपने अनुभव बॉटने का प्रयास किया है। साथ ही, महिला संगठनों की सदस्याओं एवं कार्यकर्त्ताओं ने गाँवों में हो रहे विकास के कार्यों और परिवर्तनों पर चर्चा की है। क्षेत्रीय महिला परिषद्, चलमोड़ीगाड़ा, दन्या ने महिला साक्षरता पर एक गीत बनाया है। कुमाऊँनी भाषा में लिखा गया यह गीत आजकल महिलाओं की गोष्ठियों में गाया जाता है। कुछ लेखों के साथ कवितायें रच कर लेखिकाओं ने अपनी बात को स्पष्टता एवं मजबूती के साथ प्रस्तुत किया है। उत्तराखण्ड महिला परिषद् सभी रचनाकारों की आभारी है।

अगले अंक तक शुभकामनाएं,

अनुराधा पाण्डे

मेरा जीवन

लीला बिष्ट

मैंने बचपन में कक्षा चार तक ध्याड़ी गाँव की प्राथमिक पाठशाला में पढ़ा। उसके बाद अपनी माँ और पिताजी के साथ दिल्ली चली गई। पाँच से आठ तक की शिक्षा दिल्ली से पूरी की। तब मैं अपने आप को बहुत किस्मत वाला समझती थी। मैं खुद पर गर्व करती थी। अपनी जिंदगी में कुछ विशेष करूँगी, ऐसा सोचती थी। खूब हँसी–खुशी का बचपन बीत रहा था कि अचानक एक अनहोनी घट गई। मेरी माँ का देहान्त हो गया। तब मैं तेरह साल की थी। मेरा छोटा भाई चार साल का था। माँ की मृत्यु हो जाने से मुझे बहुत धक्का लगा।

छः महीने बाद हम भाई–बहन अपने दादी के साथ वापस ध्याड़ी गाँव आ गये। बड़ा भाई पिताजी के साथ दिल्ली में ही रहा। अब हम गाँव में अपने चाचा–चाची और दादी के साथ रहने लगे। एक साल तक भैटा–बडौली गाँव के विद्यालय में कक्षा नौ की पढ़ाई की। तभी मेरे दादाजी ने मेरी शादी तय कर दी। मेरे पिताजी को पत्र भेज दिया कि बेटी की शादी तय कर दी है। मुझे पता भी नहीं था कि शादी करना जरूरी है या नहीं। मेरा तो दिल तब से टूट गया था, जब बचपन में ही माँ मर गई।

मेरे पिताजी दिल्ली से गाँव आये। उन्होंने मुझ से पूछा कि,"क्या तेरी शादी कर दें?" मैं कुछ नहीं बोली। तीस साल पहले की बात है। तब लड़की कुछ नहीं बोलती थी। जैसा माता–पिता कहें, वैसा ही करती थी। मुझे तो पता भी नहीं था कि शादी हो जाने के बाद घर कैसे संभालते हैं।

इस तरह पन्द्रह साल की उम्र में मेरी शादी ध्याड़ी से चिल गाँव में हो गई। शादी के दो साल बाद मेरे पति गुजर गये। उस दिन दूसरा धक्का लग गया। उस वक्त मेरी बेटी गर्भ में थी। अब मुझे अपनी शादी एक सपना लगती है। जैसे, रात का सपना सुबह होते ही टूट जाता है, वैसी ही याद मुझे अपनी शादी की है। तीन महीने बाद मेरी बेटी का जन्म हुआ। उसके एक साल बाद अपने पिताजी व भाई–बहनों के साथ दिल्ली चली गई। मेरी शादी के बाद पिताजी मेरे भाई–बहनों को अपने पास दिल्ली ले गये थे। वहाँ पर पिताजी ने मुझे स्कूल जाने को कहा। तब मैं अठारह साल की थी। मैंने पिताजी से मना कर दिया। तभी तो किस्सा कहते हैं कि अक्ल और उम्र की भेंट नहीं होती।

मेरी बहन की शादी दिल्ली से ही हो गई। मेरे दो भाई, पिताजी और मैं साथ ही रहते थे। मैंने अपनी बेटी को वहीं स्कूल में डाल दिया था। होते–करते एक दिन मेरे सास–ससुर दिल्ली आये और कहने लगे कि उनकी बहू अब दिल्ली में नहीं रहेगी। उन्होंने दन्या में मकान बना लिया था। मेरी सास ने कहा कि यह लड़की हमारी है। वहीं पर स्कूल जायेगी। दन्या में ही रहेगी। मैंने अपने पिताजी से गाँव वापस जाने की हामी भर दी। मेरे पिताजी ने कहा कि यदि बेटी अपनी ससुराल जाना चाहती है तो वे क्यों मना करेंगे। इस तरह, पिताजी ने हमें गाँव वापस भेज दिया। मैं अपने सास–ससुर के साथ गाँव वापस आ गईं। मेरी बेटी दन्या में पढ़ने लगी।

मैं पन्द्रह मई 1990 से बालवाड़ी में शिक्षिका बन कर काम करने लगी। तब मेरे मन में ऐसा कोई विचार नहीं था कि बालवाड़ी में काम करूँगी। दन्या में भी नई ही आई थी। मेरे ससुर जी ने संस्था कार्यकर्त्ताओं से बालवाड़ी में काम करने के लिए बातचीत की। उसके कुछ समय बाद मैं चम्पा दीदी की बहन के साथ तल्ली दन्या की बालवाड़ी में काम करने लगी। यहाँ से एक अलग जिंदगी की शुरुआत हुई।

सास–ससुर के साथ रहकर मैंने बालवाड़ी चलाई। मेरे ससुर जी बहुत तेज स्वभाव के थे लेकिन सहयोग भी देते थे। धीरे–धीरे बालवाड़ी चलाते–चलाते मुझमें परिवर्तन आने लगा। मैं पहले से ही बहुत कम बोलती थी लेकिन पढ़ने का बहुत शौक था। मैने हाईस्कूल का फार्म भरा और बाराकूना स्कूल में इम्तिहान दिया। मैं परीक्षा में पास हो गई। अगर मैं पास नहीं होती तो मेरे ससुर जी कुछ कह सकते थे। जैसे–तैसे पढ़ने

का मन नहीं होता है। मैं बालवाड़ी का काम करती। घर का काम करती। बेटी स्कूल जाती। ऐसे ही दिन कटते गये, बालवाड़ी में दिल लगा कर काम किया। धीरे–धीरे बच्चों के साथ–साथ महिलाओं से भी बातचीत करने लगी। बच्चों व महिलाओं के साथ काम करते–करते मुझमें अन्तर आने लगा। अब मैं समाज में भी इधर–उधर आने–जाने लगी थी। मुझे घर से बाहर कम ही जाने देते थे। दिनभर कहीं भी जाऊं, शाम को घर आ जाना चाहिए, मेरे सुसर जी का यह बहुत कड़ा नियम था। संस्था में जुड़ने से, बार–बार प्रशिक्षणों में जाने से, मैंने दुनिया देखी, लोग देखे, तब कहीं हिम्मत बँधी और जीने का सहारा हुआ।

मैं जो भी कार्य करती दिल लगाकर करती। इस कारण, हमेशा सफलता ही मिली है। लोग काम जैसा भी करते हैं, बोलते बहुत हैं। मुझे ऐसा अच्छा नहीं लगता। मैं जितना काम करूँ उतना भी नहीं बोल पाती हूँ। मेरा बचपन में ही दिल टूट गया था। फिर भी, इतना संतोष जरूर है कि इस काम के माध्यम से अनेक स्थानों का भ्रमण किया, वर्ना ससुराल में घर से बाहर कहाँ निकलने देते? धीरे–धीरे ससुर जी में भी बदलाव आ गया। अगर कही गोष्ठी में मुझे देर हो जाये और मेरी बेटी बोले–"पता नहीं! माँ कहा चली गई।" तब ही सुसर जी गुस्सा करते थे वरना उन्होंने भी मुझे बहुत सहयोग दिया।

अब बेटी की शादी हो गई है। अब समझती हूँ कि मेरे लिये बालवाड़ी का काम बहुत ही सफल रहा। इसी पैसे से मेरी बेटी ने पढ़ा और एमए किया। मेरी बेटी भी मुझे देखकर खुश रहती है। कहती है, "तेरा संस्था का काम बहुत अच्छा है और मेरा मन भी अपनी ससुराल में अच्छा लग रहा है कि माँ अपना काम कर रही है, खाली घर में नहीं बैठी है। घर में बैठे–बैठे तो कुछ काम नहीं होता। खाली बैठने से मन में कितनी बातें सोची जाती हैं और अच्छे–बुरे ख्याल आते हैं। अगर हम काम करते रहेंगे तो व्यस्त रहेंगे। आगे बढ़ते रहेंगे तो दिमाग में काम की ही बातें याद रहेंगी। समाज में कार्य करने से लोग भी हमें इज्जत से देखते हैं।"

बचपन से लेकर आज तक का यही अनुभव है। बीस साल पहले और आज में बहुत अन्तर हो गया। अब मैं दस बालवाड़ियों का मार्गदर्शन करती हूँ। महिलाओं के साथ काम करती हूँ। महिला संगठन की गोष्ठी करती हूँ और किशोरियों से भी संपर्क करती हूँ। महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देना, शिक्षा, खान–पान के बारे में बताना व साक्षरता केन्द्रों को देखना, ये सभी कार्य संस्था की हम सभी बहनें मिलकर करती हैं। संस्था में चाहे कोई कार्यशाला हो या गाँव में गोष्ठी, हम सभी कार्यकर्त्ता मिलकर कार्य करती हैं। गाँवों में महिलाओं से बोलती हैं, काम करती हैं और संस्था में भी अपने काम का विवरण देती हैं। उत्तराखण्ड सेवा निधि में जाकर कम बोल पाती हूँ क्योंकि बचपन में माँ सिखाती, फिर सुसराल में सास सिखाती तो मैं भी समाज में बोलना सीखती। मेरे साथ ऐसा ही हुआ। सब जगह से उदास रही। जितना भी आगे बढ़ी, अपनी हिम्मत से बढ़ी। मैं जितना काम कर रही हूँ, उसकी खुशी है। अपने मन में संतोष होना चाहिए। जितना भी काम करूँगी, दिल लगा कर करूँगी। मैं ऐसे ही काम करती आई हूँ, करती रहूँगी।

महिला सम्मेलन : बलमोड़ीगाड़ा, दन्या (जिला अल्मोड़ा)

अंधकार से प्रकाश की ओर

महेश गलिया

ग्राम–विकास के कार्यों में युवा एवं महिला संगठनों की अविस्मरणीय भूमिका को देखते हुए आज यह लेख लिख रहा हूँ। बीते तीन दशक में ग्राम वातावरण को याद करूँ तो दिमाग में एक स्पष्ट तस्वीर उभरती है। गाँव के अन्दर विकास के जो बिन्दु या मानक आज मान्य हैं, पहले वे नहीं थे। था तो एक ईष्ट देवता का मन्दिर एवं गाँव के मध्य में सार्वजनिक पानी का धारा। गाँव का धार्मिक व सामाजिक वातावरण आज से अलग था। कभी गाँव में झगड़ा हो जाये तो गुस्सा ग्रामवासियों के साथ–साथ जंगल के हरे–भरे वृक्षों पर उतरता था। जंगल से एक या दो गट्ठर बाँज की कच्ची लकड़ी लाना रोज के जरूरी कामों में शामिल रहता। विद्यालय न होने की वजह से बहुत कम बच्चे हाईस्कूल तक पढ़ पाते थे। बालिका शिक्षा पांचवी कक्षा तक रहती। गाँव में विवाद हो जाये तो पट्टी–पटवारी, पुलिस गाँव में आने की जहमत नहीं उठाते थे। सरकारी कर्मचारी क्षेत्र में बहुत कम आते। लोगों की आर्थिक हालत खराब थी। साहूकारों एवं बनियों के कर्ज के बोझ तले किसान दबे हुए थे।

वर्षा ठीकठाक हो जाये तो आलू की पैदावार अच्छी हो जाती थी लेकिन अधिकांश नकदी शराब की भेंट चढ़ जाने से कुछ परिवारों की हालत जर्जर ही बनी रहती। मुझे लगभग डेढ़ दशक पूर्व एक वजीफा मिला। इसके बहाने लोगों के बीच जाने का आधार बन गया। सोलह युवा एवं महिला संगठनों के गठन का काम किया। इससे विचारों के आदान–प्रदान का अवसर मिला। काम करने में सबसे कठिन अपना ही गाँव लगा। मेरे गाँव के नौजवानों में ऊर्जा और उमंग बहुत थी लेकिन दबी हुई थी। युआवों के बीच नेतृत्व की कमी थी। जिस कार्य को ग्राम–प्रशासन एवं राजस्व पुलिस न कर सकी, उसी कार्य को बाद में गाँव के युवा एवं महिला संगठनों ने प्रेरणादायक मुकाम पर लाकर सम्पादित किया।

दो दशक पूर्व गाँव के मन्दिर में सत्यनारायण कथा का आयोजन किया गया। इस आयोजन में गाँव के युवाओं ने बढ–चढ़ कर हिस्सा लिया। नवयुवकों ने मन लगाकर सुन्दर सा कथा–मंडप तैयार किया। इससे पड़ोसी गाँवों से पहली बार सराहना मिली। परिणामस्वरूप, भविष्य के प्रति प्रगति, शान्ति एवं सौहार्द चाहने वाले नवयुवकों में एक नयी चेतना जागी। वही भावना आज भी बरकरार है। बीस साल पूर्व युवाओं ने जो जीवन–मूल्य अंगीकार किये, उसे वे नैतिक जिम्मेदारी समझकर आज भी पूरा करते हैं। राजनीतिक पहलू को ज्यादा महत्त्व नहीं देते हैं। अब गाँव में सामुहिक कार्यक्रमों के लिए एक कमेटी गठित की गई है। जमापूँजी–शेषांश हेतु संयुक्त खाता है। सभी काम निर्विवाद संचालित होते हैं। युवा व महिला संगठन का परस्पर सहयोग रहता है। जब वन बचाने में युवा संगठन असफल हो गया तो उस समय प्रखर रूप से महिला संगठनों ने कमान संभाली। गल्ला गाँव का महिला संगठन एक दशक से सक्रिय है। महिला संगठन की सदस्याएं युवा संगठन की मदद करती हैं तो महिलाओं की मदद करने में युवा भी पीछे नहीं रहते।

पेड़ों में नयी कोपलें आते वक्त अगर गर्मी ज्यादा हो या जंगल में पेड़ कटने की संभावना हो तो वृक्षों के संरक्षण का निर्णय गल्ला गाँव की महिलाओं का होता है। महिलायें अपने बीच से क्रमवार हर माह दो पहरेदार रखती हैं। प्रति महिला दस रुपया सहयोग राशि देती हैं। शायद, यह भावना गाँव की महिलाओं की शिक्षा का स्तर बढ़ने, अन्य समाजों के मध्य जाने, जागरूकता बढ़ने एवं अपनी खेती–किसानी के लिए जंगल के महत्त्व की ठोस समझ बनने से हुआ है। अब लोग जान चुके हैं कि बिना वन के हवा, पानी और खेत–खलिहान नहीं रहने वाला है। वैसे भी अज्ञानतावश इंसान कुछ ही दूरी तक अकेला रह सकता है। लम्बी दूरी तय करने के लिए मनुष्य को समाज व प्रकृति–प्रदत्त संसाधनों का सहारा लेना जरूरी हो जाता है। कभी

झगड़े–फसाद के लिए जाने गये इस क्षेत्र के स्वाभिमानी गाँववासी आज अपने सीमित संसाधनों के उपयोग से जंगल, खेतों की हरियाली एवं आर्थिक–खुशहाली का स्तर प्राप्त करते हुए विशिष्ट पहचान बना चुके हैं। साथ ही, सभी ग्रामवासी स्वावलम्बन हेतु निरंतर प्रयासरत रहते हैं।

यदि संगठनात्मक स्वरूप में मिलजुलकर हम अपने समाज के कमजोर बिंदुओं की पहचान करें और समस्याओं को हल करने का प्रयास करें तो प्रकृति सदा हमारा साथ देती रहेगी। प्रकृति के साथ सामंजस्य रखकर ही समाज उन्नति करते हैं। गल्ला क्षेत्र के संगठन सभी गाँववासियों के सहयोग से निरंतर प्रगति करते रहें, यही हमारी कामना है।

काली दीदी का संघर्ष

राधा खनका

पिथौरागढ़ जिले के विकासखण्ड डीडीहाट के चिटगाल गाँव में रहने वाली काली दीदी एक गरीब परिवार में जीवन–यापन कर रही हैं। दीदी का मायका देवलथल (कनालीछीना विकासखण्ड) में है। बारह वर्ष की उम्र में उनकी शादी हुई। काली दीदी ने संघर्षमय जीवन बिताया। उनके पति बीमार रहते थे। उन्हें घर से बाहर जाने को मना किया गया था। वे जब भी मुवानी आतीं, घर का खर्च चलाने के लिए रास्ते में गेहूँ चूटने वाला गिराठा, कुदाल की बीन, हल के नस्यूड़ आदि बेचती हुई आतीं। जो पैसा कमातीं, उसी से अपने बच्चों के लिए राशन, कपड़े आदि ले जाती थीं। वे सन् 1997 में संस्था के माध्यम से महिला संगठन में जुड़ीं। संगठन में जुड़ने के बाद उन्होंने अनेक सामाजिक कार्य किये। गांव में बहुत अच्छा महिला संगठन बनाया। गाँव में हर माह महिलाओं की बैठक होती है। आवश्यकता पड़ने पर महीने में दो–तीन बैठकें भी कर लेते हैं।

एक दिन उनके गाँव में कुछ अधिकारीगण आये हुए थे। काली दीदी को पता चला कि ग्रामवासियों को भी गोष्ठी में बुलाया गया है लेकिन उनके पति ने वहाँ जाने से मना कर दिया। काली दीदी ने चालाकी की। वे घर के अन्दर गयीं और गगरी का पानी गिरा दिया। पानी भरने के बहाने चली गयीं गाँव में। गोष्ठी में सात आवासीय मकान स्वीकृत हुए थे। आगंतुक ग्रामीणों से भोजन, चाय–पानी माँगने लगे तो कालीदीदी ने कहा, "ये मकान तो सरकार ने दिये हैं। हमारे पास कुछ देने को होता तो हम स्वयं मकान बना लेते। चाहो तो मकानों की स्वीकृति वापस ले जाओ। हम खुद मकान लेकर आयेंगे।" इस तरह, सभी मकान बन गये। न किसी ने रूपये दिये, न लिये।

जब चिटगांल गाँव के पड़ोसी गाँव, कांडा, के निवासियों ने सड़क की माँग रखी तो काली दीदी ने अपने गाँव के महिला संगठन की सदस्याओं से कहा, "अभी बहुत अच्छा अवसर है। हम भी अपने गाँव में हाईस्कूल की माँग करें। गाँव के बच्चे आठ किमी दूर मुवानी स्कूल में पढ़ने के लिए जाते हैं। आने–जाने में थक जाते हैं और बरसात के समय नाले–गधेरों को पार करना भी बहुत कठिन है। हमें हमेशा चिंता लगी रहती है। बच्चे नदी–नालों में बह सकते हैं, इसलिए स्कूल जाने से डरते हैं।" चिटगाल गाँव के निवासियों ने कांडा गाँव का साथ दिया। सम्पूर्ण घाटी के महिला–पुरुषों से सड़क पर चक्का जाम करने को कहा गया। सभी ग्रामवासियों ने मिलकर सिल बैण्ड में चक्का जाम कर दिया। सहायक जिला अधिकारी वहाँ पहुँचे लेकिन गाँववासियों ने रास्ता नहीं खोला। उसके बाद जिला अधिकारी आये। लिखित आश्वासन व सड़क खोलने का समय देने के बाद रास्ता खोला गया।

सात माह का समय बीतने के बाद भी जब सड़क की मंजूरी नहीं हुई तो पुनः चक्का जाम लगा दिया

गया। रास्ता खोलने अनेक अधिकारी एवं विधायकजी आये। पाँच किमी सड़क की मंजूरी और छः माह का समय दिया गया। जब सभी बातें हो गयीं तो काली दीदी ने अपने गाँव की समस्या अधिकारियों को बतायी और कहा, "जब तक हमारे गाँव में हाईस्कूल नहीं खुलेगा, तब तक हम संघर्ष करते रहेंगे।" उन्होने अधिकारियों से गाँव में चलने को कहा। विधायकजी ने कहा, "जब हम आपके गाँव में हाईस्कूल खोलेगें, उसके बाद ही आयेंगे"। एक वर्ष के भीतर हाईस्कूल खुल गया। उद्घाटन के लिए विधायकजी को बुलाया गया। तब से काली दीदी को सभी लोग जानते हैं और उनसे सलाह लेते हैं। इसी प्रकार मिलकर गाँव में ए.एन.एम. सेंटर खोला गया है। गधेरे में पुल बना है। अनपढ़ होने के बावजूद काली दीदी निर्भीक होकर सभी अधिकारियों से बातचीत कर लेती हैं। किसी से नहीं डरती हैं। हर सुख–दुःख में आगे आकर समाज को जोड़ती चलती हैं।

स्वयं गरीब होने के बावजूद काली दीदी ने कभी भी अपने लिए कुछ नहीं माँगा। हमेशा दूसरों के हित के लिए अधिकारियों से सम्पर्क बनाये रहती हैं। यदि कोई उन्हें अपनी समस्या बताये तो वे कहती हैं, "मुझे लिखना नहीं आता। आप अर्जी लिखो। कार्यवाही पूरी करो, मैं मदद करुंगी।" जब तक काम पूरा नहीं होता, वे स्वयं कार्यालयों के चक्कर लगाती रहती हैं। जैसे–वृद्धावस्था–पेंशन, विकलांग–पेंशन, आय प्रमाण–पत्र पटवारी से बनवाना, लाभार्थी को बने हुए कागज वापस दिलवाना आदि काम स्वयं करती हैं। वे इन सभी कार्यों में समर्पण की भावना के साथ लगी रहती हैं। कभी–कभी कहती हैं "क्या करुँ? मेरे पास पैसा होता तो खूब दौड़–भाग करती। अब तो गाड़ी का किराया भी बढ़ गया है।" उनकी उम्र पैंसठ वर्ष है लेकिन कभी कम न होने वाली सूरज की रोशनी की तरह वे निरन्तर काम में लगी रहती हैं।

विकास खण्ड कनालीछीना के ग्राम पंचायत गोबराड़ी के राजस्व गाँव घुमरौली में सोलह परिवार रहते हैं। यह गाँव मुख्य सड़क से सात किमी की दूरी पर बसा है। इस गाँव का रास्ता ऊबड़–खाबड़ है। सन् 2008 में कालीदीदी ने इस गाँव के बारे में बताया तो संस्था के कार्यकर्त्ता वहाँ गये। संस्था की ओर से गाँव में बालवाड़ी खोलने हेतु बैठक की गई तो गाँववासी बहुत खुश हो गये। शिक्षिका एवं स्थान का चयन ग्रामीणों ने बैठक में स्वयं किया। बैठक में घुमरौली की नीमा देवी ने बताया कि उनके छोटे–छोटे बच्चे पाँच किमी दूर मुवानी स्कूल में पढ़ने जाते हैं। गाँव और स्कूल के बीच में चीड़ का जंगल है। जंगल में बाघ, बंदर, सुअर के भय से रोज एक आदमी बच्चों के साथ जाता है। चार बच्चों के साथ एक आदमी का पूरा दिन बर्बाद हो जाता है। जब बच्चे घर पहुँचते हैं, तब अभिभावक चैन की साँस लेते हैं। दूर स्कूल आने–जाने में बच्चे थक जाते हैं। थकान के कारण शाम को भोजन किये बिना ही सो जाते हैं। ना तो अभिभावक बच्चों को अनपढ़ रख सकते हैं, ना ही विद्यालय के समीप कमरा किराये पर ले कर रह सकते हैं।

एक दिन बच्चे जंगल में पहुँचे ही थे कि तेज आँधी आ गयी। चार बच्चे और उनके साथ एक अभिभावक। तेज आँधी में बच्चों को सम्भालना मुश्किल हो गया। घर से बच्चों की माताएँ उन्हें ढूँढने रास्ते में चली आयीं। आँधी से पेड़ गिर रहे थे। माताएँ बच्चों को आवाजें दे रही थीं। इतनी धूल थी कि आँखें खोलकर देख नहीं सकते थे। यह क्रम करीब आधा घण्टा चला। कोई नुकसान नहीं हुआ पर बच्चे और उनके रखवाले अँधेरा होने के बाद ही घर पहुँचे। घर वालों का रो–रो कर बुरा हाल था। बच्चे डर से बीमार पड़ गये।

जब गाँव में बालवाड़ी खुली तो ग्रामीणों में काफी उत्साह था। बच्चे नियमित रूप से बालवाड़ी में आने लगे। परिवारों की संख्या कम होने के कारण गाँव में ना प्राइमरी स्कूल था, ना ही आँगनवाड़ी। बालवाड़ी खोलने के बाद महिला संगठन बना। महिलायें हर बैठक में रास्ते तथा पानी की समस्या बताती थीं। उनके गाँव के ही निवासी श्री श्याम सिंह जी ग्राम प्रधान बने तो उन्होंने सबसे पहले विकासखण्ड में जाकर पानी की समस्या रखी। मालूम हुआ कि किसी ने वहाँ लिखकर निवेदन किया था कि गाँव में पर्याप्त पानी है। जब यह बात महिलाओं ने सुनी तो वे परेशान हो गयीं। गर्मी के तीन महीनों में नीचे गधेरे से पानी लाकर जानवरों को पिलाना, कपड़े–बर्तन धोना, घर की सफाई करना कठिन काम था। गाँव में एक नौला था। रात भर में दस से

पन्द्रह गगरी पानी उस स्रोत में जमा होता था। जो रात में पानी लेने जाये, उसी को पानी मिलता था।

उत्तराखण्ड सेवा निधि, अल्मोड़ा के आर्थिक सहयोग से गाँव में टंकी के निर्माण किया गया। टंकी बनाने के लिए एक गधेरे में बह रहे पानी को रोका लेकिन वहाँ जाने के लिए रास्ता नहीं था। वह जगह पत्थरों से अटी पड़ी थी। महिलाओं ने झाड़ियाँ काट दीं। जमीन खोद कर रास्ता बनाया। रोड़ी–बजरी इकट्ठा की। राम सिंह जी ने टंकी बनाने की जिम्मेदारी ली। सभी पुरुषों, महिलाओं और युवाओं ने टंकी के निर्माण में सहयोग दिया। अब गाँव में पानी की परेशानी नहीं होती है। महिलाओं का कहना है कि गधेरे से पानी लाना मुश्किल है। उस टंकी से पाइप लगाकर गाँव के ऊपर एक अन्य बड़ी टंकी भी बनायी जाती तो हमारे लिए पानी की उपलब्धता बढ़ जाती। समय भी बच जाता। इसके लिए उन्होंने ग्राम–प्रधान से बात की है। यदि संस्था की ओर से मदद होती तो हम अपने हिसाब से अच्छा काम करते और पानी की परेशानी दूर हो जाती।

महिला संगठन सैनार

गुड्डी देवी

सुरेन्द्र सिंह नेगी

सैनार गाँव समुद्र सतह से लगभग तीन हजार फीट की ऊँचाई पर बसा हुआ है। गाँव में बत्तीस परिवार रहते हैं। इसमें बहत्तर महिलायें व चौंतीस पुरुष हैं। गाँव में महिला संगठन का गठन सन् 1977 में किया गया। युवक मंगल दल भी बनाया गया।

1984 में नयार घाटी ग्राम स्वराज्य समिति, बाड़ियूँ के मार्गदर्शन में पुनः महिला संगठन बना और मजबूत हुआ। प्रत्येक महीने की दो एवं पच्चीस तारीख को महिला संगठन की बैठकें होती है। पच्चीस तारीख को सदस्यता शुल्क व खेती की रक्षा व विकास–संबंधी योजनाओं पर चर्चा होती है। दो तारीख की बैठक में स्वयं सहायता, मिनी बैंक में रुपया जमा किया जाता है। अभी तक, पचार हजार रूपया फिक्स डिपॉजिट व चौवालिस हजार रुपया बचत खाते मे जमा है। यदि किसी महिला को निजी–कार्य या शादी–विवाह के लिये धन की आवश्यकता हो तो महिला–समूह द्वारा प्रति सैकड़ा एक रुपया महीने के हिसाब से ब्याज लिया जाता है। इससे कई परिवार लाभान्वित हुए हैं। कोष बढ़ाने के लिये गाँव में शादी–विवाह, जन्म–दिन आदि शुभ कार्यों में भजन–कीर्तन करने पर उत्सवकर्त्ता द्वारा अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान–स्वरूप नकद धनराशि दी जाती है। इस धनराशि को बैंक में जमा किया जाता है। इस तरह अब तक अठारह हजार रूपये की धनराशि जमा हुई है।

महिला संगठन गाँव की आवश्यकता के अनुसार सार्वजनिक कार्यों के लिये बर्तन, शामियाना की व्यवस्था करता है। सामान के रख–रखाव के लिये दो सौ रूपये प्रति कार्य, जैसे–शादी–विवाह पर, लिये जाते हैं। गाँव में सिंचित व असिंचित खेती है। पहले लोग खूब खेती करते थे और इसी से अपनी आजीविका चलाते थे किन्तु अब खेती कम है। फिर भी थोड़ा–बहुत खेती सभी लोग करते हैं। साग–सब्जी का अच्छा उत्पादन करते हैं। सामूहिक रूप से हाका लगाकर गाँव की सीमा से बन्दरों को भगाया जाता है। खेती की सुरक्षा बारी–बारी से की जाती है। पूर्व में पेयजल हेतु पुराने स्रोत से ही पानी की आपूर्ति होती थी किन्तु धीरे–धीरे स्रोत का पानी कम होने की वजह से 1985 में गाँव के लिये जल–निगम द्वारा पाइप लाइन बनाई गई। अठारह–बीस किमी की पाइप लाइन बनी व सैनार एवं गौली गाँवों के लिये एक बड़े हौज का निर्माण हुआ।

दोनों ही गाँवों में किसी को व्यक्तिगत कनेक्शन नहीं दिये गये। पाँच–छः परिवारों के मध्य सार्वजनिक स्टैण्डपोस्टों का निर्माण हुआ। स्टैण्डपोस्ट में लोग बारी–बारी से पानी भरते हैं।

महिला सम्मेलन : दोगड़ी कांडई (जिला चमोली)

गाँव के ऊपरी हिस्से में लगभग चौदह हेक्टेयर भूमि में वनीकरण किया गया है। वनीकरण क्षेत्र में हरे पेड़ों के कटान पर प्रतिबन्ध लगाया गया है। केवल घास ही काटी जाती है। घास को जमा कर जानवरों को खिलाया जाता है। पाँच–छः वर्ष पूर्व वनीकरण की देखभाल व पेड़ों की सुरक्षा से प्रभावित होकर सिविल एवं सोयम वन विभाग, पौड़ी गढ़वाल द्वारा दो बार पाँच–पाँच हजार रुपये प्रदान कर संगठन को पुरस्कृत किया गया।

हर वर्ष महिला संगठन द्वारा रास्तों की सफाई व झाड़ी–कटान का कार्य श्रमदान से किया जाता है। गाँव के भीतर व अन्य गाँवों की ओर जाने वाले रास्तों की सफाई भी श्रमदान से की जाती है। धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यों में भी महिला संगठन की निरंतर भागीदारी रहती है। पुराने धार्मिक व ऐतिहासिक चौफला गीतों का आयोजन सामूहिक रूप से किया जाता है।

नयार घाटी ग्राम स्वराज्य समिति, बाड़ियूँ के तत्वाधान में संगठन की अनेक सदस्याएँ कई बार उत्तराखण्ड महिला परिषद् की गोष्ठियों में अल्मोड़ा गईं। महिलायें क्षेत्र भ्रमण पर भी जाती हैं। भ्रमण से जो अनुभव मिलते हैं, उन्हें अन्य महिलाओं को बताती हैं। महिलाओं का आपसी समन्वय प्रगाढ़ है। संगठन द्वारा सामूहिक रूप से गरीब एवं असहाय परिवारों की मदद की जाती है।

स्त्रियों की कथाएं

माया जोशी

एक लड़की थी। उसका नाम था खुशी। वे चार बहनें और एक भाई थे। खुशी बारहवीं कक्षा में पढ़ती थी। एक दिन उसके पिता की भेंट शिक्षा विभाग में कार्यरत एक सज्जन से हुई। उन्होंने अपने लड़के की शादी की बात छेड़ी और कहा कि उनका बेटा सरकारी नौकरी में है। उन्हें एक सीधी–सरल लड़की बहू के रुप में चाहिए।

खुशी के पिता ने जवाब दिया कि उनकी बेटी बारहवीं में पढ़ती है। उसकी उम्र सत्रह साल है। वे अपने बेटे की शादी खुशी से कर सकते हैं। दोनों राजी हो गये। इस तरह, खुशी की शादी तय हो गयी। जब बारात आयी तो कन्यादान के समय दुल्हे के पिता इस बात पर अड़ गये कि स्वर्ण प्रतिमा आधे तोले की होनी चाहिए। मुश्किल से उन्हें मनाकर आधे तोले की स्वर्ण प्रतिमा के लिए पैसे दिये, तब शादी संपन्न हुई। शादी के

सिर्फ दस दिन बाद ही उन्होंने लड़की को मारना–पीटना शुरू कर दिया। वे उसे बारहवीं की परीक्षा देने मायके वापस नहीं आने देना चाहते थे। इस तरह, धीरे–धीरे बात आगे बढ़ने लगी।

एक दिन उन्होंने पानी का टैंक साफ करने के लिए खुशी को उसके अन्दर भेजा और टैंक का ढक्कन ऊपर से बन्द कर दिया। जब खुशी उस टैंक के अन्दर छटपटाई तो टैंक पलट जाने से ढक्कन खुल गया। खुशी रात को ही वहाँ से भाग निकली और बाजार आकर अपने घर पर फोन किया। तब उसके पिता अपने साथ चार अन्य लोगों को लेकर वहाँ पहुँचे और खुशी को अपने साथ घर वापस ले आये। कुछ समय पश्चात्, खुशी ने बारहवीं की परीक्षा भी दे दी तथा ससुराल वालों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करवायी।

रिपोर्ट करने के बाद ससुराल पक्ष में कुछ लोगों को जेल हो गयी। लेकिन, कुछ दिनों के बाद उन्हें जमानत पर छोड़ दिया गया। अभी भी मुकदमा चल रहा है। खुशी की दादी का कहना है कि लड़की छोटी है। उसकी इतनी उम्र पड़ी है वह कैसे काटेगी? यदि ससुराल पक्ष के लोग खुशी को अपने साथ ले जाना चाहेंगे तो वे उसे तुरन्त ससुराल भेज देंगी। खुशी की समझ में नहीं आ रहा है कि वह क्या करे। मैं भी उनके घर गयी। खुशी की दादी को समझाते हुए कहा "अभी आपकी लड़की छोटी है। उसे आगे पढ़ने दो और इस काबिल बनाओ कि वह अपने पैरों पर खड़ी हो सके।" मेरे मन में बार–बार ये प्रश्न कौंधते हैं –

क्या ससुराल जा कर खुशी की जिन्दगी सुधरेगी?

क्या खुशी अपनी जिंदगी अपने हिसाब से जी पायेगी?

इसी तरह की एक अन्य कथा है। किसी गाँव में एक महिला रहती थी। शादी के लगभग दस साल बाद भी उसके बच्चे नहीं थे। उसकी सास व अन्य सभी परिवारजन उसे ताने देने लगे। उसे खुद भी लगने लगा कि मुझे अपने पति के वंश को आगे बढ़ाना चाहिए। उसने अपने पति की दूसरी शादी करवा दी। शादी के कुछ समय बाद ही दूसरी पत्नी के एक लड़की व दो लड़के पैदा हुए।

अब बड़े लड़के ने बारहवीं की परीक्षा पास कर ली है। वह दिल्ली में किसी कम्पनी में काम करता है। दोनों बेटे बड़ी माँ को अपशब्द कहते रहते हैं। पति भी छोटी पत्नी के ही पक्ष में बोलते हैं। छोटी–छोटी बातों पर पहली पत्नी के साथ मारपीट करते हैं। यदि वह कुछ भी काम अपने मन से करती है तो उसे लाठी–डंडों से पीटते हैं।

पहली पत्नी के पास कुछ गाय और बकरियाँ हैं। उसने अपने घर का खर्च चलाने के लिए एक बकरी को बेच दिया। तभी पैसो के लिए उसके पति व दूसरी पत्नी ने मार–पीट शुरू कर दी। उन्होंने उसे इतना मारा कि वह खून से लथपथ हो कर जमीन पर गिर पड़ी। उसका आधा कान काट दिया गया। उसने दूसरे दिन पुलिस बुलाई। जब पुलिस आयी तो मारपीट में लिप्त सभी लोगों के बयान लिये गये। उस समय आदमी ने चालाकी दिखाते हुए अपनी पहली पत्नी से माफी माँग ली। महिला पिघल गयी। उसने उसी समय राजीनामा कर लिया। अब प्रश्न यह उठता है कि –

क्या महिला को अपने पति की दूसरी शादी करवानी चाहिए थी?

क्या वह अपनी चीजों का उपयोग करने और उन्हें बेचने–खरीदने का निर्णय खुद नहीं ले सकती?

क्या पत्नी ने आदमी को पुलिस से बचाना चाहिए था?

इन प्रश्नों के उत्तर दे पाना सरल काम नहीं है। समाज की ये विसंगतियाँ दिखाती हैं कि एक सम्मानजनक जिंदगी जी पाने के लिए महिलाओं को अभी लंबा सफर तय करना होगा।

कोट्यूड़ा महिला संगठन की चुनाव पर समझ

पुष्पा पुनेठा

विधान–सभा चुनावों के दौरान कोट्यूड़ा महिला संगठन की सदस्याओं के एक अनुभव ने हमें यह सिखाया कि प्रत्याशी का प्रचार–प्रसार करने हेतु लोग गाँव में आयें तो मजबूती से अपनी बातें आंगतुकों के सामने रखो। जब प्रचारकर्त्ताओं ने महिला संगठन की सदस्याओं से कहा कि अगर वे उनकी पार्टी को वोट देंगी तो हर समस्या का हल निकलेगा और वादा किया कि गाँव में बिजली, पानी के टैंक, शौचालय बनायेंगे, स्कूल खोलेंगे, साथ ही, राशन–कार्ड भी बनवा देंगे तो महिलाओं ने जवाब दिया, "आप लोग हर पाँच साल बाद यही बातें कहते हैं। वादे बहुत करते हैं पर चुनाव जीत जाने के बाद गाँवों में नहीं आते हैं। अब हम भी संस्था के माध्यम से जागरूक हो चुकी हैं। आपकी बातों में विश्वास नहीं करती हैं। जो भी उम्मीदवार हमें ठीक लगेगा, हमारी समस्याऐं सुनेगा, हम उसी को वोट देंगी।"

संगठन की सभी सदस्याओं ने अपनी व्यक्तिगत व गाँव की समस्या प्रत्याशियों व प्रचारकों को बताई। महिलाओं ने कहा कि जो समस्याओं को दूर करेगा, वे उसी का साथ देंगी। तब प्रचारकों ने महिलाओं से वादा किया कि वे विधवा पेंशन, वृद्धावस्था पेंशन के कागज बनवाकर पेंशन लगवायेंगे, राशन व अन्य समस्याओं का समाधान करेंगे। इस बार जिस गाँव में भी प्रचारक गये, महिलाओं ने सबसे अपनी बात कही।

कोट्यूड़ा गाँव की महिलाओं ने दो मार्च को दन्या में आयोजित किए गए महिला–मेला में "चुनाव, विधायक एवं जनता" के कार्यों पर एक नाटक प्रस्तुत किया। सभी को विधानसभा चुनावों के बारे में जानकारी दी। यह भी बताया कि गाँव के लोगों को राजनीति किस तरह बेवकूफ बनाती है। अगर जनता जागरूक है तो राजनीतिक व्यक्ति कुछ नहीं कर सकते। संगठन के माध्यम से महिलायें अपनी समस्या ग्राम–प्रधान से कहती हैं। अगर वे नहीं सुनते तो ब्लॉक में जाकर भी अपनी बात बताती हैं। गाँव में हर माह गोष्ठी होती है। तीन माह में एक–दो बार उत्तराखण्ड महिला परिषद् की गोष्ठी अल्मोड़ा में होती है, जिसमें उन्हें नई–नई जानकारियाँ दी जाती हैं। ग्राम–सभा की गोष्ठी में जाकर भी वे अपनी समस्याएँ कहती हैं। मासिक गोष्ठी में गाँव की सभी समस्याओं पर चर्चा की जाती है। कोट्यूड़ा गाँव के संगठन की महिलाओं के भाव इस कविता में प्रकट किये हैं :

जनता

लोक सभा के चुनाव आने लगे हैं,
नेता सभी गाँवों में जाने लगे हैं।।
पांच साल तक गाँव की याद नहीं आई,
चुनाव आते ही गाँव की तरफ गाड़ी दौड़ाई।।

नेता

हम तुम्हारी सब बातें सुनेंगे
सदन में लोक–समस्या कहेंगे।।
हमको वोट दिलाओ गाँव वालों
हम तुमको रोजगार दिलायेंगे।।
गाँव की बेरोजगारी मिटायेंगे

बिजली, सड़क, पानी स्कूल में लायेंगे।।
सांसद बनाने में आपका सहयोग जरूरी है
नहीं तो हमारी यह यात्रा अधूरी है।।

ग्रामवासी

कितने वोट दे दिये
हर बार वादों की भरमार है।।
पांच साल बाद गाँव में आते हैं
तब गाँव वालों से प्यार जताते हैं।।
महिला संगठन ने आवाज उठाई
''जनता जागरूक हो गई है भाई''!!

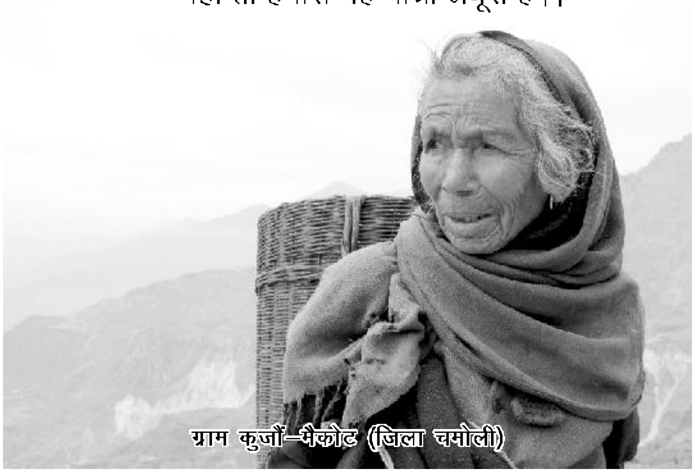

ग्राम कुजौं–मैकोट (जिला चमोली)

जल ही जीवन है लेकिन जल की कमी है

लक्ष्मी पुष्पवान

आजकल गाँव–शहर सभी जगह पीने के पानी की कमी हो गई है। आम आदमी परेशान है। जिला रूद्रप्रयाग का ऊखीमठ ब्लॉक चारों ओर से पानी के स्रोतों से घिरा हुआ है, फिर भी, नहाने–धोने एवं पीने के लिए पानी सीमित मात्रा में उपलब्ध हो रहा है।

पानी की समस्या पर माह अप्रैल में ग्राम पठाली में महिला संगठन की गोष्ठी में चर्चा हुई। गोष्ठी में सभी महिलाओं ने कहा कि गाँवों में पानी की कमी है। बैठक में महिला संगठन की अध्यक्षा गोदाम्बरी देवी ने कहा कि उनके गाँव में पानी की समस्या होने से महिलाओं का बहुत सा समय पानी लेने में ही चला जाता है। खान–पान, जानवरों के पीने के लिए, कपड़े–बर्तन धोने जैसे सभी कार्यों के लिए पानी की जरूरत होती है। पानी लेने के लिए महिलायें भटकती रहती हैं। इससे उनके अन्य कार्यों पर भी असर पड़ता है।

गोष्ठी : ग्राम उसाड़ा (जिला रूद्रप्रयाग)

हमारे गाँव में विकास की जो योजनाएँ आई हैं, उनसे महिलाओं के सिर के बोझ कम नहीं हुए हैं। उत्तराखण्ड में आजीविका का प्रमुख साधन खेती और पशुपालन है। जिससे

कई बेरोजगार अपना जीवन–यापन करते हैं। साथ ही, कृषि से संबंधित कार्य, पशुओं के लिए घास–चारा, दूध का काम, जड़ी–बूटी इत्यादि योजनाएँ हैं। उपरोक्त सभी योजनाएँ क्रियान्वित तो होती हैं लेकिन जल आपूर्ति के बिना अधूरी रह जाती हैं। हम संस्था कार्यकर्त्ता महिला गोष्ठी में महिलाओं के रोजमर्रा के कार्यो को देखते हुए उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतू सभी कार्यों का आकलन करती हैं। यह भी अनुमान लगाती हैं कि गाँवों में पानी की कितनी मात्रा उपलब्ध है और कितने पानी की वास्तव में जरूरत है।

महिलाओं को पानी के पीछे अपना समय, शरीर एवं शक्ति लगानी पड़ती है। घर का चौका–चूल्हा, खेत, घास–चारा पत्ती इकट्ठा करना, सब्जी उगाना, खाना बनाने को ईंधन लकड़ी लाना सभी काम महिलायें करती हैं। एक महीने में कम से कम तीस बोझ लकड़ी और घास के तो लाती ही हैं लेकिन उनके कामों का आकलन कहीं नहीं होता है। साथ ही, कहावत है "बिन पानी सब सून"। घर में पानी की आपूर्ति करना महिलाओं की जिम्मेदारी मानी जाती है। इसलिए पानी की समस्या का समाधान देखना तो ग्राम पंचायत का भी मुख्य कार्य बनता है।

उत्तराखण्ड महिला परिषद् की गोष्ठियों में जाकर हमें पानी के संरक्षण व उचित प्रबंधन के बारे में काफी जानकारी प्राप्त होती है, जो हमारा मार्गदर्शन करती है। हमें उत्तराखण्ड महिला परिषद् के महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम के तहत बनाई गई पुस्तिकाओं को पढ़कर भी काफी अच्छे सुझाव प्राप्त हुए, इसके लिए मैं परिषद् का धन्यवाद करती हूँ।

डायरी के कुछ अंश

शोभा बिष्ट

आज दिनाँक नौ अप्रैल 2012 को प्रातः साढ़े नौ बजे कर्णप्रयाग से अल्मोड़ा तक की हमारी बस यात्रा शुरू हुई। हम सभी महिलायें सफर का आनन्द उठाते हुए चल दिए। हमने नौली, बगोली, नारायणबगड, थराली आदि जगहों का भ्रमण किया। उसके बाद ग्वालदम में रुककर दोपहर का भोजन किया और सफर में आगे निकल पड़े। आगे जाकर हमने बैजनाथ मन्दिर के दर्शन किए। उसके बाद अगले स्टेशन गरुड़ में पहुँचकर सभी महिलाओं ने हँसी–खुशी के साथ बाजार देखा। गाड़ी में बैठे–बैठे गाना गाते हम सोमेश्वर आ पहुँचे। वहाँ पर हमें अपनी संस्था के प्रमुख किमोठी जी के एक दोस्त श्री तिवारी जी मिले। वे भ्रमण पर हमारे साथ आये। चलते–चलते हम कौसानी पहुँचे। फिर कोसी पहुँचने के कुछ ही देर बाद हम अपने अन्तिम स्टेशन अल्मोड़ा आ पहुँचे। अल्मोड़ा में उत्तराखण्ड महिला परिषद् के दफ्तर में पहुँचकर सबसे पहले चाय पी और फिर वहाँ के कार्यकर्त्ताओं को भोजन बनाने में मदद की। फिर क्या? तभी हमने देखा कि वहाँ गोपेश्वर से भी महिलाओं का एक समूह आया हुआ है। हमने अपना परिचय दिया और उनका परिचय लिया। सबने साथ मिलकर खाना खाया। फिर नाचा–गाया। सब के निवेदन से भाई किमोठी जी ने एक भजन गाया जो सब के मन को भा गया। भजन के बोल थे "तेरा मन दर्पण कहलाये रे"। सभी लोग थके हुए थे, इसलिए जल्दी ही सो गये।

दस अप्रैल 2012 की सुबह अल्मोड़ा से आगे भ्रमण के लिए हमारे साथ श्री धरम सिंह लटवाल जी, उत्तराखण्ड सेवा निधि के कार्यकर्त्ता, आये। हमने भजन गाते हुए अपनी यात्रा शुरू की। चलते–चलते साढ़े सात बजे धौलछीना पहुँचे, वहाँ पर चाय–नाश्ता किया। धौलछीना से चौबीस किलोमीटर आगे एक गाँव

सेराघाट में हमारी बस रुकी। वहाँ पर एक अन्य संस्था "राइज" के प्रमुख श्री भगवान डोबाल जी ने हमारा स्वागत किया और क्षेत्र के बारे में अवगत कराया। उन्होंने सरयू नदी के किनारे की एक जगह दिखाई और बताया कि पहले यहाँ खेत थे, जो नदी के कटाव से बह चुके हैं। गाँव की महिलाओं ने खेतों को बचाने के लिए चैकडैम बनाये हैं। एक महिला ने बताया कि वे और आगे तक चैकडैम बनायेंगी। जिससे खेत नष्ट होने से बच जायेंगे।

सेराघाट से आगे बढ़कर हम थोड़ी देर में गणाई गंगोली जा पहुँचे। हमने वहाँ की संस्था देखी। इस संस्था में अन्य लोगों के अलावा श्री बच्ची सिंह बिष्ट जी और कमला कार्यकर्त्ता हैं। श्री बच्ची सिंह बिष्ट जी गणाई गंगोली क्षेत्र में संस्था चलाते है। कमला साक्षारता केन्द्र चलाती है। उन्होंने हमारा स्वागत किया। चलते–चलते टुपरौली गाँव में पहुँच गये। लेकिन साक्षरता केन्द्र बन्द था। कारण पूछा तो पता चला कि वहाँ एक जवान पुरुष की आकस्मिक मौत हो जाने की वजह से साक्षरता केन्द्र को बंद किया गया है। इसके बावजूद वहाँ के निवासियों ने हमारे लिए अम्बेडकर भवन में व्यवस्था की थी। यह एक बहुत बड़ा, दो मंजिला भवन है। वहाँ पर विजया साक्षरता केन्द्र चलाती है। लेकिन वहाँ की कुछ ही महिलायें अपना नाम बता पा रही थीं। इससे पता चलता है कि वहाँ अभी अशिक्षित लोग ज्यादा है।

चलते–चलते हम रुँगड़ी गाँव में जा पहुँचे। वहाँ पर रुँगड़ी महिला संगठन ने बड़े अच्छे ढंग से हमारा स्वागत किया। हमें बहुत अच्छा लगा। सभी ने वहाँ पर भोजन किया। खाने की व्यवस्था भी बहुत अच्छी तरह से की गई थी। वहाँ की सभी महिलायें काम कर रही थीं। इससे पता चला कि यहाँ का संगठन बहुत मजबूत है। वहाँ पर अध्यक्षा श्रीमती नन्दी देवी एवं हंसी दीदी के विचार, बोलचाल, व्यवहार हमें बहुत अच्छे लगे।

अब हम सभी लोग दो ग्रुपों में बँट गये। कुछ लोग भन्याड़ी गाँव में गये तो कुछ रूँगड़ी गाँव के आस–पास में भ्रमण के लिए निकले। मैं भन्याड़ी गाँव में गयी थी। वहाँ के लोग अच्छे थे। व्यवस्था अच्छी थी। वहाँ पर अशिक्षित औरतें काफी थी। सत्रह–अठारह साल की कुछ लड़कियाँ भी निरक्षर थीं। वहाँ पर साक्षरता केन्द्र की शिक्षिका ममता है। उन्होंने सितम्बर 2011 से केन्द्र चलाना शुरू किया, तब जाकर महिलाओं को कुछ अक्षर ज्ञान हुआ। हमने देखा कि महिलायें अपना नाम लिख रही थीं। इससे पता चला कि वे साक्षरता केन्द्र में नियमित रूप से आ रही हैं। हमें खुशी हुई कि यह केन्द्र बहुत अच्छा चल रहा है। केन्द्र इसी प्रकार से चलेगा तो गाँव में काफी सुधार हो जायेगा। हमने भी उन्हें कुछ ज्ञान की बातें बताईं। वहाँ की अध्यक्षा श्रीमती विमला देवी बहुत सुलझे विचारों की महिला हैं। वहाँ का संगठन पंजीकृत नहीं है। हमने अपनी बातों में यह भी कहा कि संगठन को पक्का करो, तभी औरतें आगे बढ़ेंगी। रुँगड़ी गाँव में महिलाओं ने कहा, "हमने यहाँ के रास्ते–नाले स्वयं बनाये हैं। हम महिलायें खुद काम करती हैं।" फिर, रात का भोजन भी बहुत अच्छा था।

महिला सम्मेलन : ग्राम दियारकोट (जिला चमोली)

ग्यारह अप्रैल 2012 की सुबह साढ़े छः बजे सभी महिलाओं से विदा लेकर हम आगे की ओर चले। कुछ समय बाद गंगोलीहाट पहुँचे। वहाँ पर प्रसिद्ध पाताल भुवनेश्वर जी की गुफा देखने गये। वहाँ का ऐसा अद्भुत दृश्य था जो आज तक न देखा और न सुना था। वहाँ जाकर ऐसा लगा कि चार–धाम की यात्रा इसी गुफा में हो गई। वहाँ से वापस आते समय हमने अल्मोड़ा के निकट चिड़ियाघर में गुलदार देखा। बहुत अच्छा लगा। फिर हम अपनी आज की यात्रा को खत्म करते हुए उत्तराखण्ड महिला परिषद्, अल्मोड़ा में पहुँच गये। जहाँ हमने कुछ देर आराम करने के बाद चाय पी और अल्मोड़ा की नन्दा देवी मन्दिर के दर्शन करने चले गये। नन्दा देवी के मंदिर में कीर्तन–भजन किया और बाजार घूमकर आये। उसके बाद, उत्तराखण्ड महिला परिषद् में हमारी बैठक हुई। बैठक में सभी ने अपनी–अपनी यात्रा का पूरा विवरण दिया। बारह अप्रैल 2012 की सुबह साढ़े पांच बजे हम अपने गाँव की ओर वापस चल पड़े।

यह यात्रा एक अविस्मरणीय अनुभव था। तीस महिलाओं के साथ एक टोली में यात्रा करना निश्चित ही रोमांचकारी रहा। मैं यह यात्रा कभी नहीं भूलूँगी।

महिला संगठन कुलौरी

पुष्पा पुनेठा

कुलौरी गाँव में महिला संगठन सक्रिय है। यहाँ अनुसूचित जाति के पैंतीस परिवार रहते हैं। इस गाँव में महिला साक्षरता केन्द्र चलता है। सत्रह अगस्त 2011 के दिन गाँव में आपदा आने से बहुत नुकसान हआ। मलुवा और पत्थर गिरने से इस गाँव के लोगों का पानी का नौला (स्रोत) दब गया। गाँव में पाइप लाइन टूट गई। बच्चों के स्कूल जाने का रास्ता भी टूट गया। ग्रामवासियों को काफी मुसीबतों का सामान करना पड़ा।

ग्रामवासियों ने महिला गोष्ठी में अपनी बातें रखीं। संस्था के कार्यकत्ताओं ने महिलाओं को सुझाव दिया कि यह सबकी समस्या है। इसे ग्रामसभा की मीटिंग में बताना चाहिए। साथ ही, ग्राम–प्रधान से मिलना होगा। पानी का नौला ठीक करना जरूरी है। यह सुन कर संगठन की सदस्याएं ग्राम–प्रधान के पास गई तथा अपनी समस्या कही। उसके बाद, प्रधान जी ने नौले की मरम्मत का कार्य करवाया। नौला बनाने का काम महिला–पुरुष दोनों ने मिल कर किया। खुदान करके मलवा हटाया। अब नौले में पानी रहता है। नौले के चारों तरफ की झाड़ियां भी काटी गई। अब वहाँ पर पत्थरों की दीवार लगी है और नौले तक जाने के लिए एक अच्छा रास्ता बन गया है। महिलाओं के बार–बार कहने पर ग्राम–प्रधान जी ने नौले का कार्य करवाया। सभी को एक सौ बीस रुपये मजदूरी मिली। महिलाओं को अपनी बात कहने की हिम्मत आई। यह सब परिवर्तन संगठन व साक्षरता केन्द्र से आया।

पहले गाँव की महिलायें बाहर संस्था की गोष्ठियों में नहीं जाती थीं। अब गोष्ठियों में जाती हैं और जो भी जानकारी मिलती है, उसे अपने गाँव में अन्य महिलाओं को बताती हैं। इस गाँव की महिलाओं ने साक्षरता केन्द्र में जाकर काफी जानकारी ली है। साफ–सफाई व स्वास्थ्य पर भी ध्यान देती हैं। संस्था के माध्यम से मंच पर आकर अपनी बात कहती हैं। वे अपनी बात निःसंकोच बताती हैं। महिलाओं के विकास से संबंधित मुद्दों पर नाटक करती हैं। हर माह गोष्ठी होने से उनका उत्साह बना रहता है। धीरे–धीरे गाँव में परिवर्तन आ रहा है।

पानी की समस्या

बबीता डसीला

हमारे गाँव का नाम दिगार कोली है। हमारे गाँव में पानी की बहुत समस्या है। किसी को भी जरूरत के मुताबिक पूरा पानी नहीं मिल पाता है। हमारे गाँव में एक धारा और एक नौला है। गर्मियों के मौसम में धारे में पानी नहीं आता। पानी लेने सभी लोग नौले में जाते हैं, जिससे नौले में पानी पूरा नहीं हो पाता। पूरे गाँव को पानी मिलना बहुत कठिन होता है। लोग पानी के लिए तरसते हैं। हम रात भर में कभी–कभी तीन–चार घंटे भी अच्छी तरह से सो नहीं पाते क्योंकि नौले में पानी की बारी लगी रहती है। कभी–कभी हम दो घंटे सो कर एक बजे रात से नौले में जाते हैं और सुबह पाँच बजे तक क्रम से दो बाल्टी पानी ही मिल पाता है। इन दिनों गर्मियों में तो पानी की कुछ ज्यादा ही परेशानी हो रही है। माह दिसम्बर में भी दो बाल्टी पानी बड़ी मुश्किल से मिल पाता है। इस कारण हम अन्य कई काम अच्छी तरह से नहीं कर पाती हैं। जब धारे में पानी आता है, तब पूरे गाँव के लिए पानी पूरा हो जाता है। पानी मिल जाने से हमें काम करने में सुविधा होती है और समय एवं शक्ति भी बचती है।

आपदा का असर

पुष्पा पुनेठा

अठारह अगस्त 2011 के दिन बादल फटने के कारण धारागाड़ गाँव में काफी नुकसान हुआ। सुबह छः बजे के समय इसी गाँव के निवासी श्री परमानन्द पाण्डे जी का मकान टूट गया। अन्य ग्रामवासियों की आँगन की दीवारें, बाथरूम इत्यादि भी टूट गये। पाण्डेजी का मकान टूटने से वहीं पर नौ जानवर मलवे के नीचे दब गये। सौभाग्य से उनका परिवार व गाँव के अन्य लोग बच गये। काफी बड़ा हादसा हुआ। दूसरे दिन ग्राम–प्रधान, पटवारी, तहसील के कर्मचारी व क्षेत्र के लोग इस गाँव में आये। दो–तीन परिवारों को पंचायत घर में रखा गया तथा पटवारी जी ने चार टैन्ट भी लगवाये। वर्षा लगातार हो रही थी। उस गाँव की पूरी जमीन धँस रही थी। घरों में रहने से खतरा था इसलिये गाँव के लोगों को पंचायत घर व टैंट में रहने की सलाह दी गई। पटवारी के माध्यम से गाँव के लोगों को पाँच–पाँच दिन का राशन भी वितरित किया गया। लोगों ने एक दूसरे की मदद की। मकान हेतु पैसे मिले तथा जानवरों के नुकसान पर मुआवजा मिला। इस बीच गाँव में विधायक, सामाजिक–कार्यकर्त्ता आदि सभी लोग आये। ब्लॉक के अधिकारी भी पहुँचे तथा दन्या उत्तराखण्ड शिवाशक्ति और उत्तराखण्ड महिला परिषद्, अल्मोड़ा के

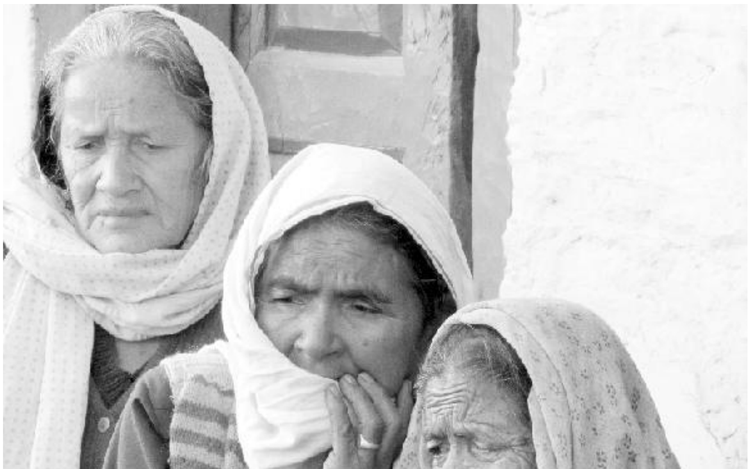

ग्राम दियारकोट (जिला चमोली)

कार्यकर्त्ता भी धारागाड़ गाँव में आये। उन्होंने लोगों की समस्याएँ देखी–सुनीं तथा उन्हें ब्लॉक द्वारा कुछ कार्यक्रम दिलाने व ग्राम–प्रधान द्वारा कार्य करवाने का सुझाव दिया।

उत्तराखण्ड महिला परिषद से आयी अनुराधा दीदी ने गाँव वालों की समस्या को देखते हुये उनसे शौचालय बनाने को कहा। महिला परिषद् के सहयोग से गाँव में पन्द्रह शौचालय बनाये गये। जिससे गाँव में गंदगी दूर हुई। इस बीच ब्लॉक के अधिकारियों द्वारा गाँव में दीवार–बन्दी हेतु कुछ बजट दिया गया। ग्रामवासियों ने अपने घरों के आँगन की दीवारें लगवाईं तथा कुछ चैकडेम भी बनवाये, जिससे जमीन को टूटने से रोका जा सके और लोगों के घर बच जायें। गाँव के कुछ परिवार एक माह तक टैन्ट व पंचायत घर में रहे। जब तक पूरी दीवारें और शौचालय नहीं बने, वे गाँव में नहीं रहे। सबके मन में भय हो गया था कि ज्यादा वर्षा आने पर मकान टूट न जायें। आपदा से धारागाड़ गाँव में जमीन को भी नुकसान हुआ। धान के खेतों में मलुवा व पत्थर भर गये। मिट्‌टी–पत्थर गिरने से पानी के स्रोत भी टूट गये।

इस बीच गांव के लोग अपनी बात कहने ब्लॉक में गये। जगह–जगह दफ्तरों में आवेदन किया। महिला संगठन की सदस्याओं ने नये मकान बनवाने में श्रमदान किया तथा कोष के माध्यम से भी मदद की। संगठन की महिलायें गाँव के सामूहिक कार्यों को करने के लिए ग्राम–प्रधान से मदद लेती हैं। पंच श्रीमती माधवी पाण्डे ने भी अपने स्तर से ब्लॉक के अधिकारियों से बात की। ब्लॉक द्वारा गाँव के अनेक परिवारों को दस या पाँच हजार रुपया दीवारबंदी हेतु दिया गया, जिससे लोगों ने अपने घरों की दीवारें बनाईं।

गाँव में महिला संगठन के सहयोग से एक महिला साक्षरता केन्द्र भी चलता है। जिसमें महिलायें अपने हस्ताक्षर करना, पढ़ना–लिखना सीख रही हैं। साथ ही साक्षरता की किताबों के माध्यम से बैंक, पोस्ट ऑफिस, विड्रोल फार्म भरना, जॉब–कार्ड व राशन–कार्ड की भी जानकारी दी जाती है। स्वास्थ्य के बारे में तथा पंचायती–राज योजना के बारे में जानकारी लेना भी साक्षरता का एक हिस्सा है। महिलायें रोज केन्द्र में आकर प्रार्थना करती हैं। उसके बाद पढ़ती–लिखती हैं। जब साक्षरता केन्द्र का उद्‌घाटन किया तो महिलाओं में काफी उत्साह था। ग्राम–प्रधान जी भी इस केन्द्र को खोलने से काफी खुश थे। गाँव में विकास के अन्य कार्यक्रमों के साथ–साथ महिलाओं की शिक्षा भी जरूरी है। सभी महिलाओं व संस्था के कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से साक्षरता केन्द्र अच्छा चल रहा है।

मुनौली गाँव का महिला संगठन

लीला बिष्ट

मुनौली गाँव में गाय–बछियाँ के जंगल में जाने का रास्ता नहीं था। महिलाओं ने गोष्ठी कर यह बात उठायी और कहा, ''गाय–बछियाँ जंगल में चरने कैसे जायें? बरसात में रास्ता टूट गया है।'' उसके बाद, संगठन की सभी महिलाओं ने अपने क्षेत्र के पंचायत सदस्य श्री विजय भट्‌ट से अपनी समस्या के बारे में बात की। तब क्षेत्र पंचायत सदस्य ने कहा, ''यह समस्या तो है। गाय, बछिया रोज जंगल में जाती हैं, उन्हें जंगल लाने–ले जाने में काफी परेशानी होती है।'' उन्होंने महिलाओं को बताया कि रास्ता बनाने के काम को अगले महीने से शुरू कर देंगे।

जंगल का रास्ता बनाया गया। सभी ग्रामवासियों को रास्ता बनाने में काम मिला। रास्ता भी बन गया। महिलाओं की समस्या का समाधान हुआ। क्षेत्र पंचायत सदस्य ने बताया कि पहले महिलाओं की समस्या हल होगी। जो बहुत जरूरी कार्य होगा, उसे जल्दी–जल्दी पूरा करने की कोशिश करेंगे। उन्होंने महिला संगठन

की सदस्याओं को बैठकों में जाने और अपनी मुख्य समस्याओं को समाज के सामने रखने के लिए धन्यवाद दिया। अन्य पंचायत अधिकारी भी महिलाओं से कहते हैं, "आपका संगठन काफी सक्रिय है। ऐसे ही आगे बढ़ते रहना। अपने गाँव में तरक्की करना। पंचायतों में आगे आना।"

महिलाओं ने अपना जंगल भी बचाया है। जंगल से कच्ची लकड़ी बिल्कुल नहीं काटी जाती है। जब किसी को लकड़ी की जरुरत होती है तो वह सरपंच से कह कर पेड़ ले लेती है। गाँव का जंगल काफी बड़ा है और अच्छा भी। गाँववासी अपने जंगल की देख–रेख ऐसे करते हैं मानो अपने बच्चों की देखभाल कर रहे हों। तभी जंगल हरा–भरा रहता है।

कुछ समय पहले गाँव में पानी की काफी समस्या थी। गर्मियो में महिलायें नौलों को बन्द कर देती थीं। दो–दो बर्तन पानी सभी को सुबह–शाम मिल जाता था। अब तो पाइप लाइन भी आ गयी है। पाइप लाइन के लिये महिला संगठन ने ही आवाज उठाई। साथ ही, नौले के ऊपर बाँज के पेड़ लगाये। अब नौला गर्मियों में भी नहीं सूखता है। गर्मियों में पानी थोड़ा कम हो जाता है। दन्या से आकर लोग इस नौले से पानी ले जाते हैं। गर्मियों में दन्या के निवासी मुनौली गाँव को आशीर्वाद देते हैं। पहले से गाँववासी आपस में ही पानी के लिए झगड़ते थे लेकिन अब संगठन के माध्यम से बहुत आगे बढ़े हैं। उन्होंने अपने जंगल का कटान रोका है। नौलों के ऊपर पेड़–पौधे लगाकर खुशहाल जिन्दगी जी रहे हैं।

शौचालय निर्माण

राजेन्द्र सिंह बिष्ट

इस वर्ष शैक्षणिक ग्रामोन्नति समिति, गणाई गंगोली द्वारा उत्तराखण्ड सेवा निधि, अल्मोड़ा के सहयोग से अपने कार्य–क्षेत्र में पन्द्रह शौचालयों के निर्माण के लिए गरीब परिवारों की मदद की गयी। शौचालयों के निर्माण में लाभार्थियों का चयन महिला संगठनों द्वारा स्वयं किया जाता है।

शौचालय निर्माण के लिए दी जाने वाली सहयोग राशि बेशक कम है। दी गई राशि से कई गुना अधिक लागत निर्माण कार्य में आती है लेकिन संस्था का यह सहयोग लोगों को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आज गाँवों में शौचालय एक मुख्य जरुरत के रूप में देखा जाने लगा है। कुछ वर्ष पूर्व तक लोग भारी–भरकम धनराशि मकान बनाने में खर्च करते थे लेकिन उसके साथ शौचालय निर्माण करना फिजूल–खर्ची मानते थे। आज लोगों की समझ व रहन–सहन में बदलाव आया है। शौचालय निर्माण से जहाँ लोगों को सुविधा हो रही है, वहीं गाँवों में सफाई की व्यवस्था बढ़ी है।

संस्था द्वारा शौचालय निर्माण उन्हीं गाँवों में किये गये, जहाँ महिला संगठन बने हैं। यह कार्यक्रम महिलाओं को स्वयं का कार्यक्रम लगता है। इसलिए, परिवारों के चयन, निर्माण–कार्य की देखरेख एवं शौचालयों का सुचारू उपयोग सुनिश्चित करने जैसे मुद्दों पर महिला संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। शौचालय निर्माण के दौरान ज्यादातार कार्य स्वयं महिलायें ही करती हैं। साथ ही, एक–दूसरे को सहयोग भी करती हैं।

इस वर्ष संस्था द्वारा रुँगड़ी, नैकाना व भन्याड़ी गाँवों में शौचालय–निर्माण करवाये गये। महिला संगठनों ने तय किया है कि गाँव में प्रत्येक परिवार के पास अपना निजी शौचालय हो। इसके लिए प्रति वर्ष संगठनों की बैठकों में महिलाओं द्वारा कुछ लाभार्थियों का चयन किया जाता है। गरीब परिवार, एकल, विधवा

और परित्यक्ता महिलाओं को प्रमुखता देकर महिला संगठन लाभार्थी का चयन करते हैं। अधिकांशतः शौचालय उन महिलाओं को दिये जाते हैं जो संगठन की गतिविधियों में शामिल रहती हैं। कार्य समय पर पूरा हो, इसके लिए ग्राम संगठन व संस्था निरंतर मार्गदर्शन करते हैं।

परिणाम :

- लाभार्थी का चयन खुली बैठक में किया जाता है। चयन का आधार महिलायें खुद तय करती हैं। सीमित लाभार्थियों के चयन में महिला संगठनों की निर्णय–क्षमता उभर कर आती है।
- ज्यादा लागत आने पर भी सभी शौचालय पक्के बनाये गये हैं।
- महिला संगठन उन लाभार्थियों का चयन नहीं करते, जो संगठन को नुकसान पहुँचाते हैं।
- घर में ही शौचालय होने से बच्चों, महिलाओं एवं बुजुर्गों को बहुत सुविधा रहती है। खासकर, महिलायें एवं किशोरियाँ शौचालय की सुविधा को बहुत महत्व देती हैं।

महिला शक्ति

सत्येन्द्र रावत

जनपद चमोली के सुदूरवर्ती क्षेत्र, बीहड़ पथरीले रास्तों और ऊँची–ऊँची चोटियों के मध्य में बसे कुजौं–मैकोट, नैणी, डुंग्री, कौज, खण्डरा, वैलीधार, काणा, बौला, छिनका गाँवों में महिला संगठन आत्मविश्वास, एकता और हिम्मत के बलबूते पर मजबूत बने हुए हैं। विभिन्न रचनात्मक कार्यों, गोष्ठियों, जनजागरुकता शिविरों में प्रतिभाग करने से महिलाओं की पहचान बनी है और उनकी निर्णय लेने की क्षमता में इजाफा हुआ है। संस्था के अथक प्रयासों से आज संगठन लगातार आगे बढ़ रहे हैं। संगठन की शक्ति और सामूहिक निर्णय से ही गाँव के जंगल, जलस्रोतों का संरक्षण, स्वच्छ शौचालयों का निर्माण, मनरेगा योजना में भागीदारी जैसे कार्यो में महिलायें बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रही हैं। क्षेत्रीय सम्मेलनों का प्रतिफल है कि संगठन के पदाधिकारियों को अपने अनुभवों एवं विचारों के आदान–प्रदान के सुअवसर मिले हैं।

गाँव–गाँव में महिला संगठन बन जाने से सुदुरवर्ती क्षेत्रों में रह रही महिलाओं में काफी जागरुकता आई है। महिलायें गाँव की मूलभूत समस्याओं के निराकरण के लिए लगातार शासन–प्रशासन का ध्यान अपने क्षेत्र की ओर खींच रही हैं और माँगों का समाधान होने तक पैरवी कर रही हैं। स्त्रियों की एकजुटता, आत्मविश्वास एवं नेतृत्व क्षमता को देखकर विभागीय अधिकारी भी सहयोग करते हुए विकास के कार्यो को आगे बढ़ा रहे हैं।

महिला सम्मेलन : ऊखीमठ (जिला रूद्रप्रयाग)

इस क्षेत्र की एकता को

देखकर अन्य गाँवों में भी महिलाओं ने संगठनों की शुरूआत की। संगठन के माध्यम से महिलाओं को घर से बाहर निकलकर दूसरे जिलों में जाने और देखने–सुनने का सुअवसर मिला है। आज महिलायें लगातार माँग कर रही हैं कि उन्हें भी संगठनों के कार्यों को देखने के लिए अन्य गाँवों में भ्रमण करवाया जाये।

महिला संगठनों ने नशे के प्रचलन से बर्बाद हो रही युवा एवं वयस्क पीढ़ी को बचाने के लिए गाँव–गाँव में शादी–ब्याह, मुंडन, नामकरण आदि कार्यों में शराब के सेवन पर पूर्णतया रोक लगाने और इस नियम को न मानने पर जुर्माने का प्रावधान रखा है। महिलाओं का मानना है कि पैसे को पौष्टिक खानपान के सेवन पर खर्च किया जाना चाहिए। साथ ही, ऐसे व्यक्तियों को भी चिह्नित किया गया है जो शराब पीकर गाँव का वातावरण बोझिल बनाते हैं। संपूर्ण क्षेत्र में शराब के अवैध कारोबार को बन्द करने के लिए प्रशासन को माँग पत्र सौंपे गए हैं। जिला प्रशासन ने बढ़ते शराब के प्रचलन की रोकथाम व सामाजिक बहिष्कार के निर्णय का स्वागत कर पूर्णतया सहयोग का आश्वासन दिया है। जनजागरुकता के कार्यों में युवा संगठन भी बढ़–चढ़ कर भागीदारी करते हैं और एकजुटता का परिचय देते हैं।

एक वृक्ष की दास्तां

विनीता भट्ट

मैं एक पेड़ हूँ। मेरी कहानी बड़ी करुण है। मैं दिन–रात एक जगह पर खड़ा होकर आते–जाते लोगों को देखता रहता हूँ। पहले मेरा परिवार बहुत लंबा–चौड़ा था। अब परिवार के सदस्यों की संख्या काफी कम हो गयी है। मैं अपनी उम्र के लोगों में अकेला रह गया हूँ। वृद्धावस्था का यह अकेलापन मुझे काटने को दौड़ता है। अब तो अपने से छोटे पेड़ों की हँसी–मजाक और शरारतें सहने की हिम्मत भी नहीं रही। पहले मेरे परिवार में लगभग सौ सदस्य थे। अब मात्र बीस–पच्चीस रह गए हैं। ये वही सदस्य हैं, जिनके साथ मेरा रोज का उठना–बैठना था। सुबह की शुरूआत ही सबकी कुशलक्षेम पूछने से होती थी। अब तो बस उनके कटे शव देख कर रोना आता है। मुझे तो मानव की उस बुद्धि पर दुख होता है, जो स्वार्थ में अंधा हो कर क्षणिक लाभ के लिए अपना भविष्य बर्बाद कर रही है। खैर! मैं मजबूर हूँ क्योंकि ईश्वर ने अपनी आत्मरक्षा हेतु हम पेड़ों को कुछ दिया नहीं, बस नियति ही हमारे साथ है।

मेरी पहचान यह है कि मैं देवभूमि उत्तराखण्ड की पर्वतीय शृंखलाओं के अंचल में जन्मा देवदार का वृक्ष हूँ। जिस जगह पर खड़ा हूँ, वहाँ से जहाँ तक मेरी दृष्टि जाती है, वही मेरा परिवार है। पहले वन का यह क्षेत्र पेड़ों से ढ़का हुआ था। दिन–दोपहर में भी लोगों को वन के बीच से आने–जाने में डर लगता था। चारों तरफ घने–घने वृक्ष और उनके बीच जंगली जानवरों का बसेरा, इस पूरे क्षेत्र को एक अजीब रहस्य से ढ़क देता था।

वृक्षों की अंधाधुंध कटाई के कारण अब जंगल का अस्तित्व खत्म होने लगा है। कभी व्यापारी अपने आर्थिक लाभ के लिए हमारा दोहन करते हैं तो कभी लोग जलाने के लिए लकड़ियाँ काटते हैं। मुझ जैसे उम्रदार पेड़ों की लकड़ियों से तख्ते बनाये जाते हैं। छोटे–छोटे वृक्षों की टहनियों को भोजन बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। धीरे–धीरे हम पेड़ों की संख्या कम होती जा रही है। हर रात के बाद अगली सुबह यही चिंता रहती है कि न जाने किस पेड़ पर मानव–रूपी तलवार चलेगी और उसका

जीवन–चक्र समाप्त हो जाएगा।

खैर, मैं तो अब बूढ़ा हो चला हूँ। मुझे मालुम है कि जल्दी ही इस वन से विदा लेने का समय आ जाएगा परन्तु अपने से छोटे पेड़ों के भविष्य को लेकर चिंतित हूँ। आज मैं समुचित मानवजाति से हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि, "हे मनुष्य! क्षणिक स्वार्थ के लिए अपना भविष्य बर्बाद न करो। यूँ वनों को न उजाड़ो। इसी कारण से भूस्खलन तथा भू–क्षरण हो रहा है। पहाड़ों में चारों तरफ फैली हरियाली क्षीण हो रही है। हजारों प्रकार की बीमारियाँ इन पहाड़ों में घर कर गयी हैं। अनेक प्रकार की जड़ी–बूटियाँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। किसी के घर को उजाड़ कर तुम कैसे खुश रह पाओगे?वृक्षों की अंधाधुध कटाई और वनों के विनाश को रोको, कहीं देर न हो जाए। बाद में पछताने से अच्छा है, समय रहते सँभल जाओ। वृक्षों को बचाओ, तभी सबका कल्याण होगा।"

पाटी क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति

हेम चन्द्र गहतोड़ी

पाटी क्षेत्र जिला मुख्यालय, चम्पावत, से पचास किमी की दूरी पर स्थित है। इस विकास खण्ड में उन्यासी ग्राम पंचायतें तथा पाँच न्याय पंचायतें हैं। पाटी की आबादी लगभग पचहत्तर हजार है। यह क्षेत्र लोहाघाट के दक्षिण–पश्चिम में उत्तरी ढाल पर बसा हुआ है। ऊँचे स्थानों पर बर्फ गिरती है तथा निचले स्थानों पर अत्यधिक गर्मी रहती है।

इस विकास खण्ड में छः इंटर कालेज, पाँच हाईस्कूल, बारह जूनियर विद्यालय तथा प्रत्येक ग्राम पंचायत में प्राथमिक विद्यालय हैं। पाटी विकास खण्ड में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा न्याय पंचायतों में स्वास्थ्य उपकेन्द्र हैं। विकास की दृष्टि से यह क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ है। इस विकास खण्ड में पाँच प्रतिशत लोग सरकारी नौकरी में हैं तथा लगभग बीस प्रतिशत लोग व्यवसाय करते हैं, शेष अन्य कृषि का कार्य करते हैं। पहले यहाँ के सभी निवासी कृषि का कार्य करते थे लेकिन कुछ वर्षों से समय पर वर्षा न होने, जलवायु परिवर्तन, पानी की कमी तथा जंगली एवं आवारा पशुओं के आतंक से कृषि पर सीधा असर पड़ने के कारण पलायन बढ़ रहा है।

इस क्षेत्र की मुख्य फसलें गेहूँ, धान, मडुवा, मक्का, सोयाबीन, गहत, उड़द आदि हैं। बागवानी में नींबू, माल्टा, संतरा, आड़ू, खुबानी, नाशपाती, प्लम और सेब के वृक्ष मुख्य हैं। चारा प्रजाति में बाँज, भीमल, तिमिल एवं इमारती लकड़ी के लिए उतीस, चीड़, देवदार आदि वृक्ष बहुतायत से होते हैं। पशुपालन के तहत गाय, बैल, भैंस, बकरी एवं मुर्गी मुख्य हैं।

इस क्षेत्र में पन्द्रह प्रतिशत सिचिंत कृषि–भूमि तथा लगभग पच्चीस प्रतिशत असिंचित जमीन है। शेष भूमि वन फॉरेस्ट एवं सिविल वन पंचायत आदि वन है। पाटी क्षेत्र में चीड़ के पेड़ों की बहुतायत है।

संगठनों के साथ कार्य

महेन्द्र सिंह रावत

मैंने अप्रैल 2006 में नवज्योति महिला कल्याण संस्थान, गोपेश्वर के साथ जुड़कर महिला संगठनों का कार्य शुरू किया। शुरू में संगठनों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। मैंने ग्वाड़, कोटेश्वर, खल्ला, बड्द्वारा काण्डई, दोगड़ी, टंगसा, टेडा, रोपा तथा बैल गाँवों में कार्य किया। शुरूआती दौर में महिलाओं की समस्याएँ सुनकर मन में एक अजीब सी हलचल हो जाती थी। महिलायें अपने कार्य–बोझ से दबी रहती थीं। उन्हें बाहरी दुनिया का पता ही नहीं था। वे कष्टमय जीवन बिताती थीं लेकिन उनकी समस्याएँ सुनने वाला कोई नहीं था। मैं बार–बार संगठनों की गोष्ठी में गया और महिलाओं से बातें करता रहा। धीरे–धीरे संगठनों का स्वरूप तथा महिलाओं की समस्याएँ मेरी समझ में आने लगी। जो भी जानकारियाँ इधर–इधर से मिल पातीं, उन्हें संगठनों की सदस्याओं को देता रहता। संगठनों से जो भी समस्यायें निकल कर सामने आतीं, हम सभी मिलकर विचार–विमर्श करते और उनका हल ढूँढ़ते।

पता ही नहीं चला कि कब संस्था तथा महिला संगठनों के साथ काम करते हुए पाँच वर्ष बीत गये। इस दौरान अनेक अच्छे–बुरे तथा खट्टे–मीठे अनुभवों से दो–चार होना पड़ा। महिलाओं के साथ संगठनों की मजबूती एवं विकास के मुद्दों पर बहुत गहराई से चर्चा होती थी। आज संगठन की महिलायें पंचायत प्रतिनिधि हैं तथा अपनी बात कहने में किसी प्रकार की झिझक महसूस नहीं करती हैं। इन पांच वर्षों में महिलाओं ने संगठनों को बहुत मजबूत बनाया है। साथ ही व्यक्तिगत एंव सामुहिक रूप से निर्णय लेने की क्षमता में बढ़ोत्तरी की है।

वन संरक्षण और संवर्धन

पुष्पा पुनेठा

आटी गाँव में महिला संगठन सक्रिय रूप से कार्य करता है। हर माह संगठन की गोष्ठी होती है। गोष्ठी में गाँव की समस्याओं को लेकर चर्चा होती है। पिछले दो–तीन सालों से महिलाओं को जंगल के संरक्षण संबंधी समस्या हो रही थी। आटी गाँववासियों का जंगल पर अपना हक है पर कुछ अन्य लोग जंगल से कच्ची लकड़ी काट कर ले जाते हैं। जंगल में गाय, बकरियाँ छोड़ देते हैं। इससे बाँज के पेड़ों को नुकसान पहुँचता है। जंगल को क्षत–विक्षत देखकर महिलाओं को काफी दुःख होता है। उन्होंने जंगल को बचाने का बहुत प्रयास किया लेकिन लोग चोरी–छिपे आते और लकड़ियाँ, हरे पत्ते काट कर ले जाते।

माह अप्रैल 2011 की संगठन की मासिक गोष्ठी में महिलाओं ने जंगल की समस्या पर चर्चा की। उसके बाद, सभी महिलाओं ने अपने–अपने घर जाकर पुरुषों से भी बातचीत की और कहा "अगर जंगल के प्रति ध्यान नहीं देंगे तो आने वाले पाँच–दस सालों में पूरा जंगल नष्ट हो जाएगा।" पुरुषों ने भी सोचा कि महिलायें ठीक कह रही हैं। गाँव में सभी लोगों ने साथ मिलकर पुनः एक गोष्ठी की। दन्या, आटी, रूवाल, बागपाली, बेलक, पुनौली, नैकाना आदि गाँवों के लोगों को भी सूचना दी गई। गोष्ठी में सभी ग्रामवासियों ने जंगल को देवता को समर्पित कर देने की बात पर सहमति जतायी। इस तरह, आटी का जंगल अब पांच साल के लिये भण्डारी गोलू देवता को चढ़ा दिया है। जो भी जंगल में जायेगा, संगठन की सदस्याएं उससे जुर्माना लेंगी। देवताओं से तो सभी को भय है इसलिये कुछ समय बीत जाने पर भी जंगल में

कोई लकड़ी काटने नहीं जा रहा है।

यह प्रयास महिलाओं, पुरुषों, ग्राम–प्रधान व गाँव के सरपंचजी का है। संगठन की महिलाओं को देखकर काफली गाँव के ग्राम–प्रधान व अन्य पुरुषों से भी संस्था कार्यकत्ताओं ने कहा कि वे अपना जंगल देवता को चढ़ा दें। तभी यह जंगल कटान रूकेगा। जैसे आटी गाँव के लोगों ने जंगल बचाया, अन्य गाँव भी उसी तरह जंगल बचा सकते हैं।

ग्राम टेड़ा खनसाल (जिला चमोली)

जब महिलाओं ने यह कार्य किया तो उन्हें पुरुषों एवं नवयुवकों का भी सहयोग मिला। महिलायें काफी खुश हैं। संगठन की कोषाध्यक्षा ने बताया, ''जब संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने गाँव में महिला संगठन बनाया, तब हमें गाँव की गोष्ठी में नई–नई जानकारियाँ दी। संस्था की गोष्ठी में बुलाया तथा उत्तराखण्ड महिला परिषद् की गोष्ठी में अल्मोड़ा भी गये। हमें नई–नई जानकारियाँ व नये–नये अनुभव सुनने को मिले, जिससे हमारे मन में भी जंगल बचाने का विचार आया। अब पाँच साल के लिये जंगल बंद कर दिया है।'' संगठन की सदस्याएँ जंगल की देखभाल करती हैं। महिलायें मानती हैं कि जब हमारा जंगल बचेगा, तभी ठंडी हवा, पानी, ईंधन मिलेगा। गायों के लिये चारा मिलेगा। गाँव में आजकल खुशहाली का माहौल है। चौकीदार की व्यवस्था नहीं है, जंगल की सुरक्षा सबकी जिम्मेदारी है। गाँव में हर कोई जंगल की निगरानी करता है। संगठन की महिलाओं में एक आत्मविश्वास है, उनकी हिम्मत बढ़ी है। उन्होंने जंगल बचाने का एक अनूठा प्रयास किया है।

मेरे काम

कमला जोशी

मेरा नाम कमला जोशी है। मैं दन्या क्षेत्र में कार्य कर रही संस्था उत्तराखण्ड शिवा शक्ति समिति (उष्मा), चलमोड़ीगाड़ा में किशोरी संगठन की कार्यकर्त्ता हूँ। मैंने सन् 1991 में बालवाड़ी का काम शुरू किया। शुरुआती दिनों में गाँव जाने में झिझक होती थी। मैं सोचती थी कि लोगों से कैसे बोलूँगी? धीरे–धीरे मुझमें काफी परिवर्तन आया है। लोगों से बोलने में झिझक दूर हुई है। बालवाड़ी के माध्यम से मुझे बोलने का मौका मिला। साथ ही, संस्थाओं के अनेक लोगों से मिलीं व उनकी बातों को सुनने का मौका मिला। बालवाड़ी में बच्चों के साथ काम करने और उनकी बातें सुनने का मौका मिला। बच्चों के साथ काम करते हुए खुद मेरा भी विकास हुआ।

बालवाड़ी के माध्यम से बच्चों को आगे बढ़ाने का मौका मिला। बच्चों की शिक्षा बढ़ी। प्राइमरी में कक्षा दो व तीन में उन्हें प्रवेश करवाया गया। शुरुआत में दन्या व मुनौली गाँव में बालवाड़ी चलायी। शिक्षिका के व्यवहार से लोगों में जुड़ाव हुआ। फिर मैंने डसीली गाँव में बालवाड़ी चलायी। हर रोज छः किमी आना–जाना

होता लेकिन मुझे बालवाड़ी में बहुत अच्छा लगता था। ग्रामवासी भी मुझे देखकर बहुत खुश रहते थे।

गाँव में महिलाओं से मीटिंग करना सीखा। उन्हें नयी–नयी योजनाओं की जानकारी दी। संगठन ने शराबबन्दी आन्दोलन में सहयोग किया। आन्दोलन में ग्राम–प्रधान, महिलाओं, युवकों, पुरूषों ने मिलकर काम किया। संस्था के लोग जब भी बालवाड़ी देखने आते तो काफी खुश रहते। अब मुझे बालवाड़ी में काम करने में कोई परेशानी नहीं होती है। गाँव में जाकर मींटिग भी करती हूँ। मैं महिलाओं को अपनी व बच्चों की साफ–सफाई के बारे में बताती हूँ। हम सभी मिलजुलकर कार्य करती हैं। ग्रामवासी बालवाड़ी को एक सुरक्षित स्थान समझते हैं। एक साल के बच्चों को भी बालवाड़ी में पहुँचा जाते हैं व शिक्षिका का विश्वास मानते हैं। मैं समझती हूँ कि बालवाड़ी ही बच्चों का प्रेम व सुरक्षा का स्थान है। उत्तराखण्ड सेवा निधि, अल्मोड़ा में प्रशिक्षण के द्वारा हम अपने काम का दोहराव करते हैं। साथ ही, इससे काम में नयापन आता है। मैं बालवाड़ी के काम के साथ–साथ संस्था के कामों में भी हाथ बँटाती हूँ।

मैंने सन् 2012 के मई माह में किशोरी संगठन का काम शरू किया। मुझे बारह से बीस साल की लड़कियों के साथ काम करना है। मुझे ग्यारह गाँव दिये गये है। मैंने इन सभी ग्यारह गाँवों की सर्वे करने के बाद मीटिंग भी कर ली है। गाँव में जाकर किशोरियों से मिलने का अनुभव मिला है। जब पांच दिवसीय किशोरी कार्यशाला संस्था में लगी तो उसमें भी मुझे कई सारे अनुभव सुनने को मिले। एक दिन, राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज (दन्या) में कार्यशाला लगी, उसमें हम संस्था कार्यकत्ताओं ने कक्षा नौ व दस में पढ़ रही किशोरियों से बातचीत की। किशोरियों के साथ "जीवन–कौशल शिक्षा" के बारे में चर्चा हुई। इन कार्यशालाओं में किशोरियों ने काफी रूचि ली। विद्यालयों के अध्यापक–अध्यापिकाओं एवं प्रधानाध्यापिकाओं ने भी हमें बहुत सहयोग दिया।

मैं रुवाल, मुनौली, जोग्यूडा (खूना), फल्याट, थली, कुलौरी, गौली, दन्या, डसीली, कोट्यूड़ा गाँवों में जाकर किशोरियों से सम्पर्क कर रही हूँ। किशोरियों को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रही हूँ। उनकी शिक्षा पर भी ध्यान दे रही हूँ। किशोरियाँ अब आगे बढ़ रही हैं। उनकी पढ़ाई का स्तर भी अच्छा हो रहा है। किशोरियाँ घर से बाहर निकल रही हैं। अपनी समस्याओं के बारे में संस्था कार्यकर्त्ताओं से कहकर समाधान निकाल रही हैं। अब मुझे गाँवो का ज्यादा अनुभव हो रहा है। मैं जितना काम गाँवों में करती हूँ, उतना स्पष्ट नहीं लिख पाती हूँ। मुझे गाँवों में महिलाओं और किशोरियों के साथ काम करना अच्छा लगता है। किशोरियाँ आगे बढ़ें, उनकी पढ़ाई भी आगे बढ़ते रहे ताकि वह अपने पाँवों में खड़े होकर कुछ नया काम कर सकें, यही मेरी इच्छा है। गाँव में अकेले जाकर भी किशोरियों के साथ मीटिंग कर लेती हूँ और उन्हें जागरूक करती हूँ। मेरी इच्छा है कि हम सभी मिल–जुलकर काम करें। काम अच्छा चले और मेरी संस्था का नाम ऊँचा रहे।

किशोरी संगठन सिद्धि

हंसी जोशी

सिद्धि गाँव में किशोरी संगठन बनाने के लिए सर्वे की तो ग्रामवासियों ने सर्वे का मकसद पूछा। हम संस्था कार्यकत्ताओं ने उन्हें समझाया कि किशोरियों की समझ बनाने, उनकी शिक्षा का स्तर बढ़ाने और गाँव की जानकारी लेने के लिए सर्वे कर रहे हैं। कुछ लोग पूछने लगे कि इससे उन्हें क्या मिलेगा। हमने गोष्ठी का आयोजन किया। गोष्ठी में किशोरियों व ग्रामवासियों ने भाग लिया। हमने ग्रामवासियों से किशोरियों का

जीवन–कौशल बढ़ाने के बारे में चर्चा की और किशोरी संगठन भी बनाया। शुरुआत में कभी दो तो कभी चार किशोरियाँ गोष्ठी के लिए आने लगीं। हमने उन्हें शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के बारे में समझाया और लड़का–लड़की के भेद के बारे में भी बताया। खान–पान के महत्व पर चर्चा की। इससे उनके जीवन पर अच्छा प्रभाव हुआ। धीरे–धीरे अन्य किशोरियाँ भी संगठन से जुड़ गयीं। गाँव में किशोरियों की शिक्षा को कम महत्व दिया जाता है। बाल–विवाह भी होते हैं। किशोरियों के गोष्ठियों में आने से शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है। बाल–विवाह की प्रथा में भी परिवर्तन होने लगा है। अब लोग शिक्षा के महत्व को समझते हैं।

गाँव फलना

दया उप्रेती

सर्वप्रथम हम संस्था के कार्यकर्त्ता बालवाड़ी खोलने हेतु गाँव में गये। गाँव में गोष्ठी का आयोजन किया। सबसे पहले चेतना गीत गाये। गीत की आवाज से समस्त ग्रामवासी इकट्ठा हो गये। ग्रामवासियों के साथ बालवाड़ी खोलने हेतु चर्चा की लेकिन विवाद हो जाने की वजह से गोष्ठी नहीं हो पायी।

दो साल बाद हम लोग फिर से उसी गाँव में गये। ग्रामवासियों से सम्पर्क किया। श्रीमती जानकी आर्या को अल्मोड़ा महिला संगठन की गोष्ठी में ले गये। फिर वापस आकर हमने गाँव में गोष्ठी का आयोजन किया। समस्त महिलायें एवं कुछ पुरुष भी आये। हमने अल्मोड़ा में हुई गोष्ठी का अनुभव बताया। गाँव में महिलाओं की दिनचर्या को प्रभावित करने वाले अनेक मुद्दों पर चर्चा की। सब लोगों ने इस बात पर विचार–विमर्श किया कि महिला संगठन किस तरह बनाया जाये। धीरे–धीरे महिला संगठन बनाया। उसके बाद बालवाड़ी खोली। बालवाड़ी की देखरेख की जिम्मेदारी गाँव को दी। महिला संगठन ने यह काम बखूबी सँभाला।

हर माह यहाँ पर महिला संगठन की गोष्ठी का आयोजन किया जाता है। बाद में महिलाओं ने शराब के खिलाफ भी आन्दोलन किया। इस आन्दोलन में गाँव के जागरूक पुरूषों और युवकों ने सहयोग दिया। जब महिलाओं ने होली का आयोजन किया तो कुछ लोगों ने इसका विरोध किया। महिलायें काफी संघर्ष से अपने अधिकारों के लिए आगे आयी थीं। उन्होंनें खूब जम कर संघर्ष को आगे बढ़ाया और अपने हक के लिए आवाज उठाई। महिलाओं ने सामाजिक बुराइयों का विरोध तो किया ही, सामाजिक शिक्षण का कार्य भी किया। जब कहीं खुली बैठकों में गयीं, अपनी बातें कहने लगीं। अपनी माँगों को समाज के आगे रखा।

महिला साक्षरता एवं शिक्षण केन्द्र : रामपुर, दन्या (जिला अल्मोड़ा)

फलना गाँव में किशोरी संगठन बनाया गया है। पहले किशोरियाँ घर से बाहर निकलने को

तैयार नहीं हुई। महिलाओं ने उन्हें सहयोग दिया और बताया कि गाँव में निरन्तर गोष्ठी का आयोजन करते रहें। आज महिलायें व किशोरियाँ मिलकर अनेक वाद–विवादों का निपटारा स्वयं कर गाँव में ही समझौता कर लेती हैं। जो मामला पहले कभी कोर्ट–कचहरी जाने का बन जाता था, वह गोष्ठी के माध्यम से गाँव में ही सुलझा लिया जाता है। अब महिलायें बाल–विवाह का विरोध करते हुए किशोरियों की शिक्षा के स्तर को बढ़ा रही हैं। साथ ही, महिलायें विद्यालयों में देख–रेख करने जाती हैं। संगठन ने अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ भी उठाया है।

अगर होगा जानकारी का अभाव
ग्रामवासियों को होगा तनाव।।
अपने अधिकारों के प्रति आगे आओ
भ्रष्टाचार को दूर भगाओ।।
नेताओं की यही है कहानी
हाय! क्या करें हम?
गाँव–गाँव में हो गयी है
हाय पानी! हाय पानी।।

दैवीय आपदा से नुकसान

पुष्पा पुनेठा

ग्राम–सभा दन्या में अठारह अगस्त 2011 को भारी वर्षा के कारण काफी नुकसान हुआ। पन्द्रह अगस्त से तीन दिन तक लगातार वर्षा हो रही थी। लोगों के घरों में पानी भर गया था। आँगन की दीवारें टूट गई थीं। गाँव के रास्ते, खेतों की दीवारें भी टूट गई थीं। गाँव की जमीन धँसने से पेड़–पौधे नष्ट हो गये थे। गाँव का पंचायत घर भी टूट गया। वहाँ पर संस्था के माध्यम से बालवाड़ी चलती थी। वर्षा के भय से लोग अपने घर छोड़कर बाजार की तरफ मकान लेकर रहने लगे। इस बीच ग्राम–प्रहरी के साथ पटवारी जी गाँव में आये। उन्होंने घर–घर जाकर पूरे गाँव की स्थिति को देखा। ग्राम–सभा दन्या के सांगड़ तोक में एक व्यक्ति का मकान टूट गया था। उसे प्राथमिक पाठशाला में रहने की सलाह दी तथा राशन भी दिया। दन्या तोक में भी काफी मकानों में दरारें आ गई थीं। कई लोगों ने मकान खाली किये। पटवारी व ग्राम–प्रधान से दीवार लगवाने के बारे में भी बात की।

जनवरी 2012 में ग्रासमभा द्वारा गाँव के रास्तों की दीवारें बनाई गईं। इसी बीच, गाँव की पाइप लाइन भी ठीक करवाई, जिससे पूरे गाँव के लोगों को पीने की पानी की सुविधा हुई। इस बीच, गाँव में विधायक या कोई भी सरकारी कर्मचारी नहीं आये। गाँव के लोग ही अपनी समस्या लेकर आते–जाते रहे। इक्कीस अप्रैल 2012 को उत्तराखण्ड सेवा निधि में एक गोष्ठी हुई, जिसमें नरेगा के तहत गाँव में चल रहे कार्यों की समीक्षा की गई। उसमें दिल्ली व देहरादून से कुछ अधिकारी आये थे। दन्या क्षेत्र की कुछ महिलायें भी इस गोष्ठी में गई थीं। उन्होंने अपने क्षेत्र की बातें सरकारी अधिकारियों को बताई। उस गोष्ठी में अधिकारियों ने महिलाओं को आश्वासन दिया कि वे उनके गाँव आयेंगे तथा दैवीय आपदा से हुए नुकसान को देखेंगे। फिर उस पर

कार्य करने का विचार बनेगा।

क्षेत्र में संस्था के माध्यम से बालवाड़ी, महिला संगठन, साक्षरता केन्द्र का काम चलता है। पानी की टंकी बनी है। कुछ शौचालय भी बने हैं। क्षेत्र में समय–समय पर गोष्ठी होती है। महिलाओं को उनके अधिकारों की जानकारी दी जाती है ताकि वे अपनी बातें समाज में कह सकें और अपना हक ले सकें।

चार संगठन हुए एक मन

स्नेहदीप रावत

कहते हैं कि चारों उंगलियाँ और एक अंगूठा साथ बन्द होते हैं तो मुठ्ठी बनती है, जो किसी को भी जबाव देने में सक्षम होती है। ऐसी ही एक घटना हुई नयारघाटी क्षेत्र के औलाकोट वल्ला गाँव में। बात इन्हीं गर्मियों के मौसम की है। नयारघाटी की ऊँची पहाड़ियों में माह अप्रैल से ही पानी कम होने लगता है। मई के महीने में तो बहुत कम पानी मिलता है। चूँकि वल्ला और पल्ला औलाकोट पाइप लाइन के आखिरी गाँव हैं, इसलिये यहाँ गर्मियों में बहुत ही कम पानी पहुँचता है।

एक दिन औलाकोट वल्ला गाँव की महिलाओं ने कुछ उड़ती हुई सी खबर सुनी कि अब इस पाइप लाइन का काम जल संस्थान काँसखेत की बजाय किसी अन्य परियोजना के हाथों से होगा। साथ ही, इसका नये सिरे से निर्माण होगा। सुविधायें तो बढ़ेंगी लेकिन इसमें ₹ 225 प्रति परिवार का कर देना होगा, जबकि जल संस्थान इसी कार्य को कई वर्षों से सुचारू रूप से चला रहा है।

महिलाओं की आपस में गोष्ठी हुई। गोष्ठी में औलाकोट गाँव में पानी की व्यवस्था पर भी चर्चा होने लगी। महिलाओं ने निर्णय लिया कि इतने वर्षों से बुजुर्गों की देखरेख में बनायी गयी यह पाइप लाइन सभी को बराबर मात्रा में पानी दे सकने में सक्षम होना चाहिए। बुजुर्गों को मालूम था कि इस पाइप को कितनी ऊँचाई से लाकर कितना ढलान देना है, तब कहीं जाकर यह पानी तीव्रता के साथ आता है। लगभग छः किमी दूर जिस स्रोत से पानी आता है, उस स्रोत की क्षमता इससे अधिक पानी देने की नहीं है। नयी परियोजना अतिरिक्त पानी तो पैदा नहीं कर सकती। बुजुर्गों के विज्ञान की उपेक्षा कर सीधी व संक्षिप्त लाइन से योजनाकार पानी लाना चाहते हैं, इस छेड़छाड़ में पानी तो खो ही जायेगा, हानि भी हो सकती है।

ग्राम उसाड़ा (जिला रूद्रप्रयाग)

वल्ला औलाकोट गाँव से यही बात पल्ला औलाकोट, आमसारी, तलसारी गाँवों तक गयी। तब हर गाँव से दो बुजुर्गों को यह जिम्मेदारी दी गयी कि वे इस बात पर सोच–विचार करें ताकि सभी ग्रामवासियों को निरन्तर पानी का लाभ मिलता रहे। इस परियोजना की देखरेख का पूरा जिम्मा क्षेत्र के नवयुवक डॉ0 श्री सोहन सिंह नेगी को सौंपा गया। इन्हीं की देख–रेख में चारों गाँवों के बुजुर्ग एकत्रित होकर जब जल संस्थान काँसखेत गये और अधिकारियों से बात की तो उन्होंने सुझाव दिया कि यदि गाँववासी इस पेयजल

योजना को जलसंस्थान के अधीन ही रहने देना चाहते हैं तो जल संस्थान कॉसखेत, जल संस्थान पौड़ी व परियोजना अधिकारी पौड़ी को निवेदन–पत्र के साथ चारों गाँवों के निवासियों के हस्ताक्षर व ग्राम–प्रधान की मुहर सहित लिखित दे दें। तुरन्त सभी ने एक साथ मिलकर सभी कागजात यथा–स्थान भिजवा दिये ।

अभी मौखिक रूप से यह सुना गया है कि यह योजना जल संस्थान पौड़ी (कॉसखेत) के तत्वाधान में काम करती रहेगी। जो कुछ भी हो लेकिन यह बात स्पष्ट रुप से समझ में आती है कि यदि इस विषय पर महिलायें नहीं सोचतीं तो क्या चारों गाँवों में पानी की समस्या न हो रही होती?

मदद

मीरा देवी

जिला पौड़ी गढ़वाल में एक गाँव है। उस गाँव में चालीस परिवार निवास करते हैं, जिसमें दस परिवार अनुसूचित जाति के हैं। गाँव में कुछ परिवार विवाह–शादी व धार्मिक कामों में ढोल–दमाऊ बजाने का कार्य करता है। उनका एक लड़का एवं बहू व नाती, नातीण गाँव के घर में रहते हैं।

एक दिन लड़के की बहू रोते–रोते गाँव में गई। उसके आने से संगठन की महिलाओं में हलचल मच गई। उसने महिलाओं से कहा कि उसके पति शराब पीकर कई दिनों से उसे पीट रहे हैं और घर से निकाल देने की बात कह रहे हैं, "बताइये में कहाँ जाऊँ? अगले महीने लड़की की शादी भी है," यह कहते हुए वह महिला सिसकने लगी। उसका गला भर्राया हुआ था।

उसी समय गाँव की सभी महिलाओं ने मीटिंग की। संगठन की सदस्याओं ने उस वक्त उसे घर भेज दिया और कहा कि जब उसके पति घर आयें तो वह गाँव में सभी को बता दे। दिन में उसके पति घर आये तो महिला ने अपने लड़के को भेजकर गाँव में बता दिया। गाँव की सभी महिलायें इकट्ठा होकर उसके घर में चली गयीं। वहाँ जाकर उसके पति को बुलाया। जब उसके पति घर से बाहर आये तो महिलाओं ने पूछा कि उन्होंने अपनी पत्नी को इतनी बुरी तरह क्यों मारा है। वे साफ मुकर गये और महिलाओं को ही बुरा–भला कहने लगे। गाँव की एक बुजुर्ग महिला ने पति को पत्नी का चेहरा दिखाया। चेहरे पर चोट के निशान मौजूद थे। पीठ व गर्दन में भी चोट लगी थी। महिलाओं ने उसके बेटे से कागज–पैन मँगवाकर (पति को डराने के लिए) पटवारी को अर्जी लिखनी शुरू की। यह देखकर वह डर गये और संगठन की सभी महिलाओं से माफी माँगने लगे। आगे से ऐसा ना करने का वादा करने लगे। महिलाओं ने एक कागज में लिखवा लिया कि वे आगे से अपनी पत्नी के साथ मारपीट नहीं करेंगे और शराब नहीं पियेंगे।

उस दिन से वह स्त्री जब भी गाँव की अन्य महिलाओं के साथ घास–लकड़ी लेने जंगल में जाती है तो संगठन का धन्यवाद करती है। उसकी लड़की की शादी में संगठन की सभी महिलायें गईं। यह देखकर लड़की के पिता बहुत खुश हुए और संगठन की सभी महिलाओं का स्वागत किया। उन्होंने महिलाओं से कहा कि उनके घर में जो कुछ भी अच्छा हो रहा है, वह महिला संगठन के कारण है।

वीर बाला बीना

जितेन्द्र कुमार

उत्तराखण्ड राज्य में पहाड़ की महिलाओं का संघर्ष अग्रणी रहा है। चाहे तिलाड़ी आन्दोलन हो या चिपको आन्दोलन, शराब बन्दी आन्दोलन हो या उत्तराखण्ड आन्दोलन, महिलायें सबसे आगे रहीं। जनपद चमोली में चिपको आन्दोलन नेत्री गौरा देवी ने विश्व में एक अलग पहचान बनायी।

बारह मई 1999 को विकास खण्ड कर्णप्रयाग के बरतोली गाँव के निवासी राजेन्द्र सिंह बिष्ट की चौदह वर्षीय बेटी ने जंगल में लगी भीषण आग को बुझाते हुए अपने प्राणों की आहुति देकर हम सभी को वनों को आग से बचाने के लिए प्रेरणा का मार्ग दिखाया। पहाड़ की महिलायें एवं बालिकायें नित्य ही घास के लिए जंगलों में जाती। उसी क्रम में रोजमर्रा की तरह बीना अपनी मां नन्दी देवी व सहेलियों के साथ बरतोली के जंगलों में घास लेने गयी थी। सहेलियों के साथ घसेरियों के गीतों से सारा जंगल गूँज रहा था। "बेण्डियोंन काटि रोलियों को घास, सू बेणि ग्येनि राजों का पास" के गीत में महिलाओं की हँसी–मजाक की आवाज घुलमिल कर जंगल को आह्लादपूर्ण बना रही थी।

अचानक बरतोली के जंगल में भीषण आग लग गई। महिलायें (घसेरियाँ) वहाँ से भागने लगीं किन्तु बीना तूंग के पेड़ से पत्तों का झाड़ू बनाकर आग बुझाने में जुट गयी। घसेरियों, सहेलियों और मां नन्दी ने बीना को भागने के लिए कहा किन्तु बीना नहीं मानी। बरतोली के आधे से अधिक जंगल की आग बुझाने के बाद एक टीले में आग की लपटों के आगोश में आ गयी। गाँव की महिलाओं ने घायल अवस्था में उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कर्णप्रयाग में इलाज हेतु भर्ती करवाया किन्तु चिकित्सकों की टीम उसे बचा नहीं पायी। बीना मरते–मरते कह रही थी "माँ–माँ हम घास कख कटिनं ल्याला? हमारू बणु सारू फुकी गै।" यह कहते–कहते इस दुनिया से चल बसी। जंगलों की पीड़ा को महसूस करते हुए उसने अंतिम सांस ली।

कर्णप्रयाग में लोक जागृति विकास संस्था के रंगकर्मियों को जब इस घटना का पता लगा तो वे बरतोली गाँव में पहुँचे और पूरे घटनाक्रम पर एक दस्तावेज तैयार किया। इस दस्तावेज को तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार को भेज दिया गया, जिससे बीना के बलिदान स्थल पर एक शहीद स्मारक बनाया जा सके। फलस्वरूप सन् 2000 में केदारनाथ वन प्रभाग, गोपेश्वर द्वारा बरतोली में स्वर्गीय बीना बिष्ट शहीद स्मारक का निर्माण हुआ। तत्पश्चात्, बीना पर आधारित "बणों की पुकार" सीडी एलबम का निर्माण करने के साथ वर्ष 2003 में लोक जागृति विकास संस्था, कर्णप्रयाग के कलाकारों एवं अन्य साथियों ने बरतोली से नन्दासैंण तक बीना स्मृति–यात्रा की। साथ ही, बीना स्मृति फाउन्डेशन का गठन कर लोक जागृति विकास संस्था एवं जनदेश, उर्गम, जोशीमठ के सहयोग से पर्यावरणीय क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान करने वाले महानुभावों को

महिला सम्मेलन : ग्राम सिरोसैंण मठोली (जिला चमोली)

सम्मानित कर प्रति वर्ष बारह मई को बीना–स्मृति सम्मान समारोह का आयोजन किया जाने लगा।

बीना जैसी महिलाओं का संघर्ष आज भी जारी है। गर्मियों के मौसम में वनों में भीषण आग लगते ही न जाने कितनी ''बीना'' हर वर्ष अपने प्राणों की आहुति देती हैं।

जंगल

लक्ष्मी नेगी

आज मैं अपने गाँव चौण्डली के निवासियों की एकता के बारे में लिख रही हूँ। हमारे गाँव में महिला संगठन बना हुआ है। यहाँ पर महिलायें महीने में एक बार नियमित रूप से गोष्ठी करती हैं। गाँव में हर किसी समस्या पर चर्चा होती है। जैसे–जंगल, पानी, गाँव में बन्दरों के आने पर उन्हें भगाने के लिए दो–दो करके ग्रामवासियों की बारी लगाना आदि। एक बार गाँव के नजदीक ही जंगल को चारों ओर से दीवारें देकर सुरक्षित किया गया था। सभी ग्रामवासियों ने मिलकर जंगल को आवश्यक समय में उपयोग में लाने के लिए बन्द किया था। पांच साल हो गये थे। जंगल में पेड़ बड़े–बड़े हो गये। घास की पैदावार भी अच्छी हो गई थी। जंगल में पशु–पक्षी रहने लगे थे। जंगल बहुत घना हो गया था कि तभी एक रात अचानक किसी ने जंगल में आग लगा दी। गाँव वालों को पता चला तो सभी लोग आधी रात को जंगल में आग बुझाने के लिए गये। लोग सुबह भी आग बुझाने गये और आधे जंगल को जल कर नष्ट होने से बचा लिया।

गाँव में एकता होने के कारण ही लोगों ने अपने जंगल को बचाया। साथ ही, अधिकांश पशुओं की जान बच गयी। आग लगने से जंगल सूखा हो गया था। गर्मियों के दिनों में आग लगी थी। जिस कारण पेड़–पौधे दुबारा हरे नहीं हो पाये। बाद में वर्षा के समय कुछ नये पेड़ उगे। अब जंगल में दुबारा से वही हरियाली आ गयी है और जंगल के प्रति लोगों में प्यार और अपनेपन की पुरानी भावना मजबूत हो गई है। इस तरह से ग्रामवासियों ने अपने पर्यावरण को बचाया है।

महिला संगठन में समस्या

फुलमा देवी

ग्राम मटेला, (बदला हुआ नाम) जिला पौड़ी गढ़वाल में महिला संगठन बनाया। संगठन की गतिविधियों में सभी महिलाओं ने भाग लिया। तीन बार गाँव में गोष्ठी की। तीन महीने के बाद एक व्यक्ति महिलाओं को बुरा–भला कहने लगे। हमने उन्हें समझाया लेकिन उन्होंने किसी की बात नहीं मानी। वह सभी महिलाओं से गाली–गलौज करने लगे।

कुछ समय बाद, बाड़ियूँ संस्था से क्षेत्रीय महिला सम्मेलन के आयोजन के विषय में एक चिट्ठी आईं। सम्मेलन में गाँव की अनके महिलायें आई। वहाँ मैंने वही बातें अनुराधा दीदी से कहीं। दीदी ने हमें अच्छे सुझाव दिए। हमने गाँव में पुनः गोष्ठी की। सभी महिलाओं को बुलाया तो वह व्यक्ति पूछने लगे कि मीटिंग में क्या हुआ? मैंने कहा ''क्या होना था?जो होना था, वह हो गया।'' वह सज्जन डर गये। बोले, ''क्या हुआ? कहीं मुझे जेल तो नहीं भेज रहे हैं?'' मैंने कहा, ''नहीं हम आपको जेल क्यों भेजेंगे?'' लेकिन वह डर गये थे। बोले,

"मुझसे गलती हो गई, जो मैंने आपकी बात नहीं मानी। मुझे माफ कर दो। मैं महिलाओं के कामों की निन्दा करना छोड़ दूँगा।" उन्हें अपनी गलती का एहसास हो गया। इस तरह, गाँव में एकता बनी रही। साथ ही, महिला संगठन का काम भी आगे चलता गया।

इस घटना को लिखने का मकसद यह है कि नये–नये संगठन बनाने में कार्यकर्त्ताओं को अनेक अच्छे–बुरे अनुभवों से जूझना पड़ता है। शुरूआत में संगठन बनाना कठिन है लेकिन एक बार लोगों को बात समझ में आ जाये तो यही संगठन कठिन से कठिन समस्याओं को हल करने में सक्षम होते हैं। साथ ही, कार्यकर्त्ताओं को संगठन बनाते वक्त संस्था में कार्यरत अन्य अनुभवी लोगों से सुझाव लेने चाहिए। खासकर, नये कार्यकर्त्ता अपनी समस्याएं संस्था में बतायेंगे तो उन्हें संगठन बनाने में बहुत सुविधा होगी।

ममता की याद में

सरस्वती देवी

दिनांक पाँच जून 2012 को साक्षरता केन्द्र कीमू में एक घटना घटी। एक लड़की थी ममता। वह अठारह साल की थी। ममता ने शाम के समय बकरियाँ चरने के लिए जंगल में भेज दी थीं। गोधुली बेला में वह बकरी लेने जंगल में गयी। वहाँ एक बड़ी चट्टान थी। उस जंगल में आग भी लगी थी। अचानक उसका पैर फिसल गया। चट्टान में पकड़ने के लिए कोई सहारा नहीं था। ममता की मौत हो गयी।

जब शाम हो गयी और सभी लोगों के गाय–बकरी घर आ गये तब पूरे गाँव में उसकी ढूँढ़ की गई। फिर देर तक लोग उसे ढूँढ़ते ही रहे पर ममता कहीं नहीं मिली। रात के नौ बजे उसकी लाश मिली। यह सुनकर, उसकी अम्मा और माँ बेहोश हो गये। उसके पिता जी घर पर नहीं थे। फिर गाँव वाले प्रधान जी के पास गये। प्रधान जी रात के साढ़े तीन बजे वहाँ पहुँचे। ममता की मौत हो जाने के बाद भी उसे उस रात चट्टान पर ही रखा गया। दूसरे दिन ममता का अंतिम संस्कार किया गया। ममता की मौत के शोक में केन्द्र दो दिन तक बन्द रहा।

ममता की अचानक हुई मौत से लोग बहुत दुःखी थे। वह साक्षरता केन्द्र में महिलाओं के साथ बातचीत करने के लिए आती थी और किशोरी संगठन की गतिविधियों में भी भाग लेती थी। ममता सभी के साथ अच्छा व्यवहार करती थी। वह गाँव के लोगों के साथ मिलकर रहती थी। जब भी इधर–उधर जाती तो सभी लोगों से अच्छा व्यवहार रखती। वह सांस्कृतिक कार्यक्रम में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती थी। उसकी यही छवि हम ग्रामवासियों के हृदय पर अंकित है।

आज, इस लेख को लिखते वक्त ममता की छवि मेरी आँखों में भर आये आँसुओं के साथ मिल कर एकाकार हो गयी है। 'नन्दा' पत्रिका में छपा यह लेख ममता के प्रति हम सभी की श्रद्धांजलि है। वह हमें हमेशा याद आती रहेगी।

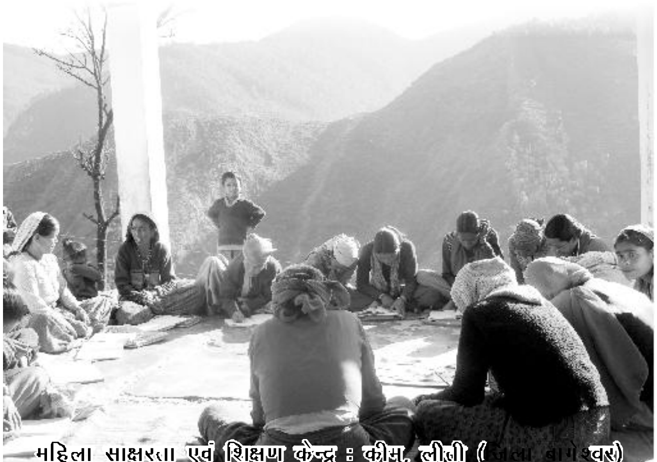

महिला साक्षरता एवं शिक्षण केन्द्र : कीमू, लीती (जिला बागेश्वर)

महिला संगठन कल्याड़ी

शोभा नेगी

हमारे गाँव का नाम कल्याड़ी है। कुछ साल पहले तक हमारे गाँव में शिक्षा के लिए अच्छी सुविधाएँ नहीं थी लेकिन आज हमारा गाँव बहुत सुन्दर बन गया है। ग्रामवासियों ने महिला संगठन बनाया और उसके बाद संगठन की अध्यक्षा व कोषाध्यक्षा का चुनाव किया। संगठन ने सबसे पहले यह निर्णय लिया कि गाँव में कोई शोर–शरारत नहीं होगी। महिला संगठन ने जंगल के बचाव और शराब के बारे में चर्चा की। बुजुर्गों ने सभी को समझाया कि वे जंगल को बचायें और नुकसान ना करें। फिर जंगल की देखभाल के लिए एक चौकीदार को नियुक्त किया। उसके बाद महिला संगठन की सदस्याएं गाँव में छापा मारने गयीं, जिससे सामाजिक बुराइयों को दूर किया जा सके।

हमारे गाँव के महिला संगठन में हर प्रकार की जानकारी दी जाती है, जिससे किशोरियों और युवतियों को भी ज्ञान मिलता है। संगठन की सभी महिलायें गाँव में सुधार लाना चाहती हैं। हमारे गाँव में यदि कोई किसी को अपशब्द कहे तो उस पर जुर्माना लगाया जाता है।

महिला संगठन अनेक कार्य करते हैं। महिलायें संगीत का भी आयोजन करती हैं। संगठन की सदस्याएं महीने में दो बार बैठक करती हैं। उसके बाद जो वनों का विनाश करते हैं, उन पर जुर्माना लगाया जाता है। हमारे गाँव का महिला संगठन और उसके अन्य सदस्याएं यह चाहती हैं कि गाँव में एकता हो। गाँव में अधिक से अधिक सुधार हो। जुर्माने की राशि से महिलाओं ने अनेक नई–नई चीजें खरीदी हैं। जैसे–महिला संगीत के लिए ढोलक आदि। अब हमारे गाँव में महिला साक्षरता केन्द्र खुल रहा है, जिससे सभी महिलाओं को शिक्षा मिलेगी।

आखिर क्यों उजड़ रहे हैं गाँव

कैलाश पपनै

गाँवों में जाकर काम करूँ तो देखता हूँ कि पचास–साठ परिवार वाले गाँवों मे आधे से अधिक घरों के दरवाजों पर ताले लगे हैं। घर में लोगों की चहल–पहल की जगह घास–काँटों से पटा आँगन दिखाई देता है। यह एक क्षेत्र की बात नहीं है बल्कि उत्तराखण्ड में समूचे पहाड़ की ऐसी ही स्थिति है। मैं अपने गाँव में देखता हूँ कि जहाँ प्राथमिक विद्यालय में सौ विद्यार्थी पढ़ते थे, वहाँ आज बच्चों की संख्या दहाई के अंक को भी नहीं छू पाती।

इस सबका कारण देखें तो समझ में आता है, गाँव में बुनियादी जरूरतों का अभाव। मेरे गाँव–क्षेत्र में सन् 2000 में सड़क बनी लेकिन आज भी बरसात के मौसम या बेमौसम की अधिक बारिश में गाड़ी में बैठकर जाना एक बुरा अनुभव रहता है। उसी तरह, स्कूल चाहे कई खुल गये लेकिन शिक्षकों की कमी से जूझ रहे हैं। यही हाल अस्पतालों का है।

राज्य में लगातार आयोजित किये जा रहे सम्मेलनों, भाषणों से बाहर आकर देखो तो गाँव की असलियत समझ में आती है। पता चलता है कि अस्पताल का भूमि–पूजन हुआ। इमारत भी बनी लेकिन अस्पताल अपने कर्मचारियों को खोजता फिरता है। बात पढ़ने में जरुर अटपटी लगेगी लेकिन सच तो यही है

कि मात्र इमारत के खड़ा करने से लोगों की बीमारी ठीक नहीं हो जाती। गाँवों में रह रही जनता को चाहे डॉक्टर हो या पानी की समस्या या फिर बिजली, इन सभी सुविधाओं की कमी से लगातार जूझना पड़ा है। आखिर कब तक पलायन के नाम पर गोष्ठियाँ आयोजित होती रहेंगी? पद–यात्राएँ निकलती रहेंगी? इन सब का औचित्य क्या है? सवाल गम्भीर है। राहों से कोसो दूर, गाँव में आम सड़क भी है, मगर न होती तो शायद अच्छा होता। चुनाव गये तो वादे गये। इन सड़कों पर क्या सरकार की कोई रूचि नहीं कि कोई विभाग से आकर इन की सुध ले?

इस वर्ष गर्मी के मौसम में पानी की किल्लत किसी से छिपी नहीं है। गाँवों के बीच से निकलो तो रोने को जी करता है कि उनसे क्या कहें जो दिन–रात दो घूँट पानी को तरस रहे हैं। बुजुर्ग पहले कहा करते थे कि 'दो जून की रोटी को तरसना' पड़ा, परन्तु समय बदला, उपयोगिता बदली और अब दो घूँट पानी को तरसना पड़ता है।

ऊखीमठ (जिला रूद्रप्रयाग)

हर चुनाव के वादों में एक नया रंग दिखता है, नया ढंग दिखता है। नहीं दिखता तो सिर्फ उन वादों पर कोई ठोस काम। आखिर कब तक गाँव के लोगों से अपेक्षा करे कि वे पलायन ना करें। अगर पानी, अस्तपाल, सड़क, शिक्षा जैसी नितान्त आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध नहीं होंगी तो कैसे उम्मीद करें कि लोग गाँव मे ही रहेंगे। गाँव में किसी को सरदर्द होने पर वह सौ रुपये से अधिक का बैठता है क्योंकि सुविधायें ही कुछ इस तरह की हैं। अगर अस्पताल में न दवा है, न नलों में पानी है, न ही बल्ब में बिजली तो क्या आवश्यकता है झूठे वादों की? फिर से क्यों न 'लैम्प' या छिलके जलाकर जिंदगी जीने की तैयारी करें?

सरकार ने स्कूल जाने की बात कही, मगर शिक्षक नहीं दिये। पाइप देने की बात की पर उसमें एक बूंद पानी नहीं। अस्पताल की इमारत तो ऊँची है पर डॉक्टर साहब नहीं और बिजली जब भी हो काट दी, आखिर गाँव के लोग ही हैं बेचारे।

मैं इसलिए नहीं लिख रहा कि लिखने का शौक है। मैं लिख रहा हूँ क्योंकि यह मेरा दर्द है। इस दर्द को मैं व मेरा गाँव एवं क्षेत्र लगातार महसूस करते रहे हैं।

आखिर क्यों? क्यों आम गोष्ठियों में "पलायन" विषय मुख्य रूप से रखा जाता है? केवल इसलिए कि यह मुद्दा अच्छा है? बहस पर्याप्त हो सकती है, सुनने वाले लोग भी होंगे और आंखों में नमी लिए सुनते रहेंगे। अस्पताल में बड़ी इमारत न हो तो चलेगा। स्कूल में खाना न हो तो चलेगा, मगर शिक्षा की जरूरत है, डॉक्टर की जरूरत है। यह सब कहाँ से आयेगा? बगैर डॉक्टर या शिक्षक के इन बड़े–बड़े भवनों को बनाने का औचित्य ही क्या है? मेरे गाँव में दो तीन वर्ष पूर्व सूखा पड़ा। बाद में ब्लॉक से सूखा–ग्रस्त क्षेत्र में पैसा आया–सौ रूपये, डेढ़ सौ रूपये, दो सौ रूपये। यह पैसा सीधे लाभार्थी के खाते में आना था, खाता खोलने के लिए पाँच सौ रूपयों की आवश्यकता थी!

क्या सही हो रहा है क्या गलत? फैसला आपका। इसी तरह नीती रही, वादे रहे तो वह दिन दूर नहीं कि जब गाँव खंडहर रह जायेंगे, जिंदगी नहीं रहेगी। और मेरा विषय ''आखिर क्यों उजड़ रहे है गाँव'' की सार्थकता साबित होगी।

उत्तराखण्ड और जल विद्युत परियोजनाएं

दीपिका डिमरी

जब उत्तराखण्ड राज्य के निर्माण की प्रक्रिया चल रही थी तो टी वी पर चलने वाली बहसों में अक्सर भावी राज्य के आय के साधनों के बारे में सवाल उठाए जाते थे। तब राज्य के नेतृत्व के पास इसका जबाब होता था कि उत्तराखण्ड अपनी लगभग तीस हजार मेगावाट जल विद्युत की अपार संभावनाओं का दोहन कर न सिर्फ अपने पैरों पर खड़ा होगा बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर बिजली की कमी को पूरा करने में भी अपना योगदान देगा। राज्य बनने के बाद भी हमारा नेतृत्व उत्तराखण्ड को उर्जा प्रदेश बनाने के संकल्प को दोहराते नहीं थकता। हालांकि पर्यावरणविद् जल–विद्युत परियोजनाओं के लिए बनने वाले बांधों एवं टनलों पर आरम्भ से ही शंका प्रकट करते रहे हैं लेकिन आज तक सरकार ने इन विचारों को कोई तवज्जो नहीं दी।

इधर आस्था के नाम पर साधु–संतो द्वारा गंगा की अविरलता के नाम पर किए जा रहे विरोध के आगे केन्द्र सरकार ने आश्चर्यजनक रूप से झुकते हुए पिछले दिनों गंगोत्री और उत्तरकाशी के बीच की तीन जल विद्युत परियोजनाओं–भैंरोंघाटी, पाला–मनेरी तथा लोहारी नागपाला को बंद कर दिया है। ये तीनों ही परियोजनाएं सार्वजनिक क्षेत्र की हैं। पहली दो राज्य सरकार की और तीसरी केन्द्र सरकार की है। लोहारी नागपाला परियोजना में तो करोड़ों रुपये खर्च भी किए जा चुके हैं।

हाल ही में बनारस में गंगा की अविरलता के लिए साधु–संतों द्वारा किए जा रहे अनशन को तुड़वाने के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय से घोषणा हुई कि भागीरथी, अलकनंदा एवं गंगा तथा उसकी सहायक नदियों पर प्रस्तावित जल विद्युत परियोजनाओं की समीक्षा करने के लिए एक अंतर मंत्रालयी कमेटी बनाया गयी है। यह कमेटी तीन महीने के अंदर अपनी रिपोर्ट देगी। तब तक इन नदियों पर चल रही परियोजनाओं का कार्य बंद रहेगा। कोई नई परियोजना भी स्वीकृत नहीं की जायेगी। इससे उनतालीस अन्य परियोजनाएं भी समीक्षा के दायरे में आ गई है, जिनमें से श्रीनगर परियोजना में आधे से अधिक कार्य हो चुका है।

इस घटनाक्रम ने उत्तराखण्ड के नेताओं एवं बुद्धिजीवियों को भी विभाजित कर दिया है। जहाँ मुख्यमंत्री सभी कार्यरत और प्रस्तावित जल–विद्युत परियोजनाओं के लिए प्रतिबद्ध हैं, वहीं कुछ संगठन बड़ी परियोजनाओं के विरुद्ध भी आवाज उठाने लगे हैं। देहरादून के पद्मश्री प्राप्त बुद्धिजीवियों का एक समूह इन परियोजनाओं के पक्ष में है तो कुछ अन्य संस्थायें बड़ी परियोजनाओं के विरोध में खड़ी हो गई हैं। मेरा विचार है कि इन घटनाक्रमों ने हमें इन परियोजनाओं के संबंध में एक नीति तैयार करने का सुअवसर उपलब्ध कराया है क्योंकि जो भी इसके पक्ष या विपक्ष में हैं, वे संभवतः एकपक्षीय दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहे हैं। हमें एक ओर अपने प्रदेश की आर्थिकी की चिंता करनी है तो दूसरी तरफ पर्यावरण की उपेक्षा भी नहीं कर सकते। इन दोनों के बीच से ही हमें अपना रास्ता निकालना होगा। इस संबंध में दोनों पक्षों पर गौर करना जरूरी है।

पहले हम आर्थिकी के पक्ष पर ही विचार कर लें क्योंकि परियोजनाओं के समर्थकों द्वारा इस पक्ष पर अधिक जोर दिया जा रहा है। पर्यावरण पक्ष के बारे में तो यह कह दिया जाता है कि ''कुछ बड़ा पाने के लिए

कुछ खोना ही पड़ता है।" यह स्पष्ट है कि वर्तमान में प्रस्तावित परियोजनाएं हम नहीं बनाने जा रहे बल्कि वे या तो निजी क्षेत्र द्वारा बनाई जायेंगी या फिर केन्द्र सरकार के किसी निगम द्वारा। इन परियोजनाओं से राज्य सरकार को उत्पादित बिजली का मात्र बारह प्रतिशत मिलना है। किसी परियोजना से राज्य को मिलने वाला यह लाभ परियोजना द्वारा राज्य को होने वाले पर्यावरणीय नुकसान और विस्थापन के फलस्वरूप पैदा होने वाली सामाजिक समस्याओं से होने वाले नुकसान की तुलना में बहुत ही कम है। विष्णुप्रयाग परियोजना का ही उदाहरण लें। परियोजना के पास स्थित चाईं गाँव धँस रहा है। यह तो अभी शुरुआत है। लामबगड़ से लेकर विष्णुप्रयाग तक टनल के कारण कितने गाँवों पर विपत्तियाँ आयेंगी, यह मालूम नहीं है। लेकिन इन समस्याओं का सामना राज्य सरकार को करना पड़ेगा क्योंकि कम्पनी उसे बारह प्रतिशत बिजली देती है। उधर ठंड के मौसम में लामबगड़ से विष्णुप्रयाग तक अलकनंदा नदी में जल बहुत कम हो जाता है। इस कारण होने वाले जन आक्रोश को भी राज्य सरकार को ही झेलना होगा। थोड़ा–सा पाने के लिए बहुत सारा खोने की स्थिति में ये परियोजनाएं राज्य की आर्थिकी को किस तरह समृद्ध कर रही हैं, इसे समझने के लिए बहुत दिमाग लगाने की जरूरत नहीं है।

यह माना जाता है कि हिमालय सारे भारत के पर्यावरण को नियंत्रित करता है। यहाँ किये जा रहे विकास के किसी भी कार्य के पर्यावरणीय पहलू को नजरअंदाज करना आत्मघाती होगा। सारे विश्व को पर्यावरणीय चेतना देने वाला "चिपको आन्दोलन" इसी हिमालय से निकला है। इस पृष्ठभूमि में हमें परियोजनाओं के पर्यावरणीय पहलुओं की समीक्षा के लिए केन्द्र सरकार द्वारा गठित कमेटी का स्वागत करना चाहिए और उसके द्वारा की जाने वाली पर्यावरणीय समीक्षा पर बारीक नजर रखनी चाहिए।

अपार जल विद्युत संभावनाओं वाले इस राज्य में जल विद्युत उत्पादन के लिए रास्ता तो निकालना ही होगा। इस संबंध में हम अपनी परंपरा से कुछ सीख सकते हैं। उत्तराखण्ड में प्राचीन काल से घटों (घराटों) की परंपरा रही है। हमें उसी परंपरा पर चलते हुए प्रत्येक गाँव एवं क्षेत्र में लघु जल–विद्युत इकाइयों का जाल बिछाना होगा। कहा जाता है कि सत्तर के दशक में टंगसा ग्राम सेवा संस्थान नामक एक संस्था ने गोपेश्वर के पास टंगसा गाँव में एक छोटी जल–विद्युत इकाई खड़ी करके इलाके को बिजली से रोशन किया था। क्यों न हम उत्तराखण्ड में इस तरह की जल विद्युत योजनाओं का जाल बिछा दें जो स्थानीय स्तर पर विद्युत आवश्यकता की आपूर्ति कर सरप्लस बिजली राज्य को दे दें? इससे न सिर्फ हमारी आर्थिकी सुदृढ़ होगी बल्कि बिजली के क्षेत्र में हम आत्म–निर्भर होकर औद्योगिक विकास में भी नई ऊँचाइयाँ छू पायेंगे।

पारम्परिक ज्ञान–विज्ञान

जयश्री पोखरिया

उत्तराखण्ड के पहाड़, जंगल, नदियाँ, खेत और हम पहाड़ी लोग!! कम सुविधाओं तथा दुरुह भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद हमारी पुरानी पीढ़ियाँ जीवन संघर्ष की प्रक्रिया में खुद को सिद्ध किए हुए हैं। वे योग्यतम की उत्तरजीविता के सिद्धांत पर खरी उतरी हैं। क्यों?इस प्रश्न का उत्तर शायद इस बात में निहित है कि ये पीढ़ियाँ प्रकृति से सामंजस्य करने की कला में निपुण थीं। आज हम खराब स्वास्थ्य सेवाओं का रोना रोते हैं लेकिन हमारे पूर्वज वनौषधियों तथा उनके उपयोग से भली–भांति परिचित थे।

उत्तराखण्ड में तो वनौषधियों का भण्डार है। मुझे याद है कि जब मैं लगभग आठ साल की थी, दीपावली के दिन मेरा हाथ पटाखे से जल गया। फफोले पड़ गये थे। आमा (दादी) ने मेरे हाथ में एक प्रकार

का कुकुरमुत्ता (जिसके अन्दर कुछ काला पाउडर भरा था) लगा दिया। मुझे बहुत आराम मिला और दूसरे दिन हाथ भी ठीक हो गया।

मेरी बुआजी जब छोटी थी, उनके गाल पर कुमर (घास का काँटा) चुभ गया। हमारे गाँव में कहते हैं कि शरीर में चुभे कुमर को निकालने की कोशिश करो तो वह अन्दर की ओर जाता है। मेरी बुआजी को भयानक बुखार हो गया। कुमर ने छः मुँह दे दिए। मेरी आमा उन्हें लेकर मायके गयीं और अपने पिताजी को दिखाया। वे जड़ी–बूटियों के जानकार थे। उन्होंने बुआ के गाल पर लेप किया और उन्हें कोई काढ़ा पीने को दिया। वह तीन दिन में ठीक हो गईं।

चेचक की बीमारी का नाम हम सबने सुना है। एक बार चेचक महामारी के रूप में फैल गया था। मेरे गाँव के लोग भी इससे प्रभावित हुए थे। मेरी आमा भी उसकी चपेट में आ गयीं। आमा का इलाज जड़ी–बूटी द्वारा किया गया। जिस समय लोग चेचक से मर जाते थे या अंधे हो जाते थे, मेरी आमा स्वस्थ हो गयी। केवल उनके चेहरे पर चेचक के दाग शेष थे।

ये तो कुछ उदाहरण हैं, मेरे ही घर, मेरे ही गाँव में जड़ी–बूटियों के उपयोग से संबंधित ज्ञान के। ऐसे ही उदाहरण आपके घर और गाँव में भी होंगे। परम्परागत ज्ञान किसी भी क्षेत्र में हो सकता है। जैसे–कृषि कार्य प्रणाली, बीजों तथा खाद्य पदार्थों का संरक्षण व संग्रहण, कृषियंत्र तथा वाद्य–यंत्र निर्माण, पारम्परिक भोजन बनाना, अपने रीति–रिवाजों का ज्ञान होना आदि।

पारम्परिक ज्ञान किसी क्षेत्र विशेष तथा समाज की विशेषता होती है। हमें भी अपने क्षेत्र समुदाय की विशेषता को पहचानना व समझना चाहिए। हमारे पूर्वज जो भी कार्य करते थे उसका वैज्ञानिक प्रमाण अब प्राप्त हो रहा है। जैसे– पुराने लोग कमर में तगड़ा बांधते थे, जो उन्हें कमर के दर्द से बचाता था। माघ के महीने में लहसून प्याज नहीं खाते थे, क्योंकि इस समय उसमें कल्ले फूटते है, जो हमारे शरीर को नुकसान पहुँचाते हैं। धारचूला के आस–पास के लोग एक पेय पदार्थ पीते है। इसमें थुनेर की पत्तियों का इस्तेमाल होता है। आज, थुनेर कैंसर को रोकने के लिए एक औषधि के रूप में मान्यता पा रहा है।

एक दिन मैं किसी वैज्ञानिक महोदय से बातें कर रही थी। उन्होंने पारम्परिक ज्ञान पर बहुत शोध किया है। उन्होंने चेतावनी भरे शब्दों में कहा, "अब न पारम्परिक ज्ञान है न उसे सहजने वाले।"

सोचने की जरूरत हमें है कि गेहूँ को राख और नीम की पत्तियों के साथ रखना ज्यादा अच्छा था या कीटनाशक मिलाकर रखना अच्छा है?हम भकार, विंडा, हड़्या, पिधाड़े की जगह स्टील के बर्तनों का इस्तेमाल करते हैं। जौला, मस्यूटा, भटिया, मॉड़े की रोटी नहीं खाते हैं तो क्या हमारा स्वास्थ्य प्रभावित होता है?

आज जंगलों में कोई न्यौली गाते या बांसुरी बजाते नहीं सुनायी देता। खाली समय में लोग टेलीविजन देखते हैं। कोई ऐण (पहेली) नहीं डालता है। हमें यह भी पता नहीं कि हमारी दादी या उनकी दादी कैसे कपड़े और कौन से आभूषण पहनती थीं। हमारे पुराने त्यौहार और परम्परायें भी अब संकेतात्मक रूप में सीमित रह गये हैं। जैसे–चैत के महीने में बेटियों को रोटी (भीटोली) देने की परम्परा। पहले के समय में एक पूरा महीना त्यौहार मनाया जाता था। बड़े–बड़े टोकरो में पूड़ी, बड़ा, खीर, चावल की रोटी, खजूरे आदि पकवान बेटियों के घर भेजते थे लेकिन अब यह परम्परा पैसे और मिठाई भेजने तक सीमित रह गयी है।

पारम्परिक ज्ञान सोने की तरह कीमती होता है। न यह पुराना होता है, न ही बेकार। हमें इसे सहेजना ही चाहिए।

सुबह कभी तो आयेगी

बचीसिंह बिष्ट

महिला सशक्तीकरण यानि समाज में सम्मान और स्वयं अपने हित में निर्णय लेने की आजादी। जल, जंगल, जमीन से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं के बीच संगठन करते हुए हमने यही समझा कि समानता या सशक्तीकरण का अर्थ सम्मान पाना और निर्णय लेने की स्वतंत्रता है। हो सकता है कि पंचायती राज में पचास प्रतिशत की आरक्षित हकदारी से भी महिलाओं को समानता का अधिकार प्राप्त करने में सुविधा होती हो। हमने तो यही देखा कि महिला प्रतिनिधि को आगे कर पुरुषों ने ही सत्ता हासिल की। संगठनों के साथ लगभग दो दशक तक काम करते हुए यह भी जाना कि जहाँ कहीं भी महिलायें अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने में कामयाब हुई हैं, वे निरक्षर नहीं हैं।

इस विचार का एक अर्थ यह है कि यदि पंचायतों में आने वाली पचास फीसदी महिलाओं को वास्तव में सशक्त बनाना है तो उन्हे साक्षर होना जरूरी है, यद्यपि यह प्रक्रिया एकतरफा नहीं है। इसके लिये महिलाओं में इच्छा शक्ति, समझ और परिवर्तन को स्वीकारने की क्षमता होनी अनिवार्य है। साथ ही, शैक्षणिक गतिविधियों से समाज में सुधार लाने वाले संस्थानों और सरकार को भी परिवर्तन को स्वीकारते हुए महिलाओं के अनुरूप पठन–पाठन की प्रक्रिया चलाने की जरूरत है।

उत्तराखण्ड में महिला परिषद ने जब महिलाओं की शिक्षा के लिए साक्षरता केन्द्र प्रारम्भ किये तो गाँव से सत्ता के गलियारों तक कई तरह के प्रश्न उठने लगे। गाँवों में इसकी सफलता पर संदेह व्यक्त किये गये। शायद ठीक भी है कि बहती धारा के विपरीत किये जा रहे इस प्रयास में अत्यधिक मुश्किलें खड़ी हो जायें और सदइच्छा से किया गया यह कार्य लक्ष्य को न पा सके। फिर भी, महिला साक्षरता की अनिवार्यता से शायद ही किसी को इंकार होगा। पढ़ा–लिखा समाज निरक्षर वर्ग को साक्षर बनाने के दायित्व से भले ही मुँह छिपाने में अपना हित समझे परन्तु वास्वत में एक समुदाय के सदस्य के रूप में हम सभी की जिम्मेदारी है कि निरंतर नये समाज का निर्माण करें। ऐसा समाज जहाँ शोषक और उत्पीड़क की भूमिका गौण हो जाये, समानतापरक समुदाय बने। इस संदर्भ में उत्तराखण्ड महिला परिषद् का साक्षरता का यह प्रयास अपने आप में बहुत साहसी कदम है।

वैसे तो आज प्रधान–पति पत्नी के हस्ताक्षर स्वयं कर लेन–देन कर रहे हैं। वे समुदाय में प्रधान–जी कहलाकर गर्व भी महसूस करते होंगे लेकिन वे उसी व्यवस्था का भाग हैं जो आज तक लड़कियों को लड़कों से कम पढ़ाने, कम खेलने देने, कम घूमने देने तथा घर में हर काम करवाने की पक्षधर है। इसी वजह से कई लड़कियाँ स्कूलों का मुंह नहीं देख सकीं। कुछ दो से पांचवी तक ही पढ़ सकी और कई अन्य निरक्षरों में शामिल हो गईं। इस व्यवस्था में माँ–पिता, भाई–बहन, शासक–प्रशासक, ग्रामीण–शहरी सभी वर्ग शामिल रहे हैं, इसका जवाब क्या है? चुप रहकर सहना तो कम से कम इसका हल नहीं है। सिर्फ रचनात्मक प्रतिरोध ही महिलाओं को नई दिशा व अवसर दिला सकता है।

महिला सम्मेलन : ग्राम भतौरा, बिन्ता (जिला अल्मोड़ा)

ग्रामीण महिलायें सामुहिक रूप से नया माहौल बनाने में कामयाब होती हैं। इसके लिये एक अनिवार्य शर्त है पुरुषों की सोच से बाहर सोचने की आदत होना। यदि महिलायें पुरूषों की तरह सोचने लगती हैं तो उनमें सशस्तीकरण के बुनियादी लक्ष्यों के प्रति अपरिचय ही रहता है तथा वे जाने–अनजाने पुरुषों की मांगों की पैरवी करने लगती हैं। जहाँ महिलाओं ने प्रेरित होकर रचनात्मक सवाल उठाये, वहाँ समाज में परिवर्तन हुए। इसका एक ज्वलंत उदाहरण सामने आया है –

एक सज्जन महिला संगठन से जुड़ी अपनी पत्नी पर कई दिनों से दबाव डाल रहे थे कि वह विधायक की बैठक में जनता को संबोधित करे। पत्नी इंकार करती रही क्योंकि वह निरक्षर थी। एक शाम पति महोदय घर पहुँचे और पत्नी से बोले कि यदि वह महिला संगठन में जाती है तो गोष्ठी में जरूर बोलेगी। पत्नी पहले तो चुप रही लेकिन ज्यादा दबाव पड़ने पर उसने कहा कि ''पहले तो मेरे मां–बाप ने मुझे निरक्षर रखा। कम उम्र में मेरी शादी कर दी। फिर अब, तीस बरस से तुम्हारे घर में हूँ। एक साल में एक शब्द भी लिखना–पढ़ना सिखाते तो आज तीस शब्द तो ऐसे ही सीखी हुई होती, जिन्हें विधायक की सभा में बोलती। तुम्हारा भी सिर ऊँचा होता और मेरा भी। अब कुछ तो सिखाया नहीं, वहाँ क्या बोलूँगी?''

पति समझदार थे, शर्मिंदा हो गये। गलती भी मान ली पर प्रतिरोध में दस और औरतों को सिखाने का दम भर दिया। लोग आम–तौर पर कहते हैं कि औरतें समझती नहीं हैं। साक्षरता केन्द्र तक आती नहीं हैं। सीखना नहीं चाहती हैं। सीखकर क्या करेंगी? ऐसी तमाम बातें। तो क्या हम प्रयत्न करना छोड़ दें? जैसे अन्य तमाम लोगों ने छोड़ दिया? क्या हम भी निरक्षरों के प्रति दायित्वहीन हो जायें? महिलायें केन्द्र में आयें न आयें, कम आयें या थोड़े दिन ही आयें। चाहे जो भी करें, यह उनकी मंशा है। पर सशक्त होने के इस अस्त्र से उनका परिचय कराना हमारी जिद है, आखिर उन्हें चोट भी तो इसी से लगी है। धीरे–धीरे ही सही, समाज स्त्री शिक्षा का महत्व समझेगा जरूर।

मेरी जीवन यात्रा

पुष्पा रौतेला

सन् 2008 में मैंने दसवीं की परीक्षा पास की। सात जून 2008 को बालवाड़ी प्रशिक्षण के लिए उत्तराखण्ड सेवा निधि, अल्मोड़ा में आयी। इससे पहले मुझे बालवाड़ी के बारे में कुछ पता नहीं था। मैं नहीं जानती थी कि बालवाड़ी क्या है और बच्चों को किस प्रकार से शिक्षित किया जाता है। शुरू में प्रशिक्षण के लिए अल्मोड़ा नहीं आना चाहती थी। सोचती थी कि मुझसे प्रश्न पूछेंगे तो उसका जवाब कैसे दूंगी। जवाब न देने पर हमें डांटेगे। जब उत्तराखण्ड सेवा निधि में आयी तो अपनी संस्था के लोगों के साथ भी परिचय नहीं था। मैनें सोचा अब यहाँ अपना कोई नहीं है। जब प्रशिक्षण लेते तीन दिन बीत गये तो अन्य सभी लड़कियों से अच्छा परिचय हो गया। अलग–अलग गाँवों व जिलों से आयी लड़कियों के रीतिरिवाजों की जानकारी प्राप्त हुई।

अब मुझे लगा कि एक अच्छी बालवाड़ी चला सकती हूँ। दस दिवसीय प्रशिक्षण लेकर मैंने टिकटा–भनार, शामा (बागेश्वर) में बालवाड़ी चलाई एवं गाँव के लोगों के साथ रहते हुए अपनी अपनी शैक्षिक योग्यता भी बढ़ाई। उत्तराखण्ड सेवा निधि में आकर मैने समाज में बोलना व रहना, समाज की परिस्थितियों को समझना व अन्य बहुत सी योग्यताएं हासिल कीं। जैसे–समाज में हो रही कुरीतियों व लड़की–लड़का में

अन्तर, कन्या–भ्रूण हत्या, एक महिला का दर्द, अपनी शैक्षिक योग्यता आगे बढ़ाना आदि बातें मुझे समझ में आ गयीं।

पहले तो मुझे समाज में बात करने में झिझक सी होती थी। अब मुझे बिल्कुल झिझक नहीं होती। पहले सिर्फ घर से स्कूल तक ही सीमित रहते थे। आज समाज के सामने विचार व्यक्त कर सकती हूँ।

महिला साक्षरता एवं शिक्षण केन्द्र : ओखलढूँगा (जिला बागेश्वर)

नवम्बर 2011 में मेरी शादी गोगिना गाँव में हुई। मैं विवाह के बाद भी इसी संस्था में जुड़ी हूँ और अपने समाज को आगे बढ़ाना चाहती हूँ। महिला साक्षरता केन्द्र खोलना चाहती हूँ, जिससे हमारे समाज की महिलायें आगे बढ़ें व कुछ नया सीखें। घर से बाहर निकलें। अपने विचार समाज में व्यक्त करें। मैंने उत्तराखण्ड सेवा निधि से बहुत कुछ सीखा। अब मैं अपने जीवन को जीना जान गई हूँ। आज मैं बीए (द्वितीय) कर रही हूँ। जितना मैंने उत्तराखण्ड सेवा निधि संस्था से सीखा, उतना तो स्कूल में भी नहीं सीखा। आज यहाँ तक पहुँचने का मौका मिला है कि मैं वयस्क महिलाओं को पढ़ा सकूँ।

महिला साक्षरता एवं शिक्षण

कमला शर्मा

मैं फड़ियाली गाँव में साक्षरता केन्द्र चलाती हूँ। गाँव की जागरूक महिलाओं ने पहले महिला संगठन बनाया था। उनकी रुचि महिला संगठन में थी। उसके बाद गाँव में बालवाड़ी केन्द्र खुला। बालवाड़ी केन्द्र अच्छी तरह से चलाया। बच्चे कम हो गये तो केन्द्र बन्द करना पड़ा। संस्था ने गाँववासियों से साक्षरता केन्द्र खोलने की बात की। महिलाओं ने कहा कि यह तो बहुत अच्छा है। उसके बाद, संस्था कार्यकर्त्ताओं और महिला सदस्याओं ने लड़कियों से कहा कि वे केन्द्र के संचालन के लिए आगे आयें। अधिकतर लड़कियों ने कहा कि उन्हें कम समय मिलता है, वे काम नहीं कर सकेंगी। उसके बाद संस्था के प्रमुख श्री बची सिंह बिष्ट जी ने मुझसे पूछा। गाँववासियों ने भी केन्द्र खोलने के लिए हामी भर दी। साथ में मैंने भी हाँ कह दी। महिला संगठन में काम करना मुझे अच्छा लगता था और फिर बोलने की आदत भी बन जाती है। नये–नये अनुभव होते हैं। अनेक गतिविधियाँ सीखी जाती हैं। फिर गाँव में गोष्ठी की। गाँववासियों ने मुझे शिक्षिका के लिए चुना। मैंने गाँव में सर्वे की। सर्वे में बहुत सी महिलायें निरक्षर मिलीं।

उसके बाद मैं महिला साक्षरता का प्रशिक्षण लेने अल्मोड़ा गई। सोलह सितम्बर 2011 को हमने गाँव में केन्द्र का उद्घाटन किया। वहाँ पर बहुत सी महिलायें आईं और गाँव के अन्य सभी लोग भी आये। बचीसिंह बिष्ट जी, अनीता दीदी भी आईं। उन्होंने महिलाओं के साथ बातचीत की। सभी महिलाओं ने उनकी बातों पर ध्यान दिया और कहने लगीं कि हम सभी केन्द्र में आयेंगी। यह काम बहुत अच्छा है।

कुछ महिलाओं के बीच में विवाद था, वे केन्द्र में नहीं आई। मैंने संस्था प्रमुख को फोन करके कहा कि केन्द्र में सभी महिलायें नहीं आ रही हैं। एक दिन उन्होंने गाँव में गोष्ठी की और सभी महिलाओं को अच्छी तरह से समझाया। महिलाओं ने कहा कि वे रोज ग्यारह बजे से एक बजे तक केन्द्र में आयेंगी। धीरे–धीरे सभी महिलायें समय पर केन्द्र में आने लगीं। कुछ दिनों के बाद जाड़े के मौसम में महिलाओं ने समय बदलने को कहा और दो से चार बजे तक का समय ठीक समझा। हमने सभी महिलाओं से पूछा कि उन्हें इस समय आने में कोई परेशानी तो नहीं?महिलाओं ने बताया कि उन्हें कोई परेशानी नहीं है।

केन्द्र खुलने पर सबसे पहले मैंने अपना परिचय देते हुए सभी महिलाओं से एक–एक करके उनका परिचय पूछा। मैंने कहा कि मैं दूसरे गाँव में रहती हूँ। उसके बाद मैंने चित्रांकन के बारे में बताया और फिर उन्हें बिन्दु–क्रम का काम करवाया। धीरे–धीरे महिलायें कलम पकड़ना सीख गयीं। उसके बाद चार्ट–कार्ड के मिलान द्वारा वर्णों और संख्याओं की पहचान की। ब्लैक–बोर्ड द्वारा सरल शब्द जैसे न, म, ग सिखाये। पेन और कागज का उपयोग करना सीखा। महिलायें पूछने लगीं कि वे यह सब सीखकर क्या करेंगीं यह उनके क्या काम आ रहा है। मैंने उन्हें बताया कि हर चीज के बारे में काम आयेगा, जैसे अपना नाम, गाड़ी का नम्बर पढ़ना, राशन कार्ड में राशन देखना, बैंक के कागज देखना। पढ़ना–लिखना उनके बहुत काम आ सकता है, ऐसा कहा। यह सुनकर महिलायें साक्षरता का महत्व समझ गयीं और नियमित रुप से केन्द्र में आने लगीं।

अंक की समझ बनाना सिखाया तो पहले सरल अंक जैसे 1, 7, 4, 0 लिखे। उसके बाद कठिन अंक जैसे 3, 8, 2, 6, 5 आदि लिखना सीखा। यदि किसी महिला को समझ में नहीं आता तो उन्हें 0 से 10 तक की संख्या ब्लैकबोर्ड, गणित माला, कहानी द्वारा समझाती हूँ।

धीरे–धीरे अभ्यास पुस्तिका–एक में काम करवाया। अभ्यास पुस्तिका–एक के कार्य में महिलायें बहुत रुचि ले रही थीं। अब अभ्यास पुस्तिका–दो में काम करवा रही हूँ। चार्ट–कार्ड का मिलान करवाना, कैलेण्डर द्वारा समझाना, ये सभी गतिविधियाँ करती हूँ। महिलायें पैराग्राफ आगे–पीछे करके लिखने लगी हैं। आजकल महिलाओं का खेतों में काम चल रहा है इसलिए केन्द्र में कम आ रही हैं। खेतों में सिंचाई का काम खत्म होते ही सभी महिलायें नियमित रूप से पुनः साक्षरता केन्द्र में आने लगेंगी।

मेरी सोच

पूनम नेगी

मेरा नाम पूनम है। मैं नयारघाटी ग्राम स्वराज्य समिति, बाड़ियूँ के साथ जुड़ी हुई हूँ। मैं ग्राम कोठार में रहती हूँ। मेरे गाँव का रहन–सहन पुराने तरीके से होता है। जो आज के जमाने की सोच से पुराना है। यह मेरे जीवन की बहुत बड़ी समस्या है। यह समस्या मेरे भविष्य निर्माण में बहुत बड़ी रुकावट है। इसी सोच की वजह से मैं आगे बढ़ने में असमर्थ हूँ। आगे बढ़ने के लिए मुझे माता–पिता की सहारे की बहुत जरुरत है। मेरी चाहत है कि मैं आगे बढ़ूँ और अपने जीवन में इस लायक बनूँ कि भविष्य में मुझे कोई भी समस्या आए तो उसका मुकाबला खुद अकेले ही कर सकूँ। मैंने हमेशा आगे बढ़ने की कोशिश की है। अभी भी कर रही हूँ। इसकी शुरुआत महिला साक्षरता के काम से कर रही हूँ।

मैं चाहती हूँ कि इस काम को उस मुकाम तक पहुँचाऊँ, जहाँ आज इस संस्था को चलाने वाले समस्त व्यक्ति हैं। उन महिलाओं को भी इस लायक बनाऊँ कि वे स्वयं में सशक्त हो जायें। हर निर्णय खुद ले सकें

और मैं एक समाज सुधारक बनूँ। इसी संस्था से जुड़कर मैं अपने सपने को पूरा करूँगी। "क्या आप मेरा साथ देंगे?"

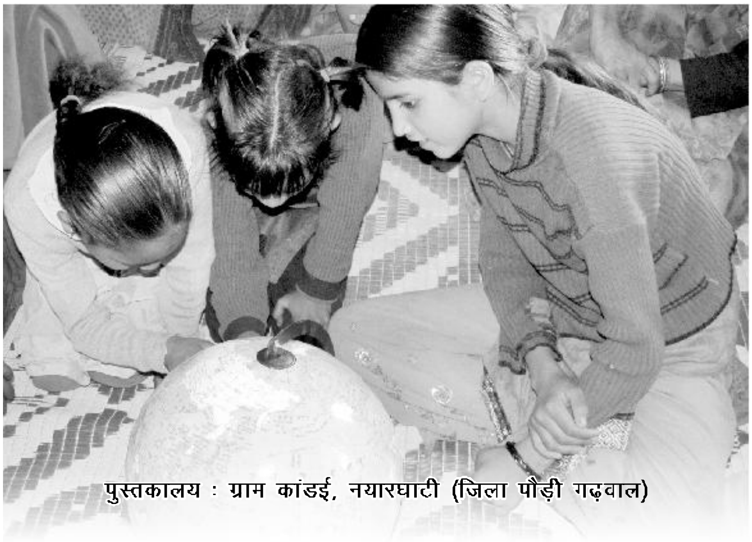

पुस्तकालय : ग्राम कांडई, नयारघाटी (जिला पौड़ी गढ़वाल)

साक्षरता केन्द्र धारागाड़

पुष्पा पाण्डे

मेरा नाम पुष्पा पाण्डे है। मैं ग्राम धारागाड़ में रहती हूँ। मैंने बालवाड़ी में पढ़ रखा है। मुझे बालवाड़ी में बहुत अच्छा लगता था। हमारे साथ गाँव की ही बड़ी उम्र की अन्य बहुत सी लड़कियाँ भी पढ़ती थीं। बालवाड़ी में हम खेल के माध्यम से अनेक गतिविधियाँ करते थे। जब मैं प्राइमरी पाठशाला में पढ़ने गई तो वहाँ मेरा नाम कक्षा दो में लिखा गया। मुझ से बड़ी उम्र की लड़कियाँ कक्षा एक में पढ़ती थीं। वहाँ पर अन्य बच्चों ने हमसे पूछा कि पहले कहाँ पढ़ रखा है? हमारे गाँव से स्कूल दूर है। मैंने उन्हें बताया कि हमने बालवाड़ी में पढ़ रखा है।

पहले हमारे गाँव में लड़कियों को स्कूल नहीं भेजते थे। जब गाँव में बालवाड़ी खुली तो संस्था की दीदी ने सभी गाँववासियों को शिक्षा के बारे में बताया। उसके बाद गाँव की महिलाओं ने अपने बच्चों को बालवाड़ी में भेजा। अब हमारे गाँव में काफी परिवर्तन आया है। लड़कियाँ भी बीए, एमए करने लगी हैं। मेरी इच्छा थी कि मैं भी संस्था के कार्यक्रम से जुड़कर समाज में काम करूँ। तभी मेरी माँ ने संस्था की दीदी से बात की और मैं महिला साक्षरता कार्यक्रम से जुड़ गई। साथ ही, किशोरियों के साथ शिक्षा के मुद्दों पर चर्चा करती हूँ और उन्हें स्वास्थ्य संबंधी बातें भी बताया करती हूँ। मैं पढ़ाई के साथ–साथ महिला साक्षरता के काम में बहुत रूचिपूर्वक काम करती हूँ। संस्था से जुड़कर मुझमें काफी परिवर्तन आया है।

साक्षरता केन्द्र धारागाड़ में पच्चीस महिलायें हैं। मैंने उत्तराखण्ड महिला परिषद् से साक्षरता कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षण लिया और सीखा कि हमें महिलाओं के साथ कैसे कार्य करना है। जब मैं अल्मोड़ा से प्रशिक्षण लेकर वापस आई तो उस के बाद ग्यारह सितम्बर 2011 को हमारे गाँव में साक्षरता केन्द्र का उद्घाटन किया गया। उस दिन महिलायें काफी उत्साहित थीं। सितम्बर के महीने में खेती–बाड़ी के काम में व्यस्तता की वजह से महिलायें नियमित रुप से केन्द्र में नहीं आ सकीं। खेती का काम पूरा होने के बाद सभी महिलायें साक्षरता केन्द्र में आने लगीं। जब महिलायें केन्द्र में आईं तो वे पैन–पेन्सिल पकड़ना भी नहीं जानती थीं। उन्हें पैन पकड़ना सिखाया और सबसे पहले उन्हें चित्रांकन के माध्यम से अभ्यास किया। फिर शब्दों–वर्णो की पहचान

करना सिखाया। अब महिलाओं में काफी परिवर्तन आ गया है। जो महिलायें नाम लिखना जानती थीं, वे छोटे वाक्य पढ़ना और लिखना सीख गई हैं। अब, उन की हिम्मत भी बढ़ गई है। महिलायें उत्साह के साथ पढ़ने–लिखने का काम करती हैं।

ग्राम कुण्ड का महिला संगठन

स्नेहदीप रावत

यह घटना दो दिसम्बर 2011 की है। मैं पुस्तकालयों के निरीक्षण एवं महिलाओं से चर्चा करने के लिये ग्राम कुण्ड गया था। उस दिन मुझे बाडियूँ एवं बिलखेत से जल्दी–जल्दी जीप में बैठने की जगह मिलती चली गयी। परिणामस्वरूप, मैं अन्य दिनों की अपेक्षा जल्दी ही कुण्ड गाँव में पहुँच गया। मालुम हुआ कि उस दिन गाँव के मंदिर में देवी–पूजन था। सभी महिलायें कुछ अनमने भाव से सज–धज कर मंदिर की ओर जा रही थीं। लगभग सभी महिलाओं से अभिवादन हुआ लेकिन अन्दर ही अन्दर मन में न जाने क्यों एक आशंका अपना डेरा जमा रही थी कि नमस्कार भी हो रही है, महिलायें स्नान कर, श्रृंगार किये हुए मंदिर में भी जा रही हैं और आपस में हँस भी रही है लेकिन यह खुशी की हँसी नहीं है।

यही सोचते हुए मैंने पुस्तकालय की संचालिका आशा को आवाज देकर वहाँ पर आने को कहा। खुद पुस्तकालय के समीप ही बैठना ठीक समझा। तभी आशा चाबी ले आयी और पुस्तकालय खोलकर खड़ी हो गई। मैंने आशा के चेहरे की ओर देखा, वह भी खुश नहीं लग रही थी। आखिर मैंने पूछ ही लिया कि उनके गाँव में कोई घटना तो नहीं घटी है। आशा ने बताया कि दो दिन पहले गाँव के ही रमेश चाचाजी के घर पर बिजली से बिस्तर, कागजात व रुपया–पैसा सभी जलकर राख हो गये। उस वक्त रमेश चाचा क्रेशर देखने गये थे। उनकी पत्नी घास लेने गयी थी। बच्चे स्कूल गये थे। चाची घास लेकर घर वापस आ गयीं लेकिन उन्हें पता नहीं चला कि घर में आग लगी है। जब दरवाजा खोला, तब आग की लपटें बाहर आयीं। उनके चिल्लाने की आवाज सुनकर गाँव के पुरुष और महिलायें आग बुझाने आये। किसी तरह से आग को थोड़ा शांत किया लेकिन तब तक बहुत सा सामान खाक हो चुका था।

आशा ने बताया कि परिवार में बड़ी चाची की लड़की की शादी हो गयी है। दूसरी चाची, शोभा देवी के क्रमशः तेरह, बारह व छः वर्ष की लड़कियाँ व आठ वर्ष का एक लड़का है। घर में आग लगने के बाद गाँव की महिलाओं ने उसी रात पूरे परिवार के लिए बिस्तरों की व्यवस्था की। दरी, कम्बल, रजाई की व्यवस्था हाथों–हाथ हुई। साथ ही अनाज, दो–तीन महीने का राशन और लगभग बारह हजार रुपया नगद जमा हो गया। आज जब यह घटना लिख रहा हूँ, कुण्ड गाँव के कुछ मुख्य व्यक्ति आग से हुए संपत्ति के नुकसान के संबंध में मुख्यमंत्री जी से मिलने देहरादून गये हैं। ऐसी सम्भावना है कि सम्भवतः कुछ सहयोग सरकार द्वारा मिलेगा।

इसी वर्ष, एक दिन संगठन के अठवाढ़ पूजन के बुलावे पर गाँव में गया था। पूरे गाँव के निवासी, जो कई वर्षों से बाहर रह रहे हैं एवं गाँव की लड़कियाँ, जो कि बच्चों एवं नाती–पोतों वाली भी हो गयीं, घर आई हुई थीं। गाँव में पैर रखने की जगह नहीं थी। इस कार्यक्रम के लिए संगठन ने अलग से पानी की व्यवस्था की। एक नहर, जो कभी–कभी खेती के समय दिखाई देती थी, उसे लगातार चालू करवाया गया। इस कार्य के लिये आसपास के गाँववासियों ने भी सहयोग दिया।

यह घटना इस सोच को मजबूत करती है कि संगठन के बिना गाँव की व्यवस्था चरमरा जाती है। संगठन की एकता में जो ताकत है, वही महिलाओं एवं संस्थाओं का सम्बल है। महिला संगठनों के कार्य सभी कार्यक्रमों को ऊर्जा और एक निश्चित गति देते हैं।

मेरे जीवन में आया परिर्वतन

लीला मठपाल

मैं सन् 2009 में अपनी ससुराल से मायके वापस आई थी। उस वक्त मुझे समझ में नहीं आता था कि मेरी जिंदगी का रास्ता क्या होगा? आगे बढ़ने का कोई चारा नहीं था। सोचती थी कि मायके वापस आकर मैंने कोई गलती तो नहीं की? उस कठिन समय में मुझे संध्या केन्द्र चलाने का मार्ग मिला।

जब मैं पहली बार चार सितम्बर 2009 की शाम को शिलंग गाँव में संध्या केन्द्र चलाने गयी तो मुझे वहाँ पहुँचकर अच्छा लगा। संध्या केन्द्र में जुड़कर काफी कुछ सीखने को मिला। मैं जो चीजें कई साल पीछे छोड़ आई थी, वे गतिविधियाँ संध्या केन्द्र के माध्यम से बच्चों को सिखाने लगी। बच्चों से तो मुझे पहले से ही लगाव था, अब उनके साथ काम करना और खुद सीखना भी अच्छा लगने लगा। आदमी को उसकी जरूरत के अनुसार पैसा तो चाहिए ही होता है लेकिन मेरे लिए पैसे से भी ज्यादा महत्वपूर्ण था–कुछ नया सीखना, लोगों से मिलना और समय कटना। अपनी पहचान बनाना भी जरूरी है। संध्या केन्द्र बच्चों के सीखने के लिए एक अच्छा माध्यम है। नित्य चार घण्टे संध्या केन्द्र में आकर बच्चे काफी कुछ सीख लेते हैं। जो ज्ञान दिन भर स्कूल मे रटकर नहीं मिलता, वह संध्या केन्द्र में शिक्षिका व बच्चों दोनों को मिलता है।

मैंने दो साल तक संध्या केन्द्र चलाया। चार सितम्बर 2009 से तीस अगस्त 2011 तक संध्या केन्द्र में काम किया। गाँव में संगठनों के साथ काम करते हुए यह हिम्मत आई कि मैं कुछ अच्छा काम कर रही हूँ। एक सितम्बर 2011 से किशोरी संगठनों के साथ काम कर रही हूँ। कुछ दिक्कतें आ रही हैं पर धीरे–धीरे ठीक हो जायेंगी। पहले–पहले कठिन लग रहा है। कोशिश करती हूँ कि बोलना सीखूँ और किशोरियों के साथ मिलकर काम करते हुए अपने गाँव को शिक्षित और समृद्ध बनाने में सहयोग दूँ।

साक्षरता एवं शिक्षण केन्द्र कुलौरी

शान्ती टम्टा

मेरा नाम शान्ति टम्टा है। मैं ग्राम कुलौरी, जिला अल्मोड़ा में रहती हूँ। मुझे साक्षरता केन्द्र में जुड़ने के बाद बहुत अच्छा लगा। मैं पढ़ाई छोड़ने के बाद घर पर ही रहती थी। सोचती थी कि कुछ काम करूँ। जब से साक्षरता केन्द्र में जुड़ी हूँ, तब से मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। मैं अपने मायके में पिताजी के साथ रहती हूँ। साक्षारता केन्द्र में जुड़ने से पहले घर पर समय नहीं कटता था, पर अब समय का पता ही नहीं चलता है। मुझे स्वयं में भी परिवर्तन नजर आने लगा है। साक्षरता में काम करने के साथ–साथ मेरा आत्मबल बढ़ा है। अब मैं आगे और पढ़ना चाहती हूँ। पहले मैंने पढ़ाई छोड़ दी थी। अब मुझे लगता है कि फिर से पढ़ाई करूँ। अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाऊँ और समाज में काम करूँ–यही मेरी इच्छा है। पहले बालवाड़ी भी चलाती थी। हमारे

गाँव में पर्यावरण का बहुत सा काम होता है। आज गाँव में सभी को घास मिलती है। सभी ग्रामवासियों ने मिलकर पेड़ लगाये हैं। जंगल की सुरक्षा करने से आज हमें आसानी से घास–लकड़ी मिलती है।

महिला साक्षरता केन्द्र खुलने से महिलाओं का विकास हो रहा है। साक्षरता केन्द्र खुलने से पहले महिलाओं को पैन पकड़ना नहीं आता था। अब धीरे–धीरे पैन पकड़ना और अपना नाम लिखना सीख गयी हैं। जब साक्षारता केन्द्र खोला और महिलाओं से आने को कहा तो उन्होंने जवाब दिया कि उन्हें कुछ नहीं आता, वे स्कूल आकर क्या करेंगी? लेकिन जब से साक्षारता केन्द्र में आना शुरू किया तब से हर महिला यही कहती है कि उसे आगे पढ़ना है। आज से पहले महिलाओं को पढ़ने के लिए कहीं नहीं भेजते थे लेकिन जब से महिलायें संगठन के माध्यम से साक्षारता केन्द्र में जुड़ी हैं, तब से कहती हैं कि उन्हें केन्द्र में आना अच्छा लगता है।

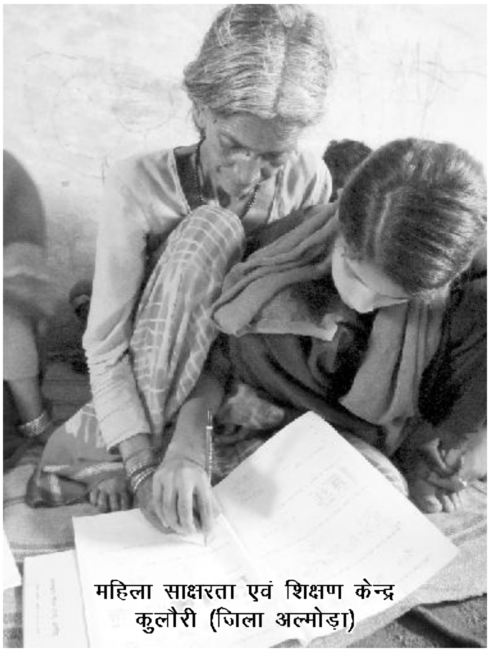

महिला साक्षरता एवं शिक्षण केन्द्र कुलौरी (जिला अल्मोड़ा)

शुरुआत में हमने एक दिन संस्था की दीदी से कहा कि वे घर–घर जाकर बात करें। तब दीदी ने घर–घर जाकर घर के सदस्यों को समझाया कि केन्द्र में जुड़ने से महिलाओं को बहुत ज्ञान मिलेगा। लोगों को बात समझ में आ गई। अब सभी महिलायें रोज केन्द्र में आती हैं। जब गाँव में संगठन की मींटिग होती है तो हम शिक्षिकाएं भी वहाँ जाती हैं। अब हम सभी को लगता है कि आगे बढ़ना चाहिए। साक्षारता केन्द्र से महिलाओं में बहुत परिवर्तन आ रहा है।

महिला साक्षरता एवं शिक्षण

सुनीता आर्या

मेरा नाम सुनीता आर्या है। मैं दन्या, रामपुर गाँव में रहती हूँ। पहले घर के काम में ही व्यस्त रहती थी। मुझे बाहर की दुनिया की कोई जानकारी नहीं थी। एक दिन संस्था से पुष्पा व लीला दीदी गाँव में आये। उन्होंने महिला संगठन के बारे में जानकारी दी और महिला विकास के बारे में बहुत सी बातें बताईं। हमारे गाँव में संगठन की गोष्ठी होने लगी। गाँव में कई परिवारों से कोई सहमत नहीं हुआ। लोग कहने लगे कि संगठन में जुड़ने से क्या होगा? घर के काम की हरकत होगी। फिर दीदी ने घर–घर में जाकर सभी को समझाया। उन्हें जानकारी दी, संगठन के महत्व के बारे में विस्तार से चर्चा की। अब मैं संगठन में जुड़ी हूँ।

हमारे गाँव में हर महीने महिला संगठन की गोष्ठी होती है। हम तीस–पैंतीस महिलायें एक ही संगठन से जुड़ी हैं। हर महीने दस रुपये कोष में जमा करती हैं। हमने इस कोष के पैसे से गाँव के लिए कुछ सामान भी लिया है। कभी अड़चन आने पर कुछ रुपये कर्ज पर भी निकालते हैं। संगठन में जुड़ने के बाद मैं उत्तराखण्ड महिला परिषद की गोष्ठी में अल्मोड़ा गई। पहले मेरे परिवारजन अल्मोड़ा भेजने को राजी नहीं हुए। कहने लगे कि घर की बहू घर में ही अच्छी लगती है। फिर दीदी ने घर पर आकर सभी को समझाया।

उन्होंने कहा कि आजकल पढ़ी–लिखी लड़कियाँ हुईं। लड़कियाँ अकेली कहाँ–कहाँ पहुँच रही है। ऐसे में अपनी बहुओं को बंधन में रखोगे तो वे क्या सीख पायेंगी? फिर मेरे परिवार के बुजुर्गों ने मुझे गोष्ठी में अल्मोड़ा भेजा। मैं अपनी एक साल की बेटी को लेकर अल्मोड़ा गई। वहाँ जाकर मुझे बहुत अच्छा लगा। वहाँ हमारा परिचय पूछा गया। अपना–अपना परिचय सभी ने बताया। हमें महिला विकास के बारे में बहुत सी बातें बताई गई। अल्मोड़ा की गोष्ठी में सम्मिलित होने के बाद घर वापस आने पर मुझे कुछ काम करने की इच्छा हुई। मैंने संस्था में दीदी से बात की। मुझे महिला संगठन में जुड़कर बहुत अच्छा लगा है। अब मुझमें बहुत बदलाव आ गया है। संगठन में जुड़ने के बाद मुझे साक्षरता केन्द्र में काम करने का मौका मिला।

महिला साक्षरता एवं शिक्षण केन्द्र : रामपुर, दन्या (जिला अल्मोड़ा)

अब मैं साक्षरता केन्द्र चलाती हूँ। हमारे गाँव में नौ सितम्बर 2011 को साक्षारता केन्द्र का उद्घाटन किया गया। मेरे केन्द्र में तीस महिलायें आती हैं। ज्यादातर महिलायें अनुसूचित जाति की हैं। मैंने साक्षरता केन्द्र में जुड़ने के बाद तीन प्रशिक्षण ले लिए हैं। प्रशिक्षण में हमें महिलाओं के साथ काम करना सिखाया गया। चार्ट–कार्ड द्वारा अक्षर पहचानना सीखा और महिलाओं को बताने का तरीका भी समझ लिया।

शुरूआत में केन्द्र में प्रार्थना करने में महिलाओं को झिझक होती थी। दो–चार दिन तक महिलायें कुछ भी नहीं कर पाईं। मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि उन्हें कैसे सिखाया जायेगा। फिर धीरे–धीरे महिलायें प्रार्थना करने लगीं। पेंसिल पकड़ने लगीं। फिर धीरे–धीरे बिंदु–क्रम वाला काम भी महिलाओं ने कर लिया। केन्द्र में लगातार काम करने से महिलाओं में बहुत परिर्वतन आ रहा है। अब वे अपना नाम लिखना सीख गई हैं। दो–चार महिलाओं को पढ़ने की बहुत रुचि थी। उन्होंने बिल्कुल भी स्कूल में नहीं पढ़ा था। अब वे भी इमला और कहानियाँ लिखने लगी हैं। जैसे–

हेमा आर्या–कभी स्कूल नहीं गयीं। उन्होंने अपना नाम लिखना सीखने के बाद कहानी, इमला एवं शब्दों को मिला–मिलाकर वाक्य लिखना सीख लिया है।

बिजना आर्या–इस महिला की उम्र पैंतालीस वर्ष है। उन्हें पढ़ने में बहुत रुचि है। वे रोज केन्द्र में आती हैं। चार्ट–कार्ड मिलान का काम बहुत अच्छी तरह से करती हैं। उन्होंने अपना नाम लिखना भी सीख लिया है।

ऐसी अनेक महिलायें हैं जिन्होंने बहुत तेजी से प्रगति की और आज वे आसानी से पढ़–लिख सकती हैं। अब महिलाओं में बहुत अन्तर आ गया है। पहले महिलायें घर से बाहर नहीं निकलती थीं। अब गोष्ठियों में जाने के लिए उत्सुक रहती हैं।

साक्षरता केन्द्र गौली

गीता पाण्डे

मेरा नाम गीता है। मैं ग्राम–सभा गौली में रहती हूँ। मैं महिला संगठन की कोषाध्यक्षा हूँ। मैं पिछले दस साल से गौली महिला संगठन से जुड़ी हूँ। हमारे संगठन में तीस महिलायें है। हम हर माह कुछ रुपया कोष में जमा करती हैं और इस कोष से अपनी छोटी–छोटी परेशानियों का समाधान करती हैं। जब मैं संगठन में काम करती थी तो मेरा भी मन करता था कि संस्था की दीदी लोगों के साथ काम करूँ। घर के काम के साथ–साथ गाँव में भी काम करना चाहती थी। तब, मैंने संस्था में दीदी से इस काम में जुड़ने की बात कही। घर के कामों के साथ–साथ गाँव का काम भी मुझे करना चाहिए, ऐसा उनसे कहा। मुझे इधर–उधर घूमना, महिलाओं के साथ बातचीत करना अच्छा लगता है। इसलिए मैं सोचती थी कि जो पढ़ाई मैंने की है, इसका महत्व तभी होगा, जब मैं कुछ काम करूँगी। इस तरह मैं साक्षरता केन्द्र का संचालन करने के लिए चुन ली गई। इस संगठन से हम सभी महिलायें इकट्ठा होकर जंगल बचाती हैं। बन्दरों को भगाती हैं। रास्ता साफ करती हैं। किसी को गाँव में परेशानी हो तो उसका हल करती हैं। इस संगठन से महिलाओं में काफी परिवर्तन आया है।

महिला साक्षरता एवं शिक्षण केन्द्र : गौली (जिला अल्मोड़ा)

मैं कोष में पैसा जमा करने के साथ–साथ बैंक से लेन–देन का काम भी करती हूँ। संगठन में कुछ महिलायें हस्ताक्षर करना नहीं जानती थीं। तब उत्तराखण्ड महिला परिषद् से साक्षरता का काम मिला। सबसे पहले हमने गाँव में सर्वे किया और गाँव वालों ने मुझे शिक्षिका के लिए चुना। हमने साक्षरता केन्द्र खोला। इससे सभी महिलायें बहुत खुश हुईं।

सितम्बर 2011 में हमारे गाँव में साक्षरता केन्द्र का उद्घाटन हुआ। ग्राम–प्रधान व संस्था के कार्यकर्त्ता और उत्तराखण्ड महिला परिषद् अल्मोड़ा से दीदी भी आयी थीं। जब मैं पहली बार केन्द्र में गई तो सोचा कि पता नहीं महिलायें आयेंगी भी या नहीं? कैसे इन्हें पढ़ाऊँगी? मैं सोचती थी कि महिलाओं को केन्द्र में आने का समय भी मिलेगा या नहीं? पहले दिन, दो–चार महिलायें आईं। फिर, दूसरे दिन एक–दूसरे को देखकर बीस–बाइस महिलायें आ गयीं। शुरू–शुरू में तो मुझे बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा क्योंकि बच्चे तो झट से पैंसिल पकड़ लेते हैं पर महिलायें नहीं पकड़ पातीं। पहले मैंने उन्हें चित्रांकन वाली कॉपी में काम करवाया। उसमें उन्होंने पैंसिल पकड़ना सीखा। हाथ पकड़कर कलम घुमाना सीखा। महिलायें अपना नाम लिखना व पढ़ना नहीं जानती थीं। वर्णमाला के अक्षर बिल्कुल नहीं पहचानती थीं। मुझे ऐसा लगता था कि मैं इन्हें पढ़ा पाऊँगी या नहीं लेकिन धीरे–धीरे उन्हें पढ़ाने का तरीका जानने लगी हूँ।

मैं सभी महिलाओं से कहती हूँ कि वे केन्द्र में नियमित रुप से आयें। अब महिलाओं में परिवर्तन आया है। जो महिलायें वर्णमाला नहीं जानती थीं, वे अक्षर पहचानने लगी हैं। अपना नाम लिखती हैं और चार्ट–कार्ड

में अपने नामों के अक्षर पहचानती हैं। अब महिलायें संगठन की गोष्ठी में आती हैं तो अंगूठा लगाने की बजाय हस्ताक्षर करती हैं। चार–छः महिलायें (अनीता, माधवी, दीपा, पुष्पा, भवगती, बंसती, आनन्दी) तो छोटे–छोटे पैराग्राफ लिखती हैं और बहुत रुचि से काम करती हैं। महिलाओं ने चित्रांकन वाली कॉपी में अनेक चित्र भी बनाये हैं। सभी ग्रामवासी काफी खुश हैं। इस काम से मैं भी बहुत खुश हूँ। मैं यह काम पैसे के लिए नहीं कर रही हूँ। मुझे इस बात के खुशी है कि मैं अपने गाँव के लिए कुछ काम कर रही हूँ। कुछ सुधार लाने की कोशिश कर रही हूँ। मेरा अनुभव भी बढ़ रहा है। इस कार्यक्रम के माध्यम से गाँव में काफी जागरूकता आई है।

साक्षरता का गीत

क्षेत्रीय महिला परिषद्, दन्या

कैंथे कूहू को सुणहो
म्यार इज बोज्यू हाला
च्याला कैं स्कूल भेजो
च्योलिन के भेजो ग्वाला।।
च्योल पड़ि लेखि बेरी
है गो बीए पास
च्येलि सौरास जाई बेरा
काटि लूहो घास।।
संगठन में जुड़ी बेर
स्कूलै की यादा
गौं–गौं में साक्षरता
स्कूल खोली आजा।।
साक्षरता स्कूलै में
नाम लिखायो
दातुला कै छोड़ि बेर
पैन पकड़ायो ।।
पैलि–पैलि स्कूल में
उल्टा अ लैखछिं
आब मैकेणि आपनो
नाम लेखण आयो।।
धन्यवाद दीदी तुमनकै

महिला साक्षरता एवं शिक्षण केन्द्र : गौली (जिला अल्मोड़ा)

स्कूल चलाओ
शिक्षा संबंधी जानकारी
हमणैं दिलाओ।।
इज थै कूनों, बोज्यू थै कूनों

मैं है ग्यूं साक्षर
आपणी गों की अध्यक्षा हूँ
पढ़नूँ अक्षर।।

राजकीय इण्टर कॉलेज नगरखान (जिला अल्मोड़ा)

महिला साक्षरता केन्द्र, बानठौक

कविता गैलाकोटी

मेरे गाँव का नाम बानठौक है। मैं महिला साक्षरता कार्यक्रम में काम कर रही हूँ। मैंने महिला साक्षरता का काम शुरू करते हुए सबसे पहले गाँव में सर्वे किया। सितम्बर 2011 में उत्तराखण्ड महिला परिषद् से प्रशिक्षण लेने के बाद जब मैं घर वापस आयी तो पहले दिन गाँव की महिलायें व प्रधान जी मुझसे मिलने आये। फिर मैंने गाँव में सम्पर्क किया। अल्मोड़ा में प्रशिक्षण से मेरा अनुभव काफी बढ़ा और हिम्मत भी बढ़ी। गाँव में सबसे बातचीत की, तब जाकर महिलायें आयीं।

शुरूआत में किसी के खाली पड़े कमरे में केन्द्र खोला। थोड़े दिन वहाँ पर सभी लोग आये लेकिन बाद में कुछ महिलायें नहीं आयीं। महिलाओं ने मुझसे अपने घर में केन्द्र खोलने को कहा। उसके बाद मैंने अपने घर में ही केन्द्र खोला। शुरू में जब महिलायें केन्द्र में आयी तो उन्हें पैन घुमाना भी नहीं आता था। मैंने उन्हें चित्रांकन करना सिखाया। बिन्दु–क्रम वाला काम किया और उन्हें अभ्यास पुस्तिका–एक से ''सलमा बाजार गई'' वाली कहानी सुनाई। जो सौ पेज वाली कापी थी, उसे घर पर काम करने को दिया और दौ सौ पेज वाली कापी को केन्द्र में ही रखा। धीरे–धीरे महिलायें सरल अक्षर लिखने लगीं। जैसे–ग, म, ब, व आदि।

धीरे–धीरे महिलायें अपना नाम लिखना सीख गयी। उसके बाद, थोड़ा–थोड़ा मात्राओं को पहचानने लगीं। महिलाओं को अक्षर–कार्ड दिया तो उन्होंने कार्ड द्वारा अक्षर–मिलान करना सीखा। धीरे–धीरे जब मैंने उन्हें समझाया तो वे सही मिलान करने लगीं। मैंने उन्हे श्यामपट में बारी–बारी से लिखने को कहा। यह भी कहा कि जो भी मन में आ रहा हो, वही लिखो। तब किसी ने अपना नाम लिखा तो कोई अक्षर और गिनती लिखने लगीं। कुछ महिलाओं को गिनती लिखने में समस्या आयी। तब मैंने कई बार श्यामपट में एक से लेकर दस तक गिनती लिखी। तब वे भी गिनती लिखने लगीं।

महिलायें पढ़ने–पढ़ाने में एक–दूसरे की मदद करती हैं। एक–दूसरे से पूछती हैं और बताती भी हैं।

महिलायें जब लिखने की कोशिश कर रही थीं तो अक्षर टेढ़े–मेढ़े हो जा रहे थे। मैंने उनसे कहा कि वे घड़ी देखें। कोई महिला घण्टे सही बता रही थीं तो किसी को मिनट बताना नहीं आ रहा था। गणित माला से उन्होंने कहानी सीखी और जोड़ना–घटाना भी। जब महिलायें केन्द्र में नहीं आतीं तो मुझे बताकर जाती हैं। कभी–कभी महिलायें एक–दूसरे से बातें करती हैं कि उन्हें पढ़ना–लिखना सब कुछ आ जाये तो कितना अच्छा हो। उनकी बातें सुनकर मुझे खुशी होती है कि वे केन्द्र में आकर शिक्षा लेना चाहती हैं।

महिलाओं को अपना नाम लिखना, शब्द लिखना और पढ़ना आ गया है। केन्द्र में आने वाली एक महिला का नाम श्रीमती नन्दी बनौला है। उन्होंने अपने गाँव के बारे में एक लेख लिखा है। मुझे उनका लेख बहुत पसंद आया।

महिलाओं का अनुभव

मनीषा सोनार

दिनाँक अठारह सितम्बर 2011 से सूनी गाँव में महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम शुरु हुआ। उस दिन गाँव में एक गोष्ठी की गई। गोष्ठी में सभी महिलायें और गाँव के प्रधान जी आये थे। संस्था से राधा दीदी, शीतल दीदी भी आयी थीं। उन्होंने सभी महिलाओं के साथ बातचीत की और बताया कि महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम में पढ़ाई करना ही नहीं बल्कि पढ़ाई की महत्ता को भी समझना है। दीदी ने महिलाओं से कहा कि वे सभी नियमित रूप से केन्द्र में आयें। उसके बाद स्वागत गीत गाया गया। पूरे गाँव की सर्वे करनी थी। अनेक महिलाओं ने पूछा कि सर्वे से क्या होता है? मैंने सोचा कि महिलायें बहुत जागरूक हैं। उन्हें परिवार के बारे में तो बहुत जानकारी है। क्या उन्हें अपना नाम भी मालुम है? कुछ महिलाओं ने अपना नाम सही बताया लेकिन कुछ गलत बता रही थीं। मैंने महिलाओं से यह भी कहा कि सर्वे से हमें गांव में कितने महिलायें और पुरुष हैं, इस संख्या का पता चलता है। यह मालूम होता है कि महिलाओं की शिक्षा का स्तर कैसा है। किस के पास कितनी उपजाऊ जमीन है, इस के बारे में भी जानकारी मिलती है। गाँव की प्रधान मंजू देवी भी सर्वे के बारे में पूछ रही थीं। मैंने बताया कि हमें शिक्षा और महिला–अधिकारों के प्रति सभी ग्रामवासियों को जागरूक करना है। महिला नरेगा में काम कर रही है या नहीं, इसकी जानकारी भी प्राप्त करनी है।

सर्वे के बाद केन्द्र की शुरूआत हुई। सभी महिलायें केन्द्र में आयीं। उन सभी ने चित्र और रंगों का कार्य किया। उस के बाद चार्ट–कार्ड की सहायता से अक्षरों और शब्दों को पहचानना सीखा। फिर धीरे–धीरे सभी महिलाओं ने अपना नाम लिखना और शब्दों को पढ़ना सीखा। इसमें उनकी रुचि बढ़ रही है। एक महिला को कॉपी पकड़नी नहीं आती थी। वह उल्टी कॉपी पकड़ती थी। फिर मैंनें उन्हें सिखाया। मैं कई दिनों तक रोज कॉपी पकड़ना सिखाती थी। अब वे अपना नाम, अक्षर पहचानना और लिखना जानती हैं। मुझ से प्रश्न पूछती हैं।

शुरूआत में मुझे महिलाओं के साथ काम करने में परेशानी हुई। फिर बार–बार अभ्यास करने से उन का उत्साह बढ़ गया। धीरे–धीरे मुझे भी उनके साथ काम करना अच्छा लगने लगा। हमारे साथ महिलायें केन्द्र में चेतना गीत भी गाती हैं। हम महीने में एक दिन गोष्ठी करती हैं। उस दिन राधा दीदी ओर शांति दीदी केन्द्र को देखने आती हैं। मुझे महिलाओं के साथ साक्षरता केन्द्र में काम करना अच्छा लगता है।

मेरा अनुभव

नीमा डोलिया

महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम शुरू करते वक्त सबसे पहले ग्वाड़ गाँव में सम्पर्क किया। उसके बाद गोष्ठी की। गोष्ठी में साक्षरता के बारे में महिलाओं से चर्चा की। महिलाओं से कहा, "मैं साक्षरता केन्द्र चलाना चाहती हूँ।" पहले केन्द्र किसी अन्य जगह पर चल रहा था। अब मैंने गाँव के बीच में केन्द्र खोल लिया है। महिलाओं ने कहा कि गाँव के बीच में स्थित केन्द्र हमारे लिए ठीक रहेगा। महिलायें नियमित रुप से केन्द्र में आ रही हैं। महिलाओं ने तीन बजे का समय दे रखा है। हम सब तीन बजे वहाँ पहुँच जाती हैं। पहले मैं महिलाओं से बात करने में झिझकती थी। अब तो आदत हो गयी है। पहले गाँव के बारे में कोई गहरी जानकारी भी नहीं थी। साक्षरता कार्यक्रम के बारे में यहाँ की पुरानी शिक्षिका ममता ने स्वयं केन्द्र में आकर मुझे समझाया। अब तो मुझे हर काम करना आ गया है। महिलाओं को चित्रांकन कराती हूँ। यदि कोई महिला अपना नाम लिखना, मात्राएं और पढ़ना–लिखना सीखने की कोशिश करती है तो उसे चार्ट और श्यामपट में भी बताती हूँ। महिलाओं को अ, आ पढ़ना और लिखना भी आ गया है। कुछ महिलायें घड़ी में समय भी पहचान लेती हैं। मुझे केन्द्र को चलाते हुए एक ही महीना हो रहा है और मेरा इतना ही अनुभव है।

महिला संगठन दियारकोट

रामेश्वरी

हमारे गाँव का नाम दियारकोट है। हम महिलायें गाँव में साक्षरता केन्द्र खोलना चाहती हैं। हमारे गाँव की महिलायें बहुत उत्सुक हैं कि वे कुछ सीखें। महिलायें लिखना–पढ़ना चाहती हैं ताकि कोई भी महिला अनपढ़ ना रहे और आगे जाकर पढ़ने में कोई गलती न करे। महिलायें बहुत आगे बढ़ना चाहती हैं, जिससे भविष्य में कोई भी स्त्री अशिक्षित न रह पाये।

हमारे गाँव की महिला संगठन की अध्यक्षा, कोषाध्यक्षा और सभी सदस्याओं ने मिलकर एक अच्छा सा जंगल बनाया। जंगल की रक्षा के लिये एक चौकीदार रखा। उसे कितना मानदेय दिया जायेगा, इस मुददे पर निर्णय लेने के लिये गाँव में बैठक हुई। चौकीदार की फीस के लिये हर घर से पचास रुपया इकट्ठा करके प्रति माह मानदेय दिया जाने लगा। अन्य बहुत सी नई–नई गतिविधियाँ गाँव में हुईं। गाँव में संगठन के काम होने से हमें भी बहुत कुछ सीखने को मिला। नई–नई गतिविधियाँ जैसे महिला संगीत, महिलाओं की बैठक आदि गाँव में होने लगीं तो लोगों में एकता हुई। साथ ही, एक उमंग और उत्साह का माहौल बना। हमारे गाँव की महिलाओं ने जंगलों में पेड़–पौधे लगाये और पेड़ों के अंधाधुंध कटान पर रोक लगा दी। इस तरह उन्होंने पर्यावरण को दूषित होने से बचा लिया।

अब हमारे गाँव में महिला साक्षरता केन्द्र खुल रहा है। गाँव की महिलायें बहुत खुश हैं। महिलायें अनपढ़ ना रहकर पढ़ना–लिखना चाहती हैं। साथ ही वे यह भी चाहती हैं कि अपने बच्चों को पढ़ायें, जिससे भविष्य में बच्चों को कोई परेशानी न हो पाये।

हमारा गाँव

नीलम

मेरे गाँव का नाम मालई है। मेरा गाँव बहुत अच्छा है। गाँव का महिला संगठन बहुत जागरूक है। कुछ साल पहले तक मेरा गाँव शिक्षा के मामले में पीछे था लेकिन अब सुधार हो गया है। सबसे पहले ग्रामवासियों ने महिला संगठन बनाया। संगठन में अध्यक्षा, कोषाध्यक्षा और सदस्याएं चुनी गयीं। फिर संगठन ने समाज को सुधारने की कोशिश की। ग्रामवासियों ने जंगल को बचाने के लिए एक चौकीदार की नियुक्ति की। चौकीदार किसी को भी पेड़ नहीं काटने देते हैं। कोई जंगल में आग नहीं लगाता है। इस प्रकार ग्रामवासियों ने जंगल को बचाया है। वे चौकीदार को प्रत्येक माह मानदेय देते हैं। इस प्रकार, हमारे गाँव के महिला संगठन ने जंगलों को नष्ट होने से बचाया है।

संगठन की सदस्याएं प्रत्येक माह बैठक करती हैं और नये–नये कार्य करती हैं। पहले तो शादियों में महिला संगीत नहीं होता था पर अब वे संगीत भी करने लगी हैं। माह में एक बार गाँव के रास्तों की सफाई की जाती है। जो सफाई के काम में शामिल नहीं होता, उस से जुर्माना लेती हैं। पुरुष भी महिला संगठन को सहयोग देते है। स्त्री–पुरुष सभी मिलजुल कर कार्य करते हैं।

आज हमारा गाँव हर चीज में आगे है। अब गाँव में महिला साक्षरता केन्द्र खुल रहा है। ग्रामवासी बहुत खुश हैं कि हमें कुछ नया सीखने को मिलेगा। जिससे हमें अपने बच्चों को पढ़ाने, बैंक से पैसे निकालने–जमा करने, दुकान का सामान खरीदने में सुविधा होगी। साथ ही, महिलाओं को सरकारी विभागों के कार्य करने में सुविधा होगी। अगर हम पढ़े–लिखे हों तो रोजगार गारण्टी कार्यक्रम, वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन या अन्य योजनाओं के लिए स्वयं अर्जी लिख सकते हैं और सरकारी एवं गैरसरकारी योजनाओं का लाभ ले सकते हैं।

मल्लाकोट गाँव महिलाओं का अनुभव

पुष्पा देवी

उन्तीस मार्च 2012 को मल्लाकोट गाँव में महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत हुई। हमारी संस्था की प्रमुख राधा दीदी ने गाँव में गोष्ठी की। इस गोष्ठी में महिलाओं से साक्षरता शिक्षण केन्द्र खोलने की बात की। साक्षरता शिक्षण केन्द्र चलाने के लिए मुझे चुना गया। मैंने तीस मार्च को गाँव का सर्वे कर महिलाओं के नाम लिखे। कुछ महिलाओं ने पूछा कि नाम क्यों लिखे जा रहे हैं? मैंने उन्हें समझाया कि गाँव में साक्षरता केन्द्र खुल रहा है जिससे गाँव की महिलाओं में जागरूकता हो और सभी स्त्रियाँ शिक्षित हों। मैंने महिलाओं से अनुरोध किया कि केन्द्र में उन सभी को आना है। कुछ महिलायें खुश होकर कहने लगीं कि वे केन्द्र में जरूर आयेंगी। मैंने उन्हें बताया कि केन्द्र में समाज में हो रहे परिवर्तन और पढ़ाई–लिखाई के बारे में चर्चा होगी। महिलायें कहने लगीं कि उन्हें तो कलम पकड़ना ही नहीं आता है वे क्या सीख पायेंगी। मैंने उन्हें समझाया कि वे केन्द्र में आना शुरू करेंगी तो धीरे–धीरे सब कुछ सीख जायेंगी।

एक अप्रैल 2012 को संस्था से राधा दीदी केन्द्र में आयीं। सभी महिलायें भी केन्द्र में आयी थीं। राधा

दीदी और मैंने मिलकर उनका स्वागत किया। दीदी ने उनके साथ अच्छी–अच्छी बातें कीं। महिलाओं को अच्छा लगा। शुरूआत में महिलाओं को इ बनाने में बहुत कठिनाई होती थी। धीरे–धीरे इ, ई, झ जैसे कठिन अक्षर बनाना, चार्ट–कार्ड और ब्लैक बोर्ड के माध्यम से सीखा। शुरूआत में बहुत सी महिलायें केन्द्र की गतिविधियों में रुचि नहीं लेती थीं। उन्हें पढ़ना–लिखना कठिन लगता था लेकिन अब धीरे–धीरे शिक्षा की ओर उनका रूझान बढ़ रहा है।

मैंने दिनांक 29 मार्च 2012 से महिला साक्षरता शिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत की। शुरूआत में महिलाओं के साथ केन्द्र चलाने में बहुत परेशानी आयी। उन्हें कुछ समझ में नहीं आता था। मुझे भी लगता था कि उनके साथ कैसे काम करूँ? धीरे–धीरे उन्हें अपने तरीके से समझाना शुरू किया। मुझे घर में रहने से केन्द्र चलाना ज्यादा अच्छा लगता है। अब महिलाओं के साथ अच्छी तरह से लगाव हो गया है। मैं महिलाओं को बहुत अच्छे तरीके से समझाती हूँ और वे भी मेरी बात को ध्यान से सुनती हैं। मुझे रोज केन्द्र में जाना और महिलाओं को बताना बहुत अच्छा लगता है। साक्षरता केन्द्र में जुड़ने से मुझ में भी परिवर्तन आने लगा है। मैं इसी संस्था में काम करना चाहती हूँ और इसी काम में जुड़ना चाहती हूँ।

अपने बारे में

लीला

मुझे संस्था के साथ जुड़ने की बहुत रुचि थी। मैंने कक्षा दस तक की पढ़ाई शामा गाँव से द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की है। जब मैं पहली बार स्कूल गई तो मुझे घबराहट सी हुई। मेरे साथियों ने साथ दिया तो डर दूर हो गया। मैंने तभी से पढ़ाई में बहुत मन लगाया। मैं अपने जीवन में आगे कुछ करना चाहती हूँ। ये सोच मेरे नवीं कक्षा से ही हो गई थी। अपनी सोच को आगे बढ़ाते–बढ़ाते इस संस्था से जुड़ गयी। मुझे संस्था से जुड़कर बहुत खुशी हुई। मैंने नहीं सोचा था कि साक्षरता के काम से जुड़ सकूँगी। फिर कार्यक्रम को समझने और आगे बढ़ने के लिए मैंने संस्था में प्रशिक्षण लिया। मुझे महिला साक्षरता ट्रेनिंग में भी बहुत अच्छा लग रहा है। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद मैं अपने गाँव में साक्षरता केन्द्र खोल रही हूँ। केन्द्र में महिलाओं के साथ पढ़ने–पढ़ाने का काम करूँगी। मैं महिला संगठन की गोष्ठी में भाग लूँगी और यह भी सीखना चाहूँगी कि संगठन का काम–काज किस तरह संभाला जाता है। मेरी इच्छा है कि महिलाओं का खूब विकास हो और वे निरंतर उन्नति करती जायें। मैं अपने गाँव को एक आदर्श गाँव बनाना चाहती हूँ। एक ऐसा गाँव, जहाँ शिक्षा और स्वास्थ्य की अच्छी सुविधा हो और महिलाओं एवं किशोरियों का सम्मान हो।

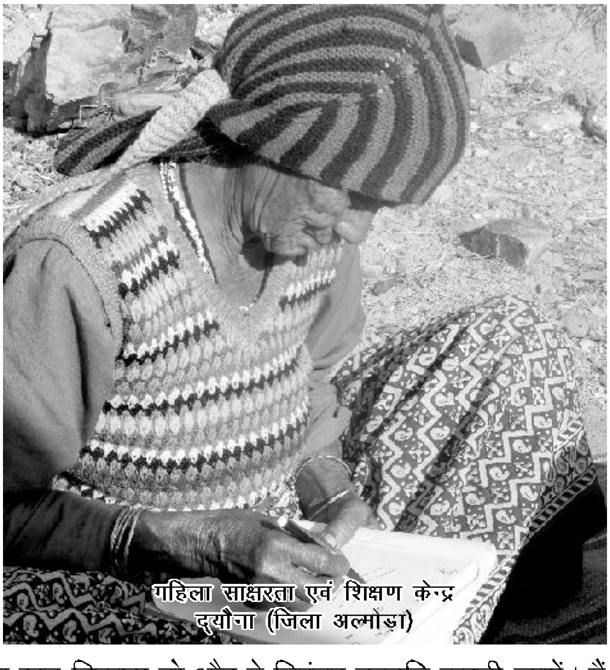

महिला साक्षरता एवं शिक्षण केन्द्र
दुयौना (जिला अल्मोड़ा)

महिला साक्षरता केन्द्र मौनी

जानकी पेटशाली

मेरे गाँव का नाम चापड़ है। मैं मौनी गाँव में साक्षरता केन्द्र चलाती हूँ। मैंने सितम्बर 2011 में उत्तराखण्ड महिला परिषद् से साक्षरता का प्रशिक्षण लिया। फिर गाँव में जाकर सर्वे का काम किया। महिलायें पूछने लगीं कि किस काम के लिए सर्वे किया जा रहा है। मैंने महिलाओं को बताया कि सर्वे साक्षरता की स्थिति जानने के लिए है। महिलायें साक्षरता केन्द्र में पढ़ने आयेंगी। कुछ महिलायें कहने लगीं कि वे जरूर केन्द्र में आयेंगी लेकिन कुछ कहने लगीं कि अब वे पढ़–लिख कर क्या करेंगी। अब उनकी पढ़ने की उम्र नहीं रही। मैंने उन्हें बताया कि पढ़ने की कोई उम्र नहीं होती है। मैंने कहा कि जब वे दुकान में सामान लेने जाती हैं तो हिसाब–किताब कर सकती हैं और नरेगा में काम करें तो उन्हें क्या मजदूरी मिली है, उसे जान सकती हैं। पोस्ट–ऑफिस व बैंक से पैसा निकालना व जमा करना सीखेंगी तो उन्हें और उनके परिवार के अन्य सदस्यों को सुविधा होगी।

ग्राम टेड़ा खनसाल (जिला चमोली)

सभी महिलायें साक्षरता केन्द्र में आने को सहमत हो गयीं। उसके बाद, गाँव में संस्था के कार्यकर्त्ता आये। हमने गाँव में केन्द्र का उद्घाटन किया। गाँव की सभी महिलायें आईं। शुरूआत में, पहले महिलाओं को चित्रांकन व बिन्दु–मिलान वाला काम करवाया। कुछ महिलायें चित्र बना रही थीं तो कुछ महिलाओं को कलम पकड़ना भी नहीं आ रहा था। चित्र बनाने में महिलायें खुश हो रही थीं। मैंने उन्हें टोका नहीं और कहा कि जैसे भी हो रहा है वे वैसा ही चित्र बनायें। महिलायें अपने बच्चों को भी अपने बनाये हुए चित्र दिखा रही थीं।

फिर असोज (फसल काटने का समय) का महीना आ गया। महिलाओं को खेतों में बहुत काम हो गया। सभी महिलायें अपने काम में लग गयीं। एक महीने के बाद नवम्बर 2011 में कार्यकर्त्ताओं का दूसरा प्रशिक्षण हुआ। उसके बाद गाँव में जाकर साक्षरता केन्द्र खोला। महिलायें कहने लगीं कि केन्द्र दूर हो गया है। गाँव के बीच में कमरा होता तो सभी महिलाओं को आने में सुविधा होती। फिर मैंने गाँव के बीच में कमरा लिया। सभी महिलायें नियमित रूप से केन्द्र में आने लगीं।

महिलाओं को चित्रांकन व बिन्दु मिलाने वाला काम करवाया। अक्षर–कार्ड, अंक–कार्ड मिलाना सिखाया। महिलायें कहने लगीं कि पहले से बालवाड़ी में बच्चे अक्षर–कार्ड मिलाते थे, अब हम कर रहे हैं। पहले सरल शब्द वाले अक्षर बताये। जैसे–स, म, ग, प, र आदि। महीनों तक किसी को शब्द बनाना नहीं

आया। अब महिलाओं को अपना नाम लिखना, अ, आ, क, ख एवं मात्राओं की पहचान, एक से सौ तक की गिनती, घड़ी देखना, मोबाइल में अंक पहचानना, गणित माला में गिनती करना आने लगा है। कुछ महिलायें मात्रा वाले शब्द लिखना भी सीख गयी हैं।

महिलाओं का पढ़ना–लिखना

तारा मेहता

मैं दिनाँक चार जून 2012 को महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम में सर्वे प्रपत्र भाग–एक में दिये गये सर्वे का काम करने के लिए गाँव में निकली। अपने गाँव मल्ला डुर्गचा में घर–घर जाकर सर्वे किया। गाँव की महिलाओं को समझाया और साक्षरता के बारे में बताया। महिलाओं की समझ भी अलग–अलग थी। कोई महिला तो अपना नाम लिखना या कुछ पढ़ना भी जानती है। कुछ आठवीं तक भी पढ़ी–लिखी हैं लेकिन कुछ महिलायें बिल्कुल निरक्षर हैं। वे पढ़ना चाहती हैं। उनके मन में आगे पढ़ने की इच्छा है। कई महिलायें ऐसी भी थीं जो कह रही थीं कि हम पढ़–लिख कर क्या करें? अब तो हमारे पढ़ने–लिखने के दिन ही चले गये। अब तो हमारे बच्चे ही पढ़ें और लिखें। फिर मैंने उन्हें समझाया कि पढ़ने और लिखने की कोई उम्र नहीं होती है। पढ़–लिखकर वे बहुत कुछ जान सकती हैं।

जैसे–एक उदाहरण देकर समझाया कि आप घर से निकलीं। आपको एक कोलगेट खरीदना है और वह है दस रूपये का। उसके लिए दुकानदार को पन्द्रह रूपये दे दिये। जबकि उसके डब्बे में दस रुपया लिखा हुआ है। अगर आप शिक्षित होतीं तो ऐसा नहीं होता। तब महिलायें सहमत हो गयीं। उन्हें एहसास हो गया कि अगर हम पढ़ी–लिखी होतीं तो ठगी नहीं जातीं। उन्होंने कहा कि हम जरूर साक्षरता कार्यक्रम में भाग लेंगी। दिनांक दस जून 2012 तक मैंने सर्वे की। मेरी इच्छा है कि मैं अपने गाँव में जाकर सभी महिलाओं को साक्षर बनाऊँ और जागरूकता बढ़ाऊँ। अल्मोड़ा प्रशिक्षण से वापस जाकर सर्वप्रथम महिलाओं की गोष्ठी कराऊँगी। उसके बाद, केन्द्र का उद्‌घाटन कर लगन से पढ़ाऊँगी। अपने गाँव और क्षेत्र की हर महिला को साक्षर करूँगीं, यही मेरा उद्‌देश्य है।

महिला साक्षरता केन्द्र लमुडियार

कविता आर्या

मेरे गाँव का नाम लमुडियार है। मेरे गाँव में साक्षरता केन्द्र चलता है। सितम्बर 2011 में हमने गाँव की सर्वे की। हमने उत्तराखण्ड महिला परिषद्, अल्मोड़ा से प्रशिक्षण लिया। उसके बाद गाँव में गोष्ठी की और साक्षरता केन्द्र के बारे में चर्चा की। महिलाओं से पूछा कि क्या वे साक्षरता केन्द्र में आना चाहती हैं। साथ ही, हमने गाँव में कमरे के बारे में बात की। जिसमें एक आमा (वृद्ध महिला) ने अपना कमरा साक्षरता केन्द्र चलाने के लिए दे दिया। उस कमरे में कुछ दिन केन्द्र चला। फिर महिलायें कहने लगीं कि हमारे लिए केन्द्र दूर हो गया। हमारे संगठन की अध्यक्षा के यहाँ भी केन्द्र नहीं चल सका।

एक दिन गाँव में गोष्ठी की। उसके बाद मैंने अपने घर में केन्द्र खोला क्योंकि गोष्ठी में सभी महिलाओं ने मुझे वहीं पर केन्द्र खोलने को कहा। महिलायें नियमित रूप से आने लगीं। सबसे पहले चित्रांकन कराया। जिसमें महिलाओं को पैन पकड़ने में समस्या आई। मैंने तो उनका हाथ पकड़ कर घुमाया। चित्रांकन करने में थोड़ा–बहुत समय लगा। धीरे–धीरे चित्र बनाने में उन्हें अच्छा लगने लगा। पाँच–छः महिलायें पढ़ी–लिखी थीं। उन्हें चित्र बनाना आता है। फिर भी उन्हें काफी सीखना है। मैं पहले दिन बहुत झिझक गई थी। फिर दो–तीन दिन में महिलाओं के साथ अच्छा लगने लगा। पहले तो जो लोग पढ़े–लिखे थे उन्हें बताने में भी समस्या आई। मैंने प्रशिक्षण में जो सीखा था, उसी तरीके से काम किया तो मेरी झिझक दूर हो गयी और महिलायें भी रूचि से काम करने लगीं।

महिला साक्षरता एवं शिक्षण : लमुडियार (जिला अल्मोड़ा)

एक दिन हमारी संस्था की प्रमुख दीदी ने सभी महिलाओं से चित्रांकन करने को कहा। उसके बाद ही हमने बिन्दु–क्रम वाली कॉपी महिलाओं को दी। जिसमें कम उम्र की महिलाओं ने तो सीधा बिन्दु को बिन्दु से मिला लिया लेकिन जो बड़ी उम्र की स्त्रियाँ थीं, उनका हाथ थोड़ा–बहुत टेढ़ा ही चलता था। बीस–तीस दिन में उन्हें बिन्दु–क्रम करना आ गया था। वैसे आमा लोगों को भी थोड़ा बहुत आ रहा है। उस समय खेतों में कोई काम भी नहीं हो रहा था। महिलाओं ने काम करने में रूचि रखी और जो सादे पेज थे उनमें फूल बनाये। जिन्हें अभ्यास नहीं था, उन्हें मैंने सिखाया। इस प्रकार, हम सब आपस में मिल जुलकर काम करती हैं।

उसके बाद महिलाओं ने अपना नाम लिखना सीखा। महिलाओं ने ही सुझाव दिया कि पहले उन्हें नाम लिखना सिखा दें। कभी अपना नाम लिखेंगी। चार–पाँच महिलाओं को नाम लिखना नहीं आता था। अब उन्होंने नाम लिखना सीख लिया है। उन्हें चार्ट में काम कराया। अधिकतर महिलायें अक्षर नहीं पहचानती थीं। जिन्हें आता था, उन्होंने मिला लिया और अन्य महिलाओं की मदद की। अब महिलाओं को मोबाइल और घड़ी में समय देखना सिखाया। इसमें दस–बारह दिन लग गये। अब सभी महिलाओं को मोबाइल फोन में संख्या और घड़ी में समय देखना आ गया है। कुछ महिलाओं ने कहानी भी लिखी है। ''सलमा बाजार गयी'' वाली कहानी बहुत अच्छी लगी, ऐसा महिलायें कह रही थीं।

टुपरौली साक्षरता केन्द्र की दास्तां

विजया

हमारे गाँव में सबसे पहले महिला संगठन बना। उसके बाद धीरे–धीरे महिलायें एक संगठन से जुड़ीं। उन्होंने एक दूसरे को जानने की कोशिश की। उसके बाद गाँव में हर महीने गोष्ठी होने लगी। महिलाओं ने एकता करने के लिए गाँव की सफाई की। जैसे–नौला साफ करना, रास्ता साफ करना। इन तरीकों को अपनाया तो गाँव में एकता हो गई। हमारी संस्था के प्रमुख राजू सर, बची सर की मदद से हम यहाँ तक पहुँचे हैं। उन्होंने हमें महिला विकास के बारे में बताया और समझाया। उसके बाद हमने अपने गाँव में साक्षरता केन्द्र खोला, जिसमें महिलाओ को जागरूक किया। महिलायें समाज में उठना–बैठना सीखें, अपना नाम लिखना सीखें, इसके लिए गाँव में गोष्ठी की।

ग्रामवासियों ने मुझे शिक्षिका के रूप में चुना। मैंने गाँव में सर्वे की। बहुत सी महिलायें निरक्षर थीं। उसके बाद अल्मोड़ा प्रशिक्षण में आई। फिर गाँव में वापस गयी तो महिलाओं को साक्षरता केन्द्र के उद्घाटन के लिए बुलाया। हमने सात सितम्बर को साक्षरता केन्द्र का उद्घाटन किया। केन्द्र में बहुत सी महिलायें आई थीं और गाँव के सभी लोग आये थे। बची सिंह सर, बिष्ट जी, अनीता दीदी भी आई थीं। उन्होंने महिलाओं के साथ बातचीत की। सभी महिलाओं ने उनकी बातों में ध्यान दिया। उसके बाद, महिलाओं से समय के बारे में पूछा। महिलाओं ने स्वयं ही दो बजे से चार बजे तक केन्द्र में आने का समय तय किया। दूसरे दिन से महिलायें केन्द्र में आने लगीं। सबसे पहले मैंने समय पर और सफाई से केन्द्र में आने को कहा। महिलायें रोज केन्द्र में आने लगीं। उस वक्त सड़क टूट जाने से हमारे केन्द्र में कॉपी, पैंसिल आदि सामान नहीं आया था। एक हफ्ते में ही सारा सामान आ गया, इससे मुझे काम करने में बहुत सुविधा हुई।

सबसे पहले मैंने महिलाओं को बिन्दु–क्रम मिलाना सिखाया। महिलायें धीरे–धीरे पैन पकड़ना एवं चलाना सीख गई। उसके बाद चार्ट के द्वारा अंकों का ज्ञान कराया और ब्लैकबोर्ड द्वारा सरल शब्द जैसे न, म, ग, सिखाये। पेन और कागज का परिचय–मिलान किया। महिलाये पूछने लगीं कि वे यह सब सीखकर क्या करेंगी। मैंने उन्हें बताया कि यह उनकी रोज की जिंदगी में काम आयेगा। जैसे–अपना नाम लिखना, गाड़ी का नम्बर, राशन कार्ड, बैंक के कागज देखना, यह सभी कुछ रोज की जिंदगी में काम आता है।

अंकों की समझ बनाने के लिए पहले सबसे सरल अंक जैसे एक, सात, चार, नौ आदि को लिखना–पढ़ना सिखाया। उसके बाद गणित माला से कहानी द्वारा अंकों की पहचान मजबूत की।

स्त्री–शिक्षा की जरूरत

कविता बोरा

मेरे गाँव भन्याड़ी में स्कूल न होने के कारण महिलायें और बच्चे निरक्षर रहे हैं। इस कारण, न हम आगे बढ़ पाते हैं, न ही लोगों से अच्छी तरह बोल पाते हैं। मेरे गाँव में कक्षा आठ तक ही स्कूल है। हाईस्कूल करने के लिए हमें गाँव से दूर गणाई जाना होता है। अत्यधिक दूर होने के कारण कई बच्चे स्कूल नहीं जा पाते हैं। गाँव से स्कूल तक जंगल का रास्ता होने के कारण हमारे अभिभावक लड़कियों को स्कूल नहीं भेजते हैं। जिस कारण, उन्हें लोगों के बीच जाने में घबराहट होती है। गाँव में साक्षरता केन्द्र खुलने से बहुत सुविधा हुई।

महिलायें और लड़कियाँ केन्द्र में पढ़ने आती हैं। उन्हें पढ़ने के अलावा अन्य अनेक विषयों की जानकारी भी दी जा रही है। हमारे यहाँ महिलाओं को समझ है भी तो वे बोलने में झिझकती हैं। इस कारण, हमारा गाँव पीछे ही रह गया है। मैं चाहती हूँ कि हमारे गाँव–परिवार में सभी लोग अधिक से अधिक पढ़ें और अपने बच्चों को भी पढ़ायें। अगर महिलायें और किशोरियाँ पढ़ी–लिखी होंगी तो वे समाज में आत्मविश्वास के साथ उठ–बैठ सकेंगी। अपनी बातें कह सकेंगी। साथ ही, सरकारी एवं गैर–सरकारी योजनाओं का लाभ भी ले सकेंगी।

महिला साक्षरता एवं शिक्षण केन्द्र : भन्याड़ी (जिला पिथौरागढ़)

विस्तार : किशोरी से शिक्षिका तक

जानकी कोंरगा

मैं दिनांक एक अगस्त 2009 को शामा संस्था से जुड़ी। पहले बालवाड़ी में काम किया। मैंने लीती धूरा गाँव में बालवाड़ी चलाई। उस वक्त सोचा कि बच्चों के साथ काम करने में न जाने कैसा अनुभव होता होगा। तब, हमारी मार्गदर्शिका मुन्नी दीदी ने बताया कि बच्चो के साथ बच्चा बनकर काम करना है। संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने मुझे निरंतर सिखाया और मदद की, तब मैं बालवाड़ी के पाठ्यक्रम को समझ पायी। मैं बच्चों के साथ काम करना शुरू कर चुकी थी। उसके बाद पहली बार दस दिवसीय प्रशिक्षण लेने के लिये उत्तराखण्ड सेवा निधि, अल्मोड़ा आयी। अल्मोड़ा में दस दिन के प्रशिक्षण में बहुत कुछ सीखा। कई संस्थाओं से आयी शिक्षिकाओं से घुल–मिल गयी। उसके बाद, गाँव में वापस आकर एक अच्छी बालवाड़ी चलाने की कोशिश की। गाँव में बच्चों की संख्या छब्बीस थी। मैं उनके साथ तन–मन लगाकर काम करती थी। महिलाओं से बातें करने की हिम्मत मिली। यदि कोई मुझसे प्रश्न पूछता कि बालवाड़ी में क्या काम करवाती हो तो मैं उन्हें बताती कि कैसे बच्चों की कल्पना शक्ति बढ़ती है और इन्द्रियों का विकास होता है।

मैंने बालवाड़ी के तीन प्रशिक्षण लिये। इससे मुझे हिम्मत मिली और आत्मविश्वास बढ़ गया। साथ ही, अपनी शैक्षिक योग्यता भी बढ़ाई। बाद में गाँव में आँगनबाड़ी आने से बालवाड़ी बन्द हो गई। मैंने फरवरी 2011 तक लीतीधूरा में बालवाड़ी चलाई। फरवरी 2011 से अगस्त तक मैंने लीती गाँव की बालवाड़ी में काम किया।

मैं एक सितम्बर 2011 को साक्षरता केन्द्र के प्रशिक्षण के लिए अल्मोड़ा आयी। प्रशिक्षण के दौरान मुझे लगा कि यह तो एक अलग ही चीज है। पहले बच्चों के साथ काम किया तो वह मेरे लिये सरल हो गया था। यहाँ बड़ी उम्र की महिलाओं के साथ काम करना था। लेकिन मैं प्रशिक्षण लेकर जान गई कि साक्षरता

कार्यक्रम का पाठ्यक्रम क्या है। जब इसे समझ गई तो अब महिलाओं के साथ काम करना भी अच्छा लगता है। मैं सेवा निधि संस्था से बहुत खुश हूँ कि यह अनेक दूरस्थ क्षेत्रों में दो से अस्सी वर्ष तक की उम्र वाले सभी लोगों के साथ काम करती है। मैं इस काम को जिन्दगी भर नहीं भूलूँगी। मैं शामा संस्था व सेवा निधि से जुड़ी रहूँ और समय–समय पर हमारे केन्द्रों का निरीक्षण भी होता रहे, यही इच्छा है।

जब मैं बालवाड़ी चलाती थी तो वहाँ पर वीडियोग्राफी हुई। साथ ही, आस्ट्रेलिया, दिल्ली एवं अन्य कई जगहों से बालवाड़ी देखने लोग मेरे गाँव में आते थे। इस तरह के लोगों के निरीक्षण व मार्गदर्शन से नये विचार मिलते। मुझे जो भी समस्या आती, उसे अन्य लोगों से पूछती थी। काम करते हुए सीखना भी जिंदगी जीने का एक सुंदर हिस्सा बन जाता है। मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे बच्चों के साथ–साथ महिलाओं की शिक्षा को आगे बढ़ाने का मौका मिला।

महिला साक्षरता एवं शिक्षण प्रशिक्षण : अल्मोड़ा

---------- xxx ----------